हिंदी पुस्तक-8

(प्रथम भाषा)

(आठवीं कक्षा के लिए)

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड
साहिबज़ादा अजीत सिंह नगर

© पंजाब सरकार

संशोधित संस्करण 2017..............................27,000 प्रतियाँ

All rights, including those of translation, reproduction
and annotation etc., are reserved by the
Punjab Government.

सम्पादक : शशि प्रभा जैन
डॉ॰ सुनील बहल
चित्रकार : कुलजीत कौर
:

चेतावनी

1. कोई भी एजेंसी-होल्डर अधिक पैसे लेने के उद्देश्य से पाठ्य-पुस्तकों पर जिल्दबन्दी नहीं कर सकता। (एजेंसी-होल्डरों के साथ हुए समझौते की धारा नं. 7 के अनुसार)
2. पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित पाठ्य-पुस्तकों के जाली और नकली प्रकाशन (पाठ्य-पुस्तकों) की छपाई, प्रकाशन, स्टॉक करना, जमाखोरी या बिक्री आदि करना भारतीय दंड प्रणाली के अन्तर्गत गैरकानूनी जुर्म है।

   (पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड की पाठ्य-पुस्तकें बोर्ड के 'वाटर मारक' वाले कागज़ के ऊपर ही मुद्रित की जाती हैं।)

मूल्य = ₹ 83-00

सचिव, पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड, विद्या भवन, फेज़-8, साहिबज़ादा अजीत सिंह नगर-160062 द्वारा प्रकाशित एवं मैसर्ज नार्दन स्टेशनर्ज मार्ट, जालन्धर द्वारा मुद्रित।

प्राक्कथन

गत कुछ वर्षों से राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा के ढाँचे में मूलभूत परिवर्तन लाने के विभिन्न प्रयास हो रहे हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) के अनुसार बाल-केन्द्रित शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करना है। इसी प्रयत्न को आगे बढ़ाते हुए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) सुझाती है कि बच्चों के स्कूल के जीवन को सामाजिक जीवन से जोड़ा जाये। इसके लिए ज़रूरी है कि हम सीखने की प्रक्रिया में बच्चे को भागीदार बनायें, उसकी कल्पनाशीलता को विकसित करें तथा वह सीखे हुए ज्ञान को जीवन से जोड़कर अनुभव करे।

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड ने अपने इस उत्तरदायित्व को समझते हुए आधुनिक शैक्षिक आवश्यकताओं के आधार पर हिंदी की कक्षा पहली से आठवीं तक की नई पाठ्य-पुस्तकें लागू की हैं।

हस्तीय पाठ्य-पुस्तक-8 में पाठों का चयन बच्चों के बौद्धिक और मानसिक स्तर को ध्यान में रखकर किया गया है। प्रत्येक पाठ किसी न किसी मानवीय मूल्य को विकसित करता है। पाठों के विस्तृत अभ्यास बच्चों की कल्पना-शीलता और सोचने-समझने की शक्ति को विकसित करने में सहायक हैं। भाषा का सम्पूर्ण ज्ञान व्याकरण के बिना अधूरा है। इस पुस्तक में व्याकरण के मूल नियमों को अत्यन्त सरल एवं सहज उदाहरणों के द्वारा समझाने का प्रयास किया गया है।

पाठ्य-पुस्तक को आकर्षक रूप देने में चित्रकार कुलजीत कौर ने अपनी कलात्मक सूझ-बूझ का परिचय देते हुए खूबसूरत चित्र तैयार किये हैं जो बच्चों में पुस्तक के प्रति रोचकता बढ़ाने में सहायक होंगे, ऐसा हमारा विश्वास है।

हमें पूर्ण आशा है कि यह पुस्तक भाषा-शिक्षा के मापदंडों पर खरी उतरेगी और हिन्दी प्रथम भाषा के विद्यार्थियों में मातृभाषा का ज्ञान बढ़ाने में सहायक होगी। फिर भी, पुस्तक को और अधिक उपयोगी बनाने के लिए क्षेत्र से आए सभी सुझाव बोर्ड द्वारा सादर स्वीकार किये जायेंगे।

चेयरमैन
पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड

विषय- सूची

पाठ संख्या	पाठ	लेखक	पृष्ठ संख्या
1.	कोई नहीं बेगाना	डॉ॰ योगेन्द्र बख्शी	1–5
2.	ईदगाह	मुँशी प्रेमचन्द	6–14
3.	रक्त की आत्मकथा	महेश कुमार शर्मा	15–20
4.	कश्मीर यात्रा	कंचन जैन	21–26
5.	पेड़	डॉ॰ योगेन्द्र बख्शी	27–29
6.	मुँह बोले बेटे	डॉ॰ नवरत्न कपूर	30–36
7.	श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी	डॉ॰ जुगल किशोर त्रिपाठी	37–43
8.	बस चुप भली	डॉ॰ संसारचन्द्र	44–47
9.	पथ की पहचान	डॉ॰ हरिवंशराय बच्चन	48–51
10.	अंगुलिमाल	भगवत शरण उपाध्याय	52–56
11.	बाबा साहब अम्बेडकर	शशि प्रभा जैन	57–61
12.	माँ का प्यार	'बच्चों के सौ नाटक' में से	62–68
13.	नवयुवकों के प्रति	मैथिलीशरण गुप्त	69–70
14.	यूटा सागा	डॉ॰ मीनाक्षी वर्मा	71–78
15.	साइंस सिटी	अश्नी कुमार	79–84
16.	तुम भी ऊँचे उठ सकते हो	प्रो॰ इन्द्रनाथ चावला	85–88
17.	नीरज के दोहे	गोपाल दास नीरज	89–91
18.	लघु कथाएँ (i) सीख	डॉ॰ सुनील बहल	92–95
	(ii) स्वाभिमान	कमलेश भारतीय	
	(iii) मेहनत का करिश्मा	बिमला देवी	
19.	भारत रत्न : डॉ॰अब्दुल कलाम	शिव शंकर	96–100
20.	सड़क सुरक्षा - जीवन रक्षा	डॉ॰ सुनील बहल	101–108
21.	हरी-हरी दूब पर	अटल बिहारी वाजपेयी	109–111
22.	उम्मीद का अन्तिम पत्ता	महेश कुमार शर्मा (अनुवादक)	112–117
23.	फलों की चौपाल	'चुने हुए बाल एकाँकी' से	118–123
24.	नेत्रदान	मीना शर्मा	124–128
25.	पदावली	सूरदास, मीराबाई	129–131
	प्रयोगात्मक व्याकरण		132–148

पाठ-1

कोई नहीं बेगाना

आनन्दपुर साहब के बाहर
जब हुआ युद्ध घमासान,
दशमेश गुरु का हर सिख
लड़ा हथेली पर रख जान।

तोपों की गर्जना भयंकर
'सत श्री अकाल' का गान,
अल्ला हू अकबर के नारे
बहरे कर देते थे कान।

वीर बाँकुरे डटकर लड़ते
धरती पर बिछ-बिछ जाते,
गिरते-गिरते फिर उठते
पानी-पानी चिल्लाते।

गर्मी का यह कठिन महीना
उन वीरों पर भारी था,
जलते तपते मैदानों में
युद्ध अभी तक जारी था।

जलती-तपती दोपहरी में
गुरुघर का इक सेवादार,
कन्धे पर इक मशक उठाए
देता पानी का उपहार।

संगत की सेवा करता
भाई कन्हैया उसका नाम,
गुरुवाणी का भक्त अनोखा
करता जनसेवा का काम।

सब में गुरु का रूप देखता
सबकी सेवा करता था,
हर प्यासे की प्यास बुझाता
दु:ख सभी के हरता था।

समदृष्टि थी शत्रु मित्र में
दोनों उसको एक समान,
हर घायल को पानी देना
होता उसका पहला काम।

हुई साँझ तो सिख वीरों ने
छेड़ी एक विरोधी तान,
जिनको मुश्किल से हम मारें
उनको देता जीवन दान।

लगता गुरुवर! भाई कन्हैया
का दुश्मन से नाता है।
घायल शत्रु को जल देता,
उसकी जान बचाता है।

हँस कर बोले दशम पिता फिर
क्यों भाई क्या कहते हो,
ठीक शिकायत क्या सिखों की
सबकी सेवा करते हो?

हाथ जोड़ कर चरण छुए
नतमस्तक हो वचन कहे,
गुरुवर! सब को जल देता हूँ
मानो सब में आप रहे।

गुरुवाणी का मतलब मैंने
केवल बस इतना जाना,
देखूँ हर प्राणी में प्रभुवर
कोई नहीं है बेगाना।

अव्वल अल्ला नूर वही है
कुदरत के सब बन्दे,
सब जग फैला नूर उसी का
कौन भले कौन मन्दे।

दशम पिता गद्‌गद् हो बोले,
सच्चे सिख! गुरु मेहर करे,
भेदभाव बिन सेवारत जो
उसके सिर प्रभु हाथ धरे।

यह मरहम भी ले लो मुझ से
तुम सबका उपकार करो,
हर घायल में प्रभु को देखो
घावों का उपचार करो।

अभ्यास

(क) भाषा-बोध

(i) शब्दार्थ

गर्जना	= गरजने की क्रिया, तीव्र आवाज़
वीर बाँकुरे	= बहादुर जवान
मशक	= भेड़ या बकरी की खाल को सीकर बनाया हुआ थैला जिसमें भिश्ती पानी ढोते हैं।
समदृष्टि	= सबको बराबर समझना
बेगाना	= पराया, अनजान
मेहर	= कृपा
सेवारत	= सेवा में लीन

ii) अर्थ समझते हुए वाक्यों में प्रयोग करें :-

घमासान ______ ______________________

उपहार ______ ______________________

समदृष्टि ______ ______

उपकार ______ ______

उपचार ______ ______

दु:ख हरना ______ ______

जीवनदान देना ______ ______

जान बचाना ______ ______

(ख) विचार बोध

(i) इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(क) भाई कन्हैया कौन था?

(ख) वह घायलों की सेवा किस प्रकार करता था?

(ग) वह अपने और बेगाने का भेदभाव क्यों नहीं करता था?

(घ) विरोधियों ने दशमेश पिता से उसकी क्या शिकायत की?

(ङ) भाई कन्हैया ने गुरु जी को शिकायत का क्या उत्तर दिया?

(च) गुरु जी ने भाई कन्हैया को मरहम क्यों दी?

(ii) इन काव्य-पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या करें :-

"अव्वल अल्ला नूर वही है, कुदरत के सब बन्दे,
सब जग फैला नूर उसी का, कौन भले कौन मंदे।"

(ग) व्यावहारिक व्याकरण

(i) 'उप' और 'बे' शब्दांश लगाकर नये शब्द बनायें :-

उप + हार = उपहार

उप + वास = ______

उप + नयन = ______

उप + हास = ______

उप + कार = ______

बे + रहम = ______

बे + कायदा = ______

बे + कसूर = ______

बे + मेल = ______

बे + रोक = ______

बे + मिसाल = ______

(ii) 'गुरु' लगाकर नये शब्द बनायें जैसे-गुरुवाणी, ______, ______, ______, ______

(iii) इन शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखें :-

शत्रु = ______, ______

युद्ध = ______, ______

धरती = ______, ______

पानी = ______, ______

गर्मी = ________, ________
उपहार = ________, ________
गुरु = ________, ________
दु:ख = ________, ________
बेगाना = ________, ________
मेहर = ________, ________
कृपा = ________, ________
नूर = ________, ________
हाथ = ________, ________
घाव = ________, ________

(iv) विपरीत अर्थ वाले शब्द लिखें :-

युद्ध = ________
दु:ख = ________
गुरु = ________
मुश्किल = ________

धरती = ________
शत्रु = ________
प्यास = ________
शिकायत = ________

ईदगाह

रमजान के पूरे तीस रोज़ों के बाद आज ईद आई है। गाँव में कितनी हलचल है। ईदगाह जाने की तैयारियाँ हो रही हैं। लड़के सबसे ज्यादा प्रसन्न हैं। किसी ने एक रोज़ा रखा है, वह भी दोपहर तक, किसी ने वह भी नहीं, लेकिन ईदगाह जाने की खुशी उनके हिस्से की चीज़ है। रोज़े बड़े-बूढ़ों के लिए होंगे। इनके लिए तो ईद है। रोज ईद का नाम रटते थे। आज वह आ गई। वे बार-बार अपनी जेबों से अपना खज़ाना निकाल कर गिनते हैं और खुश होकर फिर रख लेते हैं। महमूद गिनता है, एक-दो, दस-बारह, उसके पास बारह पैसे हैं। मोहसिन के पास एक, दो, तीन, आठ, नौ, पंद्रह पैसे हैं। इन्हीं अनगिनत पैसों में अनगिनत चीज़ें लायेंगे .... खिलौने, मिठाइयाँ, बिगुल, गेंद और न जाने क्या-क्या। सबसे ज्यादा प्रसन्न है हामिद। वह तेरह-चौदह साल का ग़रीब सूरत, दुबला पतला लड़का जिसका बाप गत वर्ष हैज़े की भेंट हो गया और माँ न जाने क्यों पीली होती-होती एक दिन मर गई, किसी को पता न चला, क्या बीमारी है।

हामिद के पाँव में जूते नहीं हैं, सिर पर पुरानी टोपी है, जिसका गोटा काला पड़ गया है, फिर भी वह प्रसन्न है।

हामिद भीतर जाकर दादी से कहता है .... तुम डरना नहीं अम्मा, मैं सबसे पहले आऊँगा। बिल्कुल न डरना।

अमीना का दिल कचोट रहा है। गाँव के बच्चे अपने-अपने बाप के साथ जा रहे हैं। हामिद का बाप अमीना के सिवा और कौन है? उसे कैसे अकेले मेले में जाने दे! उस भीड़-भाड़ में बच्चा कहीं खो जाये, तो क्या हो! नन्ही-सी जान! तीन कोस चलेगा कैसे! पैर में छाले पड़ जायेंगे। जूते भी तो नहीं हैं। कुल दो आने पैसे हैं। तीन पैसे हामिद की जेब में और पाँच अमीना के बटुए में। यही तो बिसात है और ईद का त्योहार।

गाँव से मेला चला और बच्चों के साथ हामिद भी जा रहा था। कभी सबके सब दौड़ कर आगे निकल जाते। फिर किसी पेड़ के नीचे खड़े होकर साथ वालों का इन्तज़ार करते। ये लोग क्यों इतना धीरे-धीरे चल रहे हैं। हामिद के पैरों में तो जैसे पर लग गए हैं। वह कभी थक सकता है। शहर का दामन आ गया।

अब बस्ती घनी होने लगी थी। ईदगाह जाने वालों की टोलियाँ नज़र आने लगीं। एक-से-एक भड़कीले वस्त्र पहने हुए। कोई इक्के ताँगे पर सवार, कोई मोटर पर, सभी के दिलों में उमंग। ग्रामीणों का यह छोटा-सा दल, अपनी विपन्नता से बेखबर, सन्तोष और धैर्य में मग्न चला जा रहा था। बच्चों के लिए नगर की सभी चीज़ें अनोखी थीं। जिस चीज़ की ओर देखते, देखते ही रह जाते और पीछे से बार-बार हार्न की आवाज़ होने पर भी न चेतते, हामिद तो मोटर के नीचे आते-आते बचा।

सहसा ईदगाह नज़र आया। ऊपर इमली के घने वृक्षों की छाया है। नीचे पक्का फर्श है, जिस पर जाज़िम बिछा हुआ है और रोज़ेदारों की पंक्तियाँ एक के पीछे एक न जाने कहाँ तक चली गयी हैं, पक्की जगह के नीचे तक, जहाँ जाज़िम भी नहीं है। यहाँ कोई धन और पद नहीं देखता। इस्लाम की निगाह में सब बराबर हैं। इन ग्रामीणों ने भी वजू किया और पिछली पंक्ति में खड़े हो गये। कितना सुन्दर संचालन है, कितनी सुन्दर व्यवस्था, लाखों सिर एक साथ सिजदे में झुक जाते हैं, फिर सब के सब एक साथ खड़े हो जाते हैं, एक साथ झुकते हैं और एक साथ घुटनों के बल बैठ जाते हैं। कई बार यही क्रिया होती है।

नमाज़ खत्म हो गई है। लोग आपस में गले मिल रहे हैं। तब मिठाई और खिलौने की दुकानों पर धावा होता है। ग्रामीणों का यह दल इस विषय में बालकों से कम उत्साही नहीं है। यह देखो, हिंडोला है। एक पैसा देकर चढ़ जाओ। कभी आसमान पर जाते हुए मालूम होंगे, कभी जमीन पर गिरते हुए। यह चर्खी है, लकड़ी के हाथी, घोड़े, ऊँट छड़ों से लटके हुए हैं। एक पैसा देकर बैठ जाओ और पच्चीस चक्करों का मज़ा लो। महमूद, मोहसिन, नूरे और शम्मी इन घोड़ों और ऊँटों पर बैठते हैं। हामिद दूर खड़ा है। तीन ही पैसे तो उसके पास हैं। अपने कोष का तिहाई हिस्सा जरा-सा चक्कर खाने के लिए नहीं दे सकता।

सब चर्खियों से उतरते हैं, अब खिलौने लेंगे। इधर दुकानों की कतार लगी हुई है। तरह तरह के खिलौने हैं - सिपाही और गुजरिया, राजा और वकील, भिश्ती, धोबिन और साधु। वाह! कितने सुन्दर खिलौने हैं, अब बोलना चाहते हैं। महमूद सिपाही लेता है। खाकी वर्दी और लाल पगड़ी वाला, कन्धे पर बन्दूक रखे हुए। मालूम होता है, अभी कवायद किये चला आ रहा है। मोहसिन को भिश्ती पसन्द आया। कमर झुकी है, ऊपर मशक रखे हुए है। मशक का मुँह एक हाथ से पकड़े हुए है। कितना प्रसन्न है। शायद कोई गीत गा रहा है। बस, मशक से पानी उड़ेलना ही चाहता है। नूरे को वकील साहब से प्रेम है। कैसी विद्वत्ता है उनके मुख पर! काला चोगा, नीचे सफेद अचकन, अचकन के सामने की जेब में घड़ी, सुनहरी जंजीर, एक हाथ में कानून का पोथा लिए हुए। मालूम होता है, अभी किसी अदालत से जिरह या बहस किये चले आ रहे हैं। ये सब दो-दो पैसे के खिलौने हैं। हामिद के पास कुल तीन पैसे हैं, इतने महँगे खिलौने वह कैसे ले? खिलौना कहीं हाथ से छूट पड़े, तो चूर चूर हो जाए। जरा पानी पड़े तो सारा रंग धुल जाए। ऐसे खिलौने लेकर वह क्या करेगा, किस काम के।

मोहसिन कहता है - मेरा भिश्ती रोज़ पानी दे जायेगा, साँझ-सवेरे।

महमूद- और मेरा सिपाही घर का पहरा देगा। कोई चोर आयेगा, तो फौरन बन्दूक का फायर कर देगा।

शम्मी- और मेरी धोबिन रोज़ कपड़े धोयेगी।

हामिद खिलौनों की निन्दा करता है - मिट्टी ही के तो हैं, गिरें तो चकनाचूर हो जाएँ।

खिलौने के बाद मिठाइयाँ आती हैं किसी ने रेवड़ियाँ ली हैं, किसी ने गुलाब जामुन, किसी ने सोहन हलवा। मज़े से खा रहे हैं। हामिद बिरादरी से पृथक है। अभागे के पास तीन पैसे हैं। क्यों नहीं कुछ लेकर खाता? ललचाई आँखों से सबकी ओर देखता है।

मोहसिन कहता-हामिद, रेवड़ी ले जा कितनी खुशबूदार है।

हामिद को सन्देह हुआ, यह केवल क्रूर विनोद है, मोहसिन इतना उदार नहीं है, लेकिन यह जानकर भी वह उसके पास जाता है। मोहसिन दोने से एक रेवड़ी निकाल कर हामिद की ओर बढ़ाता है। हामिद हाथ फैलाता है। मोहसिन रेवड़ी अपने मुँह में रख लेता है। महमूद, नूरे और शम्मी खूब तालियाँ बजा-बजा कर हँसते हैं। हामिद खिसिया जाता है।

मोहसिन - अच्छा अबकी ज़रूर देंगे हामिद, अल्ला कसम, ले जा।

हामिद - रखे रहो। क्या मेरे पास पैसे नहीं हैं?

शम्मी - तीन ही तो पैसे हैं, तीन पैसे में क्या-क्या लोगे?

महमूद- हमसे गुलाब जामुन ले जा, हामिद।

हामिद- मिठाई क्या बड़ी चीज़ है। किताब में इसकी कितनी बुराइयाँ लिखी हैं।

मोहसिन - लेकिन दिल में कह रहे होंगे कि मिले तो खा लें। अपने पैसे क्यों नहीं निकालते?

महमूद - हम समझते हैं इसकी चालाकी। जब हमारे पैसे खर्च हो जायेंगे तो हमें ललचा-ललचाकर खायेगा।

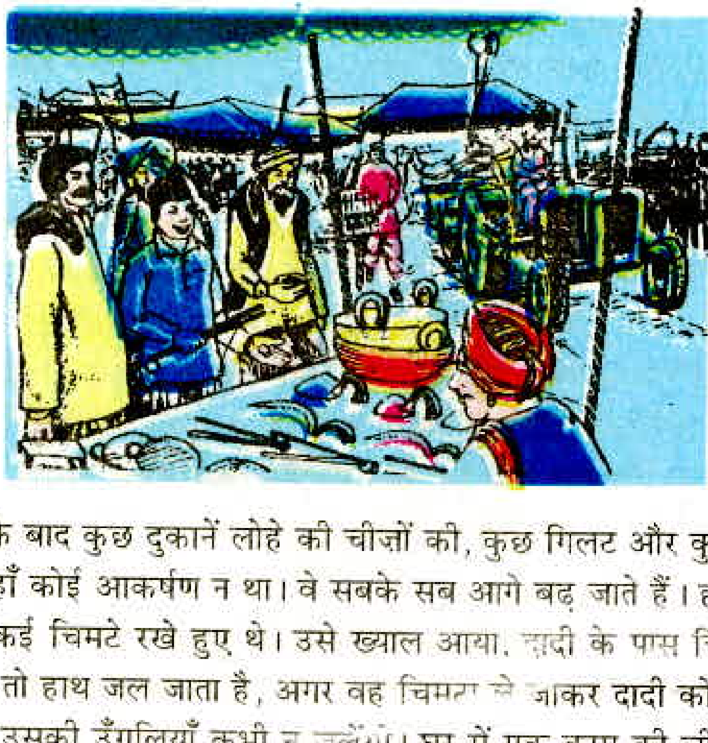

मिठाइयों के बाद कुछ दुकानें लोहे की चीज़ों की, कुछ गिलट और कुछ नकली गहनों की लड़कों के लिए यहाँ कोई आकर्षण न था। वे सबके सब आगे बढ़ जाते हैं। हामिद लोहे की दुक पर रुक जाता है। कई चिमटे रखे हुए थे। उसे ख्याल आया, दादी के पास चिमटा नहीं है। तवे रोटियाँ उतारती है, तो हाथ जल जाता है, अगर वह चिमटा ले जाकर दादी को दे दे, तो वह कित प्रसन्न होगी। फिर उसकी उँगलियाँ कभी न जलेंगी। घर में एक काम की चीज़ हो जाएगी। अम चिमटा देखते ही दौड़कर मेरे हाथ से ले लेगी और कहेगी - 'मेरा बच्चा, अम्मा के लिए चिम लाया है।' हज़ारों दुआयें देगी। फिर पड़ोस की औरतों को दिखायेगी। सारे गाँव में चर्चा ह लगेगी, हामिद चिमटा लाया है। कितना अच्छा लड़का है। इन लोगों के खिलौने देखने पर कौन इ दुआयें देगा। बड़ों की दुआयें सीधे अल्लाह के दरबार में पहुँचती हैं और तुरन्त सुनी जाती हैं। उ

दुकानदार से पूछा - यह चिमटा कितने का है?

दुकानदार ने उसकी ओर देखा और कोई आदमी साथ न देखकर कहा - वह तुम्हारे काम का नहीं है जी।

'बिकाऊ है कि नहीं?'

'बिकाऊ क्यों नहीं है और यहाँ क्यों लाद लाये हैं?'

तो बताते क्यों नहीं, कै पैसे का है?

छः पैसे लगेंगे।

हामिद का दिल बैठ गया।

'ठीक-ठीक बताओ।'

'ठीक-ठीक पाँच पैसे लगेंगे, लेना हो लो, नहीं चलते बनो।'

हामिद ने कलेजा मज़बूत करके कहा - तीन पैसे लोगे?

यह कहता हुआ वह आगे बढ़ गया कि दुकानदार की न सुनें, लेकिन दुकानदार ने घुड़कियाँ नहीं दीं। बुलाकर चिमटा दे दिया। हामिद ने उसे इस तरह कन्धे पर रखा, मानो बन्दूक हो और शान से अकड़ता हुआ साथियों के पास आया। जरा सुनें, सबके सब क्या-क्या आलोचनाएँ करते हैं।

मोहसिन ने हँस कर कहा - यह चिमटा क्यों लाया पगले! इसे क्या करेगा?

हामिद ने चिमटे को जमीन पर पटक कर कहा - जरा अपना भिश्ती जमीन पर गिरा दे। सारी पसलियाँ चूर-चूर हो जायें।

महमूद बोला - तो यह चिमटा कोई खिलौना है?

हामिद - खिलौना क्यों नहीं है? अभी कन्धे पर रखा, बन्दूक हो गई, हाथ में ले लिया तो, फकीर का चिमटा हो गया, चाहूँ तो इससे मंजीरे का काम ले सकता हूँ। एक चिमटा जमा दूँ, तो तुम लोगों के सारे खिलौनों की जान निकल जाए। तुम्हारे खिलौने कितना ही ज़ोर लगायें, मेरे चिमटे का बाल भी बाँका नहीं कर सकते। मेरा बहादुर शेर है - चिमटा।

चिमटे ने सभी को मोहित कर लिया, लेकिन अब पैसे किसके पास धरे हैं, फिर मेले से दूर निकल आये हैं, नौ कब के बज गए, धूप तेज हो रही है। घर पहुँचने की जल्दी हो रही है, हामिद है बड़ा चालाक, इसलिए अपने पैसे बचा रखे थे।

अब बालकों के दो दल हो गए हैं। मोहसिन, महमूद, शम्मी और नूरा एक तरफ है, हामिद अकेला दूसरी तरफ। शास्त्रार्थ हो रहा है।

मोहसिन को एक चोट सूझ गई - तुम्हारे चिमटे का मुँह रोज़ आग में जलेगा।

उसने समझा था कि हामिद लाजवाब हो जाएगा, लेकिन यह बात न हुई। हामिद ने तुरन्त

जवाब दिया - आग में बहादुर ही कूदते हैं जनाब, तुम्हारे यह वकील, सिपाही और भिश्ती घर में घुस जायेंगे। आग में कूदना वह काम है, जो यह रुस्तमे-हिन्द ही कर सकता है।

हामिद ने मैदान मार लिया। उसका चिमटा रुस्तमे हिन्द है। अब इसमें मोहसिन, महमूद, नूरे और शम्मी किसी को भी आपत्ति नहीं हो सकती। विजेता को हारने वालों से जो सत्कार मिलना स्वाभाविक है, वह हामिद को भी मिला। औरों ने तीन-तीन, चार-चार आने पैसे खर्च किये, पर? कोई काम की चीज़ न ले सके। हामिद ने तीन पैसे में रंग जमा लिया।

सन्धि की शर्तें तय होने लगीं। मोहसिन ने कहा - जरा अपना चिमटा दो, हम भी देखें। तुम हमारा भिश्ती लेकर देखो।

महमूद और नूरे ने भी अपने-अपने खिलौने पेश किए।

हामिद को इन शर्तों के मानने में कोई आपत्ति न थी। चिमटा बारी-बारी से सबके हाथ में गया और उनके खिलौने बारी-बारी से हामिद के हाथ में आये। कितने खूबसूरत खिलौने हैं?

ग्यारह बजे सारे गाँव में हलचल मच गई, मेले वाले आ गये। अमीना हामिद की आवाज़ सुनते ही दौड़ी और उसे गोद में उठाकर प्यार करने लगी। सहसा उसके हाथ में चिमटा देखकर वह चौंकी।

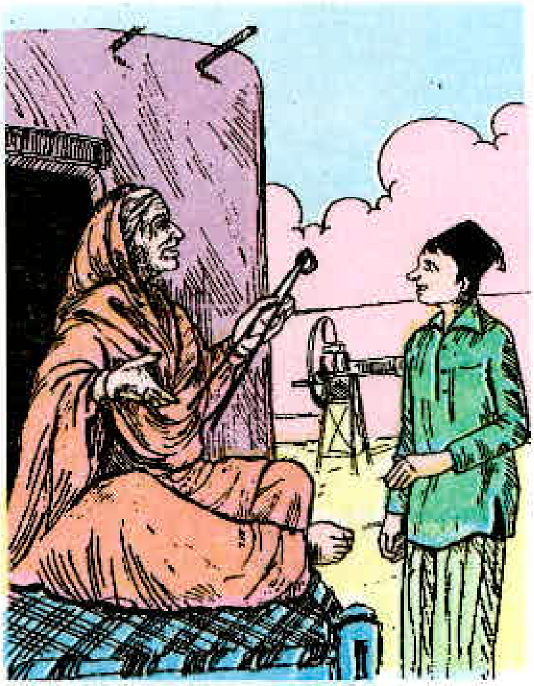

यह चिमटा कहाँ से लाया?'

'मैंने मोल लिया है।'

'कै पैसे में?'

'तीन पैसे दिए।'

अमीना ने छाती पीट ली। यह कैसा बेसमझ लड़का है कि दोपहर हुआ, कुछ खाया न पिया। लाया क्या, चिमटा! सारे मेले में तुझे और क्या कोई चीज़ न मिली, जो यह लोहे का चिमटा उठा लाया?

हामिद ने अपराधी भाव से कहा – तुम्हारी उँगलियाँ तवे से जल जाती थीं, इसलिए मैंने इसे लिया।

बुढ़िया का क्रोध तुरन्त स्नेह में बदल गया। यह मूक स्नेह था, खूब ठोस, रस और स्वाद से भरा हुआ। बच्चे में कितना त्याग, कितना सद्भाव और कितना विवेक है? दूसरों को खिलौने लेते और मिठाई खाते देखकर इसका मन कितना ललचाया होगा। इतना जब्त इससे हुआ कैसे? वहाँ भी अपनी बुढ़िया दादी की याद बनी रही। अमीना का मन गद्गद् हो गया।

और अब एक विचित्र बात हुई। हामिद के इस चिमटे से भी विचित्र। बच्चे हामिद ने बूढ़े हामिद का पार्ट खेला था। बुढ़िया अमीना बालिका अमीना बन गई। वह रोने लगी। दामन फैला कर हामिद को दुआएँ देती जाती थी और आँसू की बड़ी-बड़ी बूँदें गिराती जाती थी। हामिद इसका रहस्य क्या समझता।

अभ्यास

(क) भाषा बोध

(i) शब्दार्थ

ईद = मुसलमानों का प्रसिद्ध त्योहार

ईदगाह = ईद के दिन मुसलमानों के एकत्र होकर नमाज पढ़ने की जगह

बिसात = पूँजी	जाजिम = दरी के ऊपर बिछाने की छपी चादर
सिजदे = सिर झुकाना	हिंडोला = झूला
आपत्ति = एतराज	कोष = खजाना
भिश्ती = मशक से पानी ढोने वाला	घुड़कियाँ = धमकी देना
स्नेह = प्यार	कचोट = चुभन
दामन = आँचल	सहसा = अचानक

(ii) निम्नलिखित शब्दों का अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग करें :-

कोष ________ ______________________________

बिसात ________ ______________________________

स्नेह ________ ______________________________

दामन ________ ______________________________

हिंडोला ________ ______________________________

कचोट ________ ______________________________

(iii) निम्नलिखित मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग करें :-

पैरों में पर लगना ______ ______

दिल बैठ जाना ______ ______

राई का पर्वत बनाना ______ ______

रंग जमाना ______ ______

बाल भी बाँका न होना ______ ______

भेंट हो जाना ______ ______

मैदान मार लेना ______ ______

मन गद्‌गद् हो जाना ______ ______

(ख) विषय बोध

(i) रिक्त स्थानों की पूर्ति करें :-

(क) अमीना का दिल ------- रहा है।

(ख) इस्लाम की -------में सब बराबर हैं।

(ग) ईदगाह जाने वालों की --------नजर आने लगीं।

(घ) चिमटे ने सभी को --------कर लिया।

(ङ) बुढ़िया का ------ तुरन्त स्नेह में बदल गया।

(ii) इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(क) नमाज खत्म होने पर लोग क्या करते हैं?

(ख) रमजान के कितने दिनों बाद ईद आती है?

(ग) ईद का त्योहार किस धर्म से सम्बन्धित है?

(घ) हामिद हिण्डोले में क्यों नहीं चढ़ता?

(iii) इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें :-

(क) ईद का त्योहार कब आता है? इस दिन मुसलमान क्या करते हैं?

(ख) अमीना हामिद को मेले क्यों नहीं भेजना चाहती?

(ग) हामिद ने अपनी दादी के लिए चिमटा क्यों खरीदा?

(घ) हामिद का चिमटा रुस्तमे हिन्द कैसे है?

(ग) व्यावहारिक व्याकरण :

(i) वचन बदलें :-

बन्दूक = बन्दूकें	चिमटा = चिमटे	टोली = टोलियाँ
आँख = ______	पैसा = ______	घुड़की = ______

सड़क	= ______	खिलौना	= ______	पसली	= ______
किताब	= ______	ताँगा	= ______	उँगली	= ______
दुआ	= ______	हिंडोला	= ______	चर्खी	= ______

(ii) लिंग बदलें :-

धोबी	= धोबिन	ऊँट	= ऊँटनी	दादा	= दादी
सुनार	= ______	सिंह	= ______	बालक	= ______
ग्वाला	= ______	हंस	= ______	बच्चा	= ______
तेली	= ______	शेर	= ______	लड़का	= ______

(iii) विपरीतार्थक शब्द लिखें :-

प्रसन्न	= ______	महँगा	= ______	विवेक	= ______
आगे	= ______	धीरे	= ______	धूप	= ______

(iv) इन भिन्नार्थक शब्द - युग्मों के अर्थ दिए गए हैं। इनके अर्थों को ध्यान में रखते हुए वाक्य बनाएँ :-

ओर	= तरफ	और	= तथा
कुल	= वंश	कूल	= किनारा
अभिराम	= सुन्दर	अविराम	= लगातार, बिना रुके
कलि	= कलियुग	कली	= अधखिला फूल
शुल्क	= फ़ीस	शुक्ल	= सफेद, शुद्ध
क्रम	= सिलसिला	कर्म	= कार्य
प्रमाण	= सबूत	परिमाण	= मात्रा
चिर	= पुराना	चीर	= वस्त्र

(v) इन वाक्यों में से संज्ञा शब्द छाँटकर उनके भेद का नाम लिखें :-

1. हामिद के पाँव में जूते नहीं हैं। ______________
2. यह हिंडोला है। ______________
3. हामिद खिसिया जाता है। ______________
4. अमीना का दिल कचोट रहा है। ______________
5. चिमटे ने सभी को मोहित कर लिया। ______________

(vi) रेखांकित शब्दों में कौन-सा सर्वनाम है?

1. <u>यह</u> देखो, हिंडोला है। ______________
2. <u>वह</u> सबको ललचाई आँखों से देखता है। ______________
3. यहाँ <u>कोई</u> धन और पद नहीं देखता। ______________
4. <u>क्यों</u> नहीं <u>कुछ</u> लेकर खाता? ______________

5. वे सबके सब आगे बढ़ जाते हैं। ______________

6. उसे ख्याल आया, दादी के पास चिमटा नहीं है। ______________

7. इसे क्या करेगा? ______________

8. वह रोने लगी। ______________

(घ) रचनात्मक ज्ञान

(क) मान लीजिए आप स्कूल की तरफ से शिमला शैक्षिक भ्रमण पर जाते हैं वहाँ से आप अपने छोटे भाई-बहन के लिए कुछ न कुछ खरीद कर लाते हो। आप अपने दादा-दादी के लिए वहाँ से क्या खरीदकर लायेंगे। अपने शब्दों में लिखें।

(ख) यदि आप साधन सम्पन्न हैं और आप अपने दोस्तों के साथ कहीं पिकनिक पर गये हैं। आप का कोई एक ऐसा दोस्त है जिसके पास आपके बनिस्पत कम पैसे हैं तो क्या आप उसे चिढ़ा-चिढ़ाकर चीज़ें खायेंगे या मिल बाँटकर; लिखें।

रक्त की आत्मकथा

मैं रक्त हूँ। मेरे स्वस्थ रूप से आपके शरीर की नाड़ियों में नियमित रूप से बहते रहने से ही आपका जीवन चलायमान रहता है। सम्पूर्ण विश्व में शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति होगा, जिसने कोई दुर्घटना होते, चोट लगते समय मुझे बहते हुए न देखा हो। आपके शरीर की नाड़ियाँ मेरा घर भी है और कार्यस्थल भी। मैं कभी भी इनसे बाहर नहीं निकलना चाहता। न चाहते हुए भी जब मैं किसी कारण से किसी व्यक्ति के शरीर से निकलता हूँ तो मैं पानी की तरह बहता हूँ और मेरा रंग लाल होता है। कई लोगों के मन में मेरे रंग के प्रति यह प्रश्न हमेशा बना रहता है कि मेरा रंग लाल ही क्यों होता है? कोई और क्यों नहीं?

सीधा-सीधा बताऊँ तो मैं लोहा खाता हूँ, इसीलिए मेरा रंग लाल होता है। नहीं समझे, तो सुनिए, मैं आपको अपनी संरचना के बारे में बताता हूँ, आपको सब पता चला जाएगा। मैं देखने में लाल द्रव्य के समान होता हूँ। पानी की तरह बहता हूँ लेकिन मेरी संरचना पानी की अपेक्षा काफी जटिल है। मुख्य तौर पर मेरे दो अंग हैं - पहला प्लाज़मा, जो कि एक द्रव्य के रूप में होता है। मेरा दूसरा अंग विभिन्न प्रकार की कोशिकाएँ होती हैं जो मेरे पहले अंग प्लाज़मा में तैरती रहती हैं। मेरा प्लाज़मा भाग आधे से अधिक (55%) होता है और बाकी 45% का भाग लाल-कोशिकाओं, श्वेत-कोशिकाओं और पारदर्शी प्लेटलेट्स कोशिकाओं का बना होता है।

यह लाल कोशिकाएँ ही होती हैं जिनके कारण सम्पूर्ण जगत में प्रत्येक मनुष्य में मेरा रंग लाल होता है। अगर आप मेरी इन लाल कोशिकाओं को देखना चाहें तो इनको विशेष सूक्ष्मदर्शी से ही देखा जा सकता है। आप इनको किसी से कम न समझें, एक वयस्क पुरुष में मेरी एक बूँद में इनकी संख्या लगभग पचास लाख तक होती है। इनकी संख्या स्त्रियों और बच्चों में भिन्न-भिन्न

होती है। इनका लाल रंग इनमें उपस्थित 'हीमोग्लोबिन' नामक पदार्थ के कारण होता है। इनकी बनावट ऐसी प्रतीत होती है जैसे किसी बालूशाही को दोनों तरफ से दबाया गया हो। मेरी ये लाल कोशिकाएँ मेरे साथ आपके शरीर के लिए दिन रात काम करती हैं। ऑक्सीजन को फेफड़ों से शरीर तक पहुँचाना और कार्बन-डाई-ऑक्साइड को फेफड़ों द्वारा बाहर फैंकने तक के कार्यों में यही तो मुख्य भूमिका निभाती हैं। अब तो आप समझ ही गए होंगे कि आखिर मेरा रंग लाल क्यों होता है? जी हाँ, आपने ठीक समझा, 'हीमोग्लोबिन' के कारण ही मेरा रंग लाल होता है। यह हीमोग्लोबिन लोहे और प्रोटीन का बना होता है। लोहे का भाग अधिक होने के कारण ही हीमोग्लोबिन अपना मुख्य रंग लाल प्रदर्शित करता है। मुझमें हीमोग्लोबिन की नियमित से कम मात्रा होने के कारण आपमें से कई लोगों को अनीमिया नामक रोग हो जाता है।

अब आप यह सोच रहे होंगे कि मेरा लाल रंग तो लोहा खाने से होता है और बाकी के अंग मेरे कहाँ से आते हैं?, कैसे विकसित होते हैं? तो आप पूरी कहानी जानकर ही चैन की साँस लेंगे। ठीक है भाई, ये भी बता देते हैं, हाथ कंगन को आरसी क्या। मेरी लाल कोशिकाओं का विकास आपके शरीर की हड्डियों के खोखले भाग में होता है। इस खोखले भाग में 'बोन-मैरो' नामक पदार्थ में ही मेरी इन लाल कोशिकाओं का विकास होता है। यही मेरे उत्पादन कक्ष का कार्य करते हैं। आपमें बचपन में ऐसे उत्पादन कक्षों की संख्या काफी होती है लेकिन जैसे ही आप बीस वर्ष की आयु पार करते हैं, इनकी संख्या घटकर एक चौथाई रह जाती है। बचा हुआ तीन चौथाई भाग श्वेत कोशिकाओं और प्लेटलेट्स के उत्पादन कक्षों का कार्य करता है। आश्चर्यजनक बात तो यह है कि आपके शरीर की यह बोन मैरो-फैक्ट्रियाँ आवश्यकता अनुसार मेरे उत्पादन दर में परिवर्तन ला सकती हैं।

मेरी इन लाल कोशिकाओं की आयु चार माह की होती है। इसके पश्चात् ये भगवान को प्यारी हो जाती हैं। इनके स्थान पर नई कोशिकाएँ जन्म ले लेती हैं। जन्म-मरण की यह प्रक्रिया निरन्तर चलती रहती है। इसी कारण आपको भोजन में लोहा और विटामिन लेने की आवश्यकता रहती है। आप सभी को हर रोज़ इनके उत्पादन के लिए प्रोटीन, लोह तत्त्व और विटामिन रूपी कच्चे माल की आवश्यकता होती है। यह कच्चा माल आप हरी सब्जियों, अमरूद और सेब जैसे फलों, मछली, मीट और अंडों आदि के रूप में मेरे उत्पादन के लिए भोजन में ले सकते हैं। मेरे अचानक बह जाने पर ये बोनमैरो फैक्ट्रियाँ मेरा उत्पादन आठ-गुणा तक बढ़ा सकती हैं। इसलिए आवश्यकता पड़ने पर किसी को दान करने से आप में किसी प्रकार की कोई कमी या कमज़ोरी नहीं आती।

मेरा प्रत्येक अंग आपकी सेवा में अपना-अपना कार्य उचित ढंग से करता है। मेरे प्रत्येक अंग का कार्य आपके लिए महत्त्वपूर्ण है। मेरे प्लाज़मा रूपी अंग में तैरती श्वेत कोशिकाएँ आपके शरीर का सुरक्षा-कवच हैं। ये लाल कोशिकाओं की अपेक्षा दो-गुणा बड़ी होती हैं और संख्या में बहुत कम होती हैं। फिर भी ये मेरी एक बूँद में लगभग दस-हजार के करीब होती हैं। मेरी ये श्वेत कोशिकाएँ आपके शरीर में किसी रोगाणु की घुसपैठ के समय किसी बहादुर सिपाही की तरह

बचाव के लिए आती हैं। ये बाहरी रोगाणुओं से लड़ते समय अपने प्राण देकर भी आपकी रक्षा करती हैं। आपने आम तौर पर यह देखा ही होगा कि चोट लगने पर चोट के स्थान से एक सफेद द्रव्य बाहर निकलता है। ये श्वेत मृत-कोशिकाएँ ही होती हैं जो रोगाणुओं से लड़ते-लड़ते शहीद हो जाती हैं। इसे पस या मवाद कहते हैं। इनकी आयु छः-सात घंटे होती है। हालांकि कुछेक कोशिकाओं की आयु दो से तीन दिन या इससे भी अधिक हो सकती है। इनके विकास के लिए किसी विशेष प्रकार के भोजन की आवश्यकता नहीं होती। ये आवश्यकता अनुसार बढ़ जाती हैं और ज़रूरत पूरी होने पर सामान्य हो जाती हैं।

बाकी रह गई प्लाज़मा में तैरती प्लेटलेट्स कोशिकाएँ, अगर इनका जिक्र न किया गया तो ये मुझे छोड़ कहीं और जमावड़ा कर लेंगी। यदि इनकी कमी मुझमें आ गई तो साहब 'डेंगू' की बीमारी आपको होगी। चलिए, आप भी क्या याद करेंगे, आपको 'डेंगू' नहीं होने देते, प्लेटलेट्स के बारे में चर्चा करते हैं। इनका आकार छोटी सपाट-प्लेटों की तरह होता है। ये पारदर्शी कोशिकाएँ चोट लगने पर मुझे अधिक बहने से रोकने के लिए मेरी जमाव क्रिया में सहायता करती हैं। इनकी संख्या मेरे प्रति घन मिलीमीटर में एक लाख पचास हज़ार से चार लाख तक होती है। चोट लगने पर मेरे बहने पर ये कोशिकाएँ प्लाज़मा में उपस्थित एक विशेष प्रोटीन के साथ मिलकर, मकड़ीजाल के समरूप एक बढ़िया-सा जाल बना देती हैं। यह जाल मेरी लाल कोशिकाओं को रोक लेता है। इसी प्रक्रिया में मैं कुछ ही समय में चोट के स्थान पर जम कर सख्त हो जाता हूँ जिससे मैं एक पपड़ी का रूप धारण कर लेता हूँ और बहना बन्द हो जाता हूँ। समय के साथ पपड़ी के नीचे की त्वचा विकसित होकर घाव को भर देती है। प्लेटलेट्स के विकास के लिए किसी विशेष प्रकार के भोजन की आवश्यकता नहीं पड़ती, सामान्य सन्तुलित भोजन ही पर्याप्त रहता है। आवश्यकता पड़ने पर ये प्लेटलेट्स अपने जैसी कोशिकाएँ स्वयं ही विकसित कर लेती हैं।

चलो, मेरी साँस में तो साँस आई। मैंने तो आपको 'डेंगू' से बचा लिया। अब आप भी संतुलित भोजन लेकर और स्वस्थ एवं स्वच्छ जीवनशैली अपनाकर इस नामुराद 'डेंगू' से दूरी बना सकते हैं।

लो जी, अब मैं आपको अपने प्रमुख अंग प्लाज़मा के बारे में जानकारी देता हूँ। मुझे इसके बड़प्पन और शालीनता पर गर्व है। यह हल्के-पीले रंग का द्रव्य बड़ी शालीनता से मेरे बाकी के अंगों को अपने साथ लेकर चलता है। मेरे बाकी के कोशिका भाग के तीनों अंग इसी में तैरते रहकर अपना-अपना कार्य करते हैं। यह प्लाज़मा का बड़प्पन ही तो है जिसके कारण मेरे बाकी के अंग इसकी सहायता से बेझिझक अपना कार्य सम्पन्न करते हैं। यह प्लाज़मा कई तरह के प्रोटीनज़ का बना होता है जिनका विकास आपके शरीर के लिवर (जिगर) में होता है। मुझे दान करने के पश्चात् या किसी बीमारी के कारण मुझमें अगर प्लाज़मा की कमी आ जाती है तो लिवर सामान्य की अपेक्षा आठ-गुणा प्लाज़मा का विकास कर सकता है और ज़रूरत पड़ने पर इससे अधिक भी।

मैं अपने इन्ही अंगों की सहायता से ही आपकी नाड़ियों में बहकर आपकी सेवा में खुशी अनुभव करता हूँ। मेरी यही इच्छा रहती है कि आप मेरे अंगों के विकास के लिए पर्याप्त मात्रा में

सन्तुलित भोजन ग्रहण करें और स्वच्छ जीवन शैली अपनाएँ। यदि आप मेरे अंगों को स्वस्थ और नियमित मात्रा में रखेंगे तो मैं आपकी हर मुश्किल में सहायता करने का प्रण करता हूँ।

मैं प्राय: एक वयस्क के शरीर में 75 सी.सी. प्रति किलोग्राम की मात्रा में होता हूँ और एक वयस्क स्त्री में 67 सी.सी. प्रति किलोग्राम की मात्रा में पाया जाता हूँ। इसलिए औसतन मैं एक वयस्क शरीर में चार से पाँच लीटर तक होता हूँ। इसलिए आवश्यकता पड़ने पर मुझे किसी की जीवन रक्षा के लिए अवश्य दान करना चाहिए। मुझे एक मनुष्य ही दूसरे मनुष्य को दान कर सकता है क्योंकि आपके शरीर की बोनमैरो फैक्ट्रियों के अतिरिक्त मुझे दुनिया की कोई और फैक्ट्री नहीं बना सकती। दुर्घटनाओं, बड़े ऑप्रेशनों और कुछ भयंकर बीमारियों के इलाज के समय मेरी अत्यन्त आवश्यकता रहती है। इसलिए अठारह से पैंसठ वर्ष का कोई भी स्वस्थ व्यक्ति प्रत्येक तीन महीने बाद स्वेच्छा से किसी मान्यता प्राप्त ब्लड-बैंक में जाकर, रक्तदान शिविर में या आवश्यकता पड़ने पर किसी मरीज़ को समय रहते मुझे दान कर सकता है। अब तो विज्ञान ने ऐसी मशीनों का भी आविष्कार कर दिया है जो मेरे अंगों को भी अलग-अलग कर देती हैं जिससे मेरे दान का लाभ एक से अधिक व्यक्तियों को भी मिल जाता है। मरीज़ को मेरे जिस भाग की आवश्यकता होती है केवल वही भाग उसे चढ़ाया जाता है और बाकी के भागों को सुरक्षित रख लिया जाता है। एक ही यूनिट से प्लाज़मा की कमी वाले को प्लाज़मा और प्लेटलेट्स की कमी वाले को प्लेटलेट्स अलग करके चढ़ा दिए जाते हैं।

इसलिए मैं तो अपने प्रत्येक अंग को अलग-अलग करके भी आपके काम आता हूँ। मैं इस पर अभिमान नहीं करता क्योंकि यह तो मेरा काम है। बस आप भी संकल्प लें कि मुझे स्वस्थ रखने के लिए पर्याप्त मात्रा में संतुलित भोजन लेंगे और स्वच्छ जीवनशैली अपनाकर मुझे ज़रूरत के समय दान करेंगे न कि किसी प्रकार की हिंसा में मुझे व्यर्थ बहाएँगे।

अभ्यास

(क) भाषा-बोध

(i) शब्दार्थ

नाड़ी	= शरीर की रक्त वहन करने वाली शिरा
कार्यस्थल	= काम करने का स्थान
जटिल	= कठिन
संरचना	= बनावट
सूक्ष्मदर्शी	= एक यंत्र, जिसमें छोटी चीज का बड़ा आकार दिखाई देता है।
घुसपैठ	= पहुँच
द्रव्य	= तरल पदार्थ
नामुराद	= जिसकी कामना पूर्ण न हुई हो
स्वेच्छा	= अपनी इच्छा से

(ii) इन मुहावरों और लोकोक्तियों के अर्थ समझते हुए वाक्यों में प्रयोग करें :-

चैन की साँस लेना ______ ____________________

प्राण देना ______ ____________________

शहीद होना ______ ____________________

साँस में साँस आना ______ ____________________

हाथ कंगन को आरसी क्या ______ ____________________

(ख) विषय-बोध

(i) इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(क) रक्त के कितने अंग होते हैं? उनके नाम लिखें।

(ख) लाल कोशिकाओं का रंग किस पदार्थ के कारण लाल होता है?

(ग) हीमोग्लोबिन किस-किस तत्व का बना होता है?

(घ) लाल कोशिकाओं का मुख्य कार्य क्या है?

(ङ) लाल कोशिकाओं का विकास कहाँ होता है?

(च) श्वेत कोशिकाएँ क्या कार्य करती हैं?

(छ) प्लेटलेट्स कोशिकाएँ रक्त जमाव में कैसे सहायता करती हैं?

(ज) प्लाज़मा का विकास शरीर के किस अंग में होता है?

(झ) एक वयस्क स्त्री और पुरुष में प्रति किलोग्राम रक्त की कितनी मात्रा होती है?

(ञ) किस आयु वर्ग के व्यक्ति रक्तदान कहाँ-कहाँ पर जाकर कर सकते हैं?

(ii) इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें :-

(क) रक्त के मुख्य अंग कौन-कौन से हैं? प्रत्येक अंग के बारे में लिखें।

(ख) लाल कोशिकाओं के बारे में आपने क्या सीखा?

(ग) श्वेत कोशिकाओं के बारे में आपने क्या सीखा?

(घ) प्लेटलेट्स की क्या भूमिका है?

(ङ) प्लाज़मा के बारे में आपने क्या जाना?

(च) रक्त दान करना क्यों ज़रूरी है?

(ग) व्यावहारिक व्याकरण

(i) इन शब्दों के विपरीत अर्थ वाले शब्द बनायें :-

उपस्थित = ______

उचित = ______

इच्छा = ______

आवश्यकता = ______

नियमित = ______

स्वस्थ = ______

हिंसा = ______

पूर्ति = ______

जन्म = ______

एक = ______

ग्रहण = ______

सामान्य = ______

(ii) इन शब्दों में से मूल शब्द पहचान कर लिखें :-

सम्पूर्ण = ______

संरचना = ______

संकल्प = ______

सुरक्षित = ______

नियमित = ______

विकसित = ______

प्रदर्शित = ______

सुरक्षा = ______

(iii) इन शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखें :-

रक्त = ______

स्वस्थ = ______

नाड़ी = ______

भूमिका = ______

घुसपैठ = ______

(iv) इन रेखांकित विशेषण शब्दों के भेद का नाम लिखें :

(क) मेरा रंग <u>लाल</u> होता है। गुणवाचक विशेषण

(ख) <u>वयस्क</u> पुरुष में मेरी <u>एक</u> बूँद में इनकी संख्या <u>लगभग पचास लाख</u> होती है। ______

(ग) इनके स्थान पर <u>नई</u> कोशिकाएँ जन्म ले लेती हैं। ______

(घ) हमें सदैव <u>संतुलित</u> भोजन लेना चाहिए। ______

(ङ) मेरी <u>श्वेत</u> कोशिकाएँ आपके शरीर में किसी रोगाणु की घुसपैठ के समय किसी बहादुर सिपाही की तरह बचाव के लिए आती हैं। ______

अतिरिक्त ज्ञान

(क) अपने रक्त समूह (ब्लड ग्रुप) की जाँच करवायें। अपना रक्त समूह नोट करके रखें।

(ख) रक्त समूह आठ प्रकार के होते हैं ए-पाज़िटिव, ए-नेगेटिव, बी-पाज़िटिव, बी-नेगेटिव, ए-बी पाज़िटिव, ए-बी नेगेटिव, ओ-पाज़िटिव, ओ-नेगेटिव ।

(ग) मान्यता प्राप्त संस्था को ही रक्त दान करें।

(घ) रक्त बेचना दण्डनीय अपराध है।

पाठ-4

कश्मीर यात्रा

कोठी नं : 158, शिव विहार,
जालन्धर - 144003
दिनांक 30 जून, 2012
प्रिय सखी गुंजन,
सप्रेम नमस्कार!

मैं इस बार ग्रीष्मावकाश में तुम्हारे पास न आ सकी क्योंकि पहले तो मैं छुट्टियों का काम पूरा करने में लगी रही। फिर अचानक हमारा कश्मीर जाने का कार्यक्रम बन गया। कल दोपहर को ही वापिस आए हैं और आते ही मैंने तुम्हें वहाँ की फोटो ई-मेल कर दीं। फिर भी गुंजन, मैंने सोचा क्यों न तुम्हें पत्र लिखूँ जिससे मेरी यादें ताजा हो जायेंगी और तुम्हें भी कश्मीर के प्राकृतिक सौन्दर्य की अनुभूति हो जाएगी।

सखी! कश्मीर ग्रेट हिमालयन रेंज एवं पीर पंजाल पर्वत शृंखला के मध्य स्थित खूबसूरत पर्वतीय प्रदेश है। अन्य पर्वतीय स्थलों की तुलना में यह कुछ अलग है। क्योंकि यहाँ के घर, बाज़ार पहाड़ी ढलान पर नहीं बसे हैं बल्कि एक विशाल घाटी के मध्य स्थित होने के कारण यह मैदानी शहरों जैसा ही लगता है।

गर्मियों में यहाँ चारों ओर हरियाली का आँचल फैला हुआ दिखता है और मौसम बहुत सुहावना होता है। सर्दियों में यहाँ हर तरफ बर्फ की चादर बिछी होती है। पतझड़ आरम्भ होते ही ज़र्द चिनार का सुनहरा सौन्दर्य मन-मोहित करने लगता है। इसकी शोभा का आनन्द लेने देश-विदेश से अनेक पर्यटक आते हैं। पर्यटन ही कश्मीरी लोगों की आजीविका का मुख्य साधन है।

जानती हो सखी! भारत में कश्मीर ही एक ऐसा राज्य है, जिसकी दो राजधानियाँ हैं : गर्मियों में श्रीनगर और सर्दियों में जम्मू।

कश्मीर को झीलों व बागों का प्रदेश भी कहा जाता है। क्योंकि यहाँ डल, वूलर, नगीना आदि कई सुंदर-मनमोहक झीलें हैं जिनमें खिले हुए कमल के फूल खूबसूरती को चार चाँद लगा देते हैं। डल झील पर तो सुबह से लेकर शाम तक रौनक ही रौनक होती है। हम वहीं पर फूलों से सजी हाऊसबोट में ठहरे थे जोकि किसी छोटे होटल के समान थी। इसमें घर की तरह ही रसोई, खाने, बैठने, सोने के कमरे अलग-अलग थे। यह घर की तरह ही आरामदेह था।

दिन और रात हर पहर इस झील की खूबसूरती का अलग ही नज़ारा होता है। सूर्योदय एवं सूर्यास्त के समय आकाश का नारंगी रंग मानो झील को ही अपने रंग में रंग लेता है। इस सुरम्य वातावरण में शिकारे में नौका-विहार करते हुए हम प्रकृति के इस अद्‌भुत सौन्दर्य का आनन्द लेते रहे। डल झील की इस खूबसूरती के प्रत्येक दृश्य को हमने अपने कैमरे में कैद कर लिया। रात के समय हाउसबोटों में जलने वाली बत्तियों के प्रतिबिम्ब दीपमालिका की तरह झिलमिलाते हुए झील के सौन्दर्य को दुगुना कर रहे थे। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो आकाश तारों की शोभा लिये पानी में उतर आया हो। झील के मध्य एक छोटे-से टापू पर नेहरू पार्क है। वहाँ से झील का दृश्य दूर सड़क के पास लगे सरपत के ऊँचे झाड़ों की कतार तथा उनसे आगे चलता हुआ ऊँचा फव्वारा बड़ा मनोहारी लगता है।

यहाँ के लोगों को डोगरी कहा जाता है, इनकी भाषा कश्मीरी है। इनकी मेहमान नवाज़ी का तो कोई जवाब ही नहीं। रात के खाने में उनके मशहूर व्यञ्जनों में चमनी कलिया, वेथ चमन, दम ओलुव, राजमा, गोआग्जी आदि स्वादिष्ट व्यञ्जन परोसे गए। मिठाई के तौर पर फिरनी परोसी गई।

मुगल उद्‌यानों को बिना देखे भला हमारी यात्रा पूरी कैसे हो सकती थी इसलिए अगले दिन सुबह हम डल झील के किनारे निशात बाग, जिसे बागों की रानी कहते हैं, देखने गए। फिर यहाँ से लगभग दस किलोमीटर दूर शालीमार बाग देखा जिसे बागों का राजा कहा जाता है। वास्तव में ये सभी बाग शाही आरामगाह के उत्कृष्ट नमूने हैं जो मुगल बादशाहों द्‌वारा बनवाए गए थे। इन सीढ़ीनुमा बागों में किसी भी तरफ नज़र दौड़ाओ हर तरफ रंग-बिरंगे खिले फूल, मखमली घास, आड़ू, बादाम, चैरी, खुमानी, सेब आदि फलों से लदे बागान झूलते हुए नजर आते हैं। चिनार, देवदार व चील के लम्बे-लम्बे वृक्षों के समूह के बीचोंबीच से झाँकता सूर्य, झर-झर झरनों से बहता पानी सब सैलानियों को मंत्रमुग्ध करता है।

कश्मीर की सारी घाटी केसर की क्यारियों से महकती है इसलिए ही तो कश्मीर को 'केसर की क्यारी' भी कहा जाता है। गुंजन, क्या तुम्हें पता है कि विश्व का सबसे ऊँचा गोल्फकोर्स यहीं है। सर्दियों में जब यहाँ बर्फ की मोटी चादर बिछी होती है, तब यह जगह हिमक्रीड़ा और स्कीइंग शौकीन लोगों के लिए तो स्वर्ग बन जाती है। हम स्कीइंग का आनन्द तो नहीं ले पाए, किन्तु यहाँ चलने वाली गंडोला केबलकार द्‌वारा हमने बर्फीली ऊँचाइयों को छुआ जोकि बहुत ही

रोमांचकारी लगा। इतने में शाम हो गयी हम काफी थक चुके थे। इस तरह हम वापिस अपने शिकारे में लौट आए। यहाँ कड़ाके की सर्दी के कारण हमने यहाँ का मशहूर कह्‌वा (गर्म पेय) पीया और सो गये।

अगले दिन कश्मीर की मशहूर वस्तुएँ लेने के लिए हम वहाँ के सरकारी एम्पोरियम, हस्तकला प्रदर्शनी एवं लाल चौंक शॉपिंग केन्द्र गए। वहाँ हमने पशमीना, अंगोरा, जामावर शॉल, कश्मीरी कढ़ाई वाले फिरन, गलीचे, केसर, सन्तूर, सूखे-मेवे, हस्त शिल्प, पेपरमेशी के शो-पीस, चमड़े की वस्तुएँ इत्यादि देखीं जिनका यहाँ से निर्यात विदेशों तक होता है। माता जी ने पश्मीना का शॉल, मैंने कश्मीरी कढ़ाई का फिरन, पिता जी ने चमड़े का पर्स और सुलभ ने चमड़े की बैल्ट खरीदी।

मैं तुम्हारे लिए कह्‌वा लाई हूँ। एक और विशेष बात बताऊँ? यहाँ अधिक जाड़े से बचने के लिए लोग एक विशेष प्रकार की अंगीठी अपने साथ उठाए रखते हैं। जिसे 'काँगड़ी' कहते हैं। मैं काँगड़ी भी खरीदकर लाई हूँ। तुम जब आओगी तब दिखाऊँगी। ये सब खरीदते-खरीदते जहाँ एक ओर लम्बा कद, गोरी त्वचा, नीली भूरी आँखों वाले, पठानी सूट पहने फुर्तीले युवक सबको अपनी ओर आकर्षित कर रहे थे तो दूसरी तरफ कुर्ते के ऊपर कश्मीरी कढ़ाई वाले पोंचू या फिरन पहने गोरी त्वचा, लाल गालों, सुन्दर नयन नक्शों वाली, गहनों से सजी युवतियाँ भी सुन्दरता एवं आकर्षण का केन्द्र थीं। प्रदर्शनी के बाहर कश्मीरी लोकगीत :-

भूमरो -भूमरो शाम रंग भूमरो,
आए हो किस बगिया से हो-हो----

की ताल पर नाचती युवतियों का मनमोहक नृत्य अब भी मेरी आँखों के सामने घूम रहा है और मधुर आवाज़ कानों में गूँज रही है।

कश्मीर घाटी की सुन्दरता का वर्णन कहाँ तक करूँ? इसने तो हम सबका मन ही मोह लिया। वहाँ की प्राकृतिक छटा की फिल्म व चित्र मैंने अपनी सी.डी. में डालकर रख लिये हैं।

ताकि मेरी यादें अगर कहीं धूमिल होने लगें तो मैं उन्हें ताज़ा कर सकूँ। तुम्हें भी ई-मेल द्‌वारा भेज दिए हैं ताकि तुम इन्हें देखकर और मेरा पत्र पढ़कर 'धरती के स्वर्ग' की यात्रा करने को लालायित हो जाओ।

आँटी-अंकल जी को मेरा नमस्कार।
दिव्या, उदय को प्यार।
तुम्हारी सखी,
खुशबू

अभ्यास

(क) भाषा-बोध

(i) शब्दार्थ

ग्रीष्मावकाश	= गर्मियों की छुट्टियाँ	अचानक	= एकाएक
पर्वतीय	= पहाड़ी क्षेत्र	पर्यटन स्थल	= वह स्थान जहाँ यात्री घूमने आते हैं
आजीविका	= रोजगार	पर्यटक	= सैलानी
रौनक	= गहमागहमी, चहलकदमी	प्रतिबिम्ब	= परछाई
सूर्योदय	= सूर्य का चढ़ना	मनोहारी	= मन को हरने वाला
सूर्यास्त	= सूर्य का डूबना	व्यञ्जन	= खाद्य-पदार्थ
सीढ़ीनुमा	= सीढ़ी-जैसा	हिम-क्रीड़ा	= बर्फ पर खेलना
निर्यात	= बाहर भेजना	रोमांचकारी	= आनन्ददायक
उत्कृष्ट	= सबसे अच्छा	धूमिल	= ओझल

(ii) शुद्ध करें

श्रृंखला	_____	स्थित	_____	यातरा	_____
सूरयास्त	_____	हिमकरीड़ा	_____	पराकरितिक	_____

(ख) विषय-बोध

(i) इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(क) कश्मीर अन्य पर्वतीय प्रदेशों से किस प्रकार अलग है?
(ख) कश्मीर लोगों की आजीविका का मुख्य साधन क्या है?
(ग) कश्मीर की सर्दी और गरमी की राजधानी के नाम लिखें।
(घ) कश्मीर में कौन-कौन सी झीलें है?
(ङ) कश्मीर के लोगों को क्या कहते है?
(च) कश्मीर के कौन-कौन से बाग देखने योग्य है?
(छ) कश्मीर की प्रसिद्ध वस्तुएँ कौन-कौन सी है?
(ज) कश्मीर के लोग अपने आपको ठंड से कैसे बचाते है?

(ii) इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें :-

(क) डल झील के सौन्दर्य का वर्णन करें।
(ख) मुगल बागों की क्या विशेषता है?
(ग) हाउस बोट के बारे में आपने क्या जाना?

(ग) व्यावहारिक व्याकरण

(i) इन मुहावरों के अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग करें :-

चार चाँद लगाना	________	________
मन मोहित करना	________	________
अपने रंग में रंग लेना	________	________

मनोहारी लगना	________	________
मंत्र मुग्ध करना	________	________
मन मोह लेना	________	________

(ii) **वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखें :-**

1. सूर्य का उदय होना = ________
2. सूर्य का अस्त होना = ________
3. गर्मियों की छुट्टियाँ = ________
4. जहाँ तरह-तरह की वस्तुएँ प्रदर्शित की जायें = ________
5. आराम करने का स्थान = ________
6. मनमोहने वाला = ________

(iii) **विपरीतार्थक शब्द लिखें :-**

दिन	= ________	सुबह	= ________
देश	= ________	सूर्योदय	= ________
विशाल	= ________	निर्यात	= ________
सर्दी	= ________	सरकारी	= ________

(iv) **इन शब्दों में से विशेषण और विशेष्य अलग करके लिखें :-**

		विशेषण	विशेष्य
पर्वतीय प्रदेश	=	पर्वतीय	प्रदेश
पहाड़ी ढलान	=	-------	-------
विशाल घाटी	=	-------	-------
मैदानी शहर	=	-------	-------
मनमोहक झील	=	-------	-------
सुरम्य वातावरण	=	-------	-------
अद्‌भुत सौन्दर्य	=	-------	-------
शाकाहारी व्यंजन	=	-------	-------
मुगल उद्‌यान	=	-------	-------
सीढ़ीनुमा बाग	=	-------	-------
मखमली घास	=	-------	-------

(v) **इन शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखें :-**

बाग = ________, ________

पहाड़ = ________, ________

आजीविका = ________, ________

पर्यटक = ________, ________

आकाश = ________, ________

तारा = ________, ________

प्रसिद्ध = ________, ________

(घ) रचना बोध

- इस पत्र को पढ़कर कश्मीर के बारे में दस पंक्तियाँ लिखें।
- भ्रमण से जहाँ हमारा ज्ञान बढ़ता है वहीं हमें स्थानीय लोगों की संस्कृति, वेशभूषा, रीति-रिवाज़, खान पान आदि समझने का भी अवसर प्राप्त होता है। यदि आपने किसी अन्य प्रदेश की यात्रा की हो तो अपने अनुभव डायरी में नोट करें।
- कश्मीर के लोक गीत याद करें और वार्षिक उत्सव या किसी अन्य अवसर भाव-भंगिमा के साथ गायें।
- छुट्टियों में आप अन्य कौन-कौन से काम सीख सकते हैं, उनकी सूची बनायें। जैसे :-
  - नृत्य सीखना
  - चटनी, जैम आदि बनाना सीखना
  - - - - - - - - - - - - - - - -

पाठ-5

पेड़

झूम झूम कर पेड़ कह रहे,
यह लो ताज़ा स्वच्छ हवा।
धूल धुएँ से दूषित जग के,
रोगों की है यही दवा।

हरियाली-आशीष बाँटते,
भरते जीवन की झोली।
वर्षा लाते, अन्न उगाते,
बरसाते ममता भोली।

विश्रामस्थल ये पथिकों के,
कड़ी धूप में दें छाया।
पत्थर फेंक रहे हाथों ने,
भी इनसे मधु फल पाया।

जीव-जन्तुओं को कोटर दें,
पक्षी को देते हैं नीड़।
पर्यावरण मनोरम करते,
प्राणी का दुख इनकी पीड़।

पीपल बरगद युगों-युगों से,
अपने बनते रहे हकीम।
सारी नज़रें टिकी उसी पर,
बना चिकित्सक अपना नीम।

सोने के अण्डे देती
मुर्गी पर तने, कुल्हाड़े अब।
थोड़ा लाभ प्राप्त करने हित,
लोलुप नज़रें गाड़े अब।

वन-सम्पदा धरोहर अपनी,
प्राणी मात्र की रक्षक है।
इसका नाश करेगा जो भी,
मानवता का भक्षक है।

रंग-बिरंगे गन्ध भरे,
फूलों की भाषा में स्वागत।
पाना है तो पेड़ उगाओ,
ये विभूतियाँ बिन लागत।

अभ्यास

(क) भाषा बोध

शब्दार्थ

स्वच्छ	= साफ़	आशीष	= आशीर्वाद
विश्रामस्थल	= आराम करने का स्थान	पथिक	= राही
कोटर	= पेड़ का खोखला भाग जिसमें जीव-जन्तु रहते हैं।		
नीड़	= घोंसला	पर्यावरण	= वायु-मण्डल, वातावरण
बरगद	= बड़ का पेड़	चिकित्सक	= डाक्टर
वन-सम्पदा	= जंगल रूपी सम्पत्ति	भक्षक	= खाने वाला
लोलुप	= लालची	धरोहर	= विरासत
विभूतियाँ	= बहुमूल्य सम्पत्तियाँ		

(ख) विषय बोध

(i) इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(क) धूल और धुँए से दूषित वातावरण में पैदा होने वाले रोगों की कौन-सी सर्वोत्तम दवा है?
(ख) पेड़ किस तरह अपनी ममता बरसाते हैं?
(ग) शरारती बच्चे पेड़ों से किस तरह फल प्राप्त करते हैं?
(घ) पक्षी और जीव जन्तु पेड़ पर कहाँ-कहाँ घर बना कर रहते हैं?
(ङ) नीम के पेड़ को चिकित्सक क्यों कहा गया है?
(च) पेड़ों को सोने के अण्डे देने वाली मुर्गी क्यों कहा गया है?
(छ) फल देने वाले पाँच पेड़ों के नाम लिखें।

(ii) इन प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में लिखें :-

(अ) प्रस्तुत कविता 'पेड़' का सारांश अपने शब्दों में लिखें।

(आ) पेड़ों को उगाना और उनकी रक्षा करना मनुष्य के लिए क्यों आवश्यक है?

(ग) व्यावहारिक व्याकरण

(i) इन काव्य-पंक्तियों में से क्रिया-शब्द छाँटिये :-

हरियाली-आशीष बाँटते,
भरते जीवन की झोली।
वर्षा लाते अन्न उगाते,
बरसाते ममता भोली।

(ii) इन शब्दों के समानार्थक शब्द लिखें :-

पेड़ = _______ मानव = _______ हवा = _______
फूल = _______ नज़र = _______ पक्षी = _______
हाथ = _______ नीड़ = _______

(iii) विपरीतार्थक शब्द लिखें :-

रक्षक = _______ थोड़ा = _______ रोग = _______
लाभ = _______ धूप = _______ ताज़ा = _______
दु:ख = _______ जीवन = _______

(iv) शुद्ध करके लिखें :-

विशमराम = _______ चीकित्सक = _______ कुलहाड़ा = _______
विभूती = _______ लोलूप = _______ सम्पधा = _______
भाशा = _______

(v) निम्नलिखित समासों का विग्रह करें तथा समास का नाम बतायें :-

विश्राम स्थल = _______ जीव-जन्तु = _______
वन सम्पदा = _______ पीपल-बरगद = _______

(vi) निम्नलिखित शब्दों की संधि विच्छेद करें :-

स्वच्छ = _______ पर्यावरण = _______
मनोरम = _______ स्वागत = _______
वर्षर्तु = _______

(घ) रचना भाग

(i) 'पेड़ों का हमारे जीवन में महत्व' विषय पर लगभग 150 शब्दों में निबन्ध लिखें।

(ii) अपने मित्र को पत्र लिख कर अपने स्कूल में होने वाले 'वन महोत्सव' का वर्णन करें।

(iii) एक-एक पौधा लगायें और उसकी देखभाल करें।

पाठ-6

मुँह बोले बेटे

दो बसों की टक्कर हो गई थी। एक पहाड़ से नीचे आ रही थी और दूसरी मैदानी क्षेत्र से पहाड़ पर जा रही थी। शिमला वहाँ से कुल पाँच मील की दूरी पर था। दुर्घटना-स्थल के सामने बुत-सा खड़ा मील पत्थर यही बता रहा था। उसके ऊपर हिंदी में और नीचे अंग्रेज़ी में यही लिखा हुआ था।

लोग दंग थे कि चण्डीगढ़ से सैकड़ों मोड़ फुर्ती से काटने वाला चौकस ड्राइवर यहाँ खुली सड़क पर कैसे धोखा खा गया। शिमला की ओर से आने वाली बस के बोझ और ज़ोर के धक्के के कारण चंडीगढ़ वाली बस का अगला भाग झुक कर ड्राइवर की कुर्सी को छूने लगा था। खून से लथपथ बाजू लिए, अपनी सीट में फँसा बेचारा ड्राइवर कराह रहा था। उसके पीछे की चार-पाँच सीटें भी चपेट में आ गई थीं।

डॉ. सोहन लाल खन्ना नौवीं सीट पर बैठे थे। सुबह पाँच बजे चंडीगढ़ से शिमला के लिए चले थे। नींद का झोंका आया और उनकी आँख लग गई। बसों के टकराव के समय उन्हें अपनी होश न थी। निचले होंठ और ठोड़ी के बीच का भाग अगली सीट के ऊपर लगी लोहे की सलाख से टकरा गया। नींद टूटी तो दस-बीस सैकिंड तक खन्ना साहब यह न समझ पाए कि वे सपना देख रहे थे या सचमुच कोई दुर्घटना हुई है?

जैसे ही उनकी आँख खुली तो देखा कि टप-टप करके खून की चार-छ: बूँदें उनके सफेद स्वैटर पर लाल चकत्ते बना चुकी हैं। उन्हें हलकी-सी टीस भी थी। वे ड्राइवर की सीट के ऊपर लगे दर्पण में देखना चाहते थे कि उन्हें चोट कितनी गहरी आई है? उन्होंने ऊपर झाँका, शीशा चूर-चूर हो चुका था। काँच के कुछ टुकड़े छिटक कर ड्राइवर को लहूलुहान कर चुके थे।

सभी सवारियों को अपनी जान के लाले पड़े हुए थे। हड़बड़ाहट में प्रत्येक व्यक्ति अपना सामान लेकर बस से खिसकने को उतावला था। सभी सवारियाँ बसों के टकराते ही अपना-अपना सामान लेकर नीचे उतरने लगी थीं। डॉ. खन्ना वाली तीन व्यक्तियों की सीट बस के आगे वाले दरवाज़े के ठीक सामने थी। दो सवारियाँ उनके आगे बैठी हुई थीं। वे स्वयं खिड़की से सटी सीट पर बैठे थे। प्रत्येक यात्री को टूटी-फूटी बस से उतरने की जल्दबाजी थी। अगले और पिछले दोनों दरवाज़ों पर भीड़ जमा थी। पचास-बावन, सवारियों के उतरने में कुछ-न-कुछ समय तो लगता ही है।

डॉ. सोहन लाल खन्ना लगभग पाँच मिनट तक अपनी बारी का इंतज़ार करते रहे और कटे हुए घाव से बहते हुए रक्त को अपने रूमाल से सोखते रहे। वह सबसे बाद में बस से नीचे उतर पाए। बैग को कंधे पर लटका कर और बाएँ हाथ में अटैची थाम कर वे दाएँ हाथ से घाव का खून पोंछते हुए बड़ी कठिनाई से सड़क पर आए। इसी बीच उनका रूमाल खून से तर-बतर हो चुका था।

मार्च का महीना था। मैदानी इलाके के साठ वर्ष के आदमी को कहीं ठंड न खा जाए, इसी कारण डॉ. खन्ना पूरे साजो-सामान से लैस थे। जैसे ही वे बस से नीचे उतरे तभी दो युवक उनकी ओर लपके। एक ने खन्ना साहब की भारी अटैची थाम ली और दूसरे ने उनका बैग। बेसहारा बुजुर्ग को कुछ ढाढस बँधा।

पुलिस वालों ने भी तुरंत चौकसी बरती। एक सिपाही ने अपने वायरलैस से अस्पताल को दुर्घटना की सूचना दी। देखते ही देखते एक एम्बुलेंस गाड़ी आई। वह दोनों बसों के घायल ड्राइवरों के साथ उन यात्रियों को भी ले गई, जिन्हें गहरी चोटें आई थीं। कुल छः व्यक्ति ही एम्बुलेंस में ले जाए जा सके। जिनमें से एक महिला भी थी।

दस-बारह मिनट तक पुलिस वाले नीचे से आने वाली कारों और वैनों को सीटी बजाकर या हाथ से इशारा करके रोकते रहे। किन्तु हर एक गाड़ी में पूरी सवारियाँ थीं, वाहन चालक किसी भी अतिरिक्त सवारी को अपनी गाड़ी में स्थान देने में असमर्थ दिखाई पड़ते। दाहिनी ओर वाले मील पत्थर के पास लगे कंकरीट के ऊँचे ढेर और टकराने वाली बसों के पास से बड़ी धीमी गति से अपना वाहन निकाल कर ऊपर और नीचे जाने वाले ड्राइवर चुपचाप निकल जाते। सड़क पर जमा कुछेक लोग कह रहे थे कि कंकरीट के इसी ढेर ने ही आज सब बंटाधार किया है। मूर्ख ठेकेदार ने सड़क की मरम्मत के बाद अपना बचा हुआ सामान क्यों नहीं उठवाया? प्रश्न का उत्तर कौन देता? अब तो सभी को अपनी जान की पड़ी थी और डॉ. सोहन लाल खन्ना को साथ ही अपने भारी सामान की।

दोनों युवकों को शायद अपने घर पहुँचने की जल्दी थी। साथ ही वयोवृद्ध सोहन लाल को ठीक-ठिकाने पहुँचाने की। उनमें से एक ने बड़ी मधुर आवाज़ में कहा - "अंकल! चलो हम कुछ ऊपर चलकर दूसरी सड़क से आने वाली कोई खाली गाड़ी देखते हैं?"

"पहाड़ी साहित्य गोष्ठी" स्थल पर शीघ्र पहुँचने की इच्छा होने पर भी खन्ना साहब के मन में यह डर बैठा हुआ था कि कहीं ये दोनों युवक झाँसा देकर उनका सामान लेकर किसी पहाड़ी पगडंडी से चंपत ही न हो जाएँ। यहाँ तो पुलिस के सिपाही भी हैं और कुछ भाग्यशाली यात्री भी, जो कि दुर्घटना की चपेट से बचे हुए हैं।

तीन-चार बार युवकों के अनुरोध पर और अपने घाव में बढ़ती हुई टीस को महसूस करके डॉ. खन्ना ने अनमने भाव से पहाड़ी सड़क पर चढ़ने का इरादा बना ही लिया। पहले से हाथ में थामे सामान को उठाकर दोनों लड़के आगे-आगे चलने लगे और खन्ना साहब मुँह लटकाए तथा अपने जख्म को रूमाल से सहलाते हुए उनके पीछे डग भरने लगे।

लगभग एक किलोमीटर चढ़ाई चढ़ने पर एक मोड़ पर तिराहा आया और वे दोनों युवक वहीं रुक गए। कुछ लोग पैदल आ-जा भी रहे थे। सुनसान न था, यह देखकर डॉ. खन्ना की जान में जान आई। सौभाग्यवश बाईं ओर से एक खाली वैन आती हुई दिखाई पड़ी। ड्राइवर सिक्ख नौजवान था। दोनों लड़कों के हाथ का इशारा देखकर उसने अपना वाहन रोक दिया। उनमें से एक ने उसे डॉ. सोहन लाल खन्ना की चोट के बारे में बताया। सरदार साहब ने उत्तर दिया कि वह जल्दी में है, इसलिए उन्हें अस्पताल तक तो नहीं पहुँचा सकेगा; फिर भी सरकारी अस्पताल के समीप

वाले बाज़ार तक ज़रूर पहुँचा देगा। लड़कों के लिए इतना ही पर्याप्त था। उन्होंने सामान रखने से पहले खन्ना साहब को गाड़ी में बैठा दिया। शक का काँटा तब तक डॉक्टर साहब के मन में धँसा रहा जब तक वे दोनों युवक सामान समेत वैन में सवार न हो गए।

पहाड़ी सड़क पर कई चक्कर काटती हुई वैन दस-बारह मिनट में एक चौड़ी सड़क पर जा रुकी। बाज़ार में काफी भीड़ थी। दोपहर का समय था। कुछ चढ़ाई पर ही अस्पताल में पहुँचा जा सकता था। तीनों ने सरदार साहब का धन्यवाद किया। वे दोनों नौजवान अपने मैदानी मेहमान का सामान उठाकर बाज़ार के पीछे वाली एक संकरी गली में घुस गए। शायद वही अस्पताल तक पहुँचने का छोटा रास्ता था। नए रास्ते पर चलते हुए एक युवक ने कहा -"अंकल! हौसला रखो, बस दो मिनट में अस्पताल पहुँचे। बस, हमारे पीछे-पीछे चले आओ!"

अर्द्ध शंकित डॉक्टर साहब उन दोनों के पीछे कदम बढ़ाते गए। उनकी शंका एकदम छू-मंतर हो गई, जबकि वे सचमुच सरकारी अस्पताल के सामने जा पहुँचे। रविवार का दिन था। अस्पताल छोटा-सा था। शायद एमरजेंसी ड्यूटी निभाने के लिए एक डॉक्टर और कंपाऊँडर वहाँ पर थे और कोई मरीज़ वहाँ पर न था। लड़कों ने खन्ना साहब की चोट का पूरा विवरण डॉक्टर को बताया। सरकारी डॉक्टर ने बड़े कोमल स्वर में कहा - "आप स्ट्रेचर पर लेटिए।" जितनी देर में उसने पर्ची लिखकर एक नौजवान को बाज़ार से इंजेक्शन खरीद लाने के लिए थमाई, उतनी देर में कंपाऊँडर ने डॉ. खन्ना की चोट पर खून रोकने वाली दवाई का फाहा रख दिया।

डॉ. सोहन लाल खन्ना को कुछ तो यात्रा की थकावट थी और कुछ चोट के कारण घबराहट थी। अतः स्ट्रेचर पर लेटते ही उन्हें काफी आराम मिला। उसी कमरे में लगे नल से दूसरे युवक ने पानी का गिलास भर कर खन्ना साहब को थमा दिया। चार तकियों के सहारे उन्हें बैठा दिया गया। वे घूँट-घूँट करके जल पीने लगे, क्योंकि चोट पर लगाई दवाई खिसकने के भय से वे गिलास को एकदम खाली नहीं कर पा रहे थे। अभी उन्होंने आधा गिलास पानी ही पिया था कि नौजवान दवाइयों वाली दुकान से टीका खरीद लाया। डॉक्टर ने खन्ना साहब को इंजेक्शन लगाया और घाव पर टाँके लगाने के बाद कोई दवा छिड़की और पट्टी बाँध दी। आयुर्वैदिक औषधियों पर ही बचपन से विश्वास करने वाले डॉ. सोहन लाल खन्ना का पहली बार "इंजेक्शन" से पाला पड़ा था। टेटनस के टीके की सूई देखते ही वे घबरा गए थे।

दस मिनट बाद सूई लगाने वाले डॉक्टर ने पूछा "कहिए दादा! कैसा लग रहा है?" खन्ना साहब ने दोनों ओर निगाह दौड़ाई। दोनों युवक दाएँ-बाएँ खड़े थे और डॉक्टर के पास वाली कुर्सी पर उनका सामान सुरक्षित था। उन्होंने बड़े स्वस्थ मन से कहा - "हाँ ! अब ठीक हूँ।"

"पहाड़ी साहित्य गोष्ठी" के आरंभ होने का समय दस बजे था। खन्ना साहब ने देखा, उनकी घड़ी में एक बज रहा था। इसी चिन्ता में वे अपना दर्द भूल गए और ठोड़ी से सिर तक बँधी पट्टी को सहलाते हुए बोले - " डॉक्टर साहब! आपका भी धन्यवाद और इन दोनों बेटों का भी।"

कुछ ही क्षणों के बाद स्ट्रेचर से उतर कर चप्पल पहनते हुए वे लड़कों की ओर उन्मुख होकर कहने लगे - "बेटा! तुम बताओ कि इंजेक्शन कितने का आया। अपने पैसे लो और मुझे एक कुली करवा दो, जो कि मुझे पंचायत भवन तक पहुँचा दे।"

एक युवक ने हँसते हुए कहा -"हम ही आपको 'पंचायत भवन' पहुँचाएँगे।" ....

दूसरे ने ये शब्द जोड़ दिए - "वहीं आपसे इंजेक्शन के पैसे, डॉक्टर साहब की फ़ीस और सामान ढुलाई का भाड़ा लेंगे।"

सरकारी अस्पताल का डॉक्टर और कंपाऊँडर भी इस चुहलबाज़ी में ठहाका लगा कर हँसने लगे। पट्टी में जकड़े खन्ना साहब के मुख पर भी हल्की-सी मुस्कान झलक आई।

अगल-बगल दोनों लड़के डॉ. सोहन लाल खन्ना का हाथ थामे और उनका सामान दूसरे हाथ में पकड़े हुए शिमला के अस्पताल से पंचायत भवन की ओर बढ़ने लगे। मुँह खोलने में कष्ट होने पर भी शिष्टाचार के नाते उन्होंने पूछ ही लिया - "बेटा! तुम क्या काम करते हो?"

दोनों ने बारी-बारी उत्तर दिया - "हम बी.ए. पास हैं। नौकरी की तलाश में हैं।"

इससे अधिक डॉक्टर साहब कुछ पूछ न पाए। चोट के प्रभाव के कारण उन्हें थोड़ा कष्ट भी था और पहाड़ी चढ़ाई के कारण उनका साँस भी फूल रही थी। कुछ ही मिनटों में खन्ना साहब 'पंचायत भवन' के परिसर में थे। गोष्ठी स्थल से माइक की आवाज़ सुनकर डॉ. सोहन लाल खन्ना आश्वस्त हो गए थे कि वे अपने गंतव्य स्थल पर पहुँच गए हैं। उन्होंने अपने बटुए से पचास रुपए का नोट निकाला और लड़कों की ओर बढ़ाते हुए कहा - 'बेटा यह लो मेरी दवाई के पैसे। अपने घर का पता और अपने नाम बता दो, शायद मैं तुम्हारे काम आ सकूँ।'

दोनों एक साथ बोले - "अंकल! इन दो घंटों में आपने हमें चार बार बेटा कहा है। आप हमें यही मानिए। पैसे देकर हमारी इंसानियत को धब्बा न लगाइए।" ये शब्द कहकर उन्होंने डॉक्टर साहब के चरण छूकर विदा होने के लिए आज्ञा माँगी।

डॉ. सोहन लाल खन्ना निरुत्तर होकर गोष्ठी वाले विद्वानों में जा बैठे। उनके मन में बार-बार मुँह बोले बेटों के कारनामे लौट-फिर कर जादू की लालटेन के 'नन्हे फरिश्तों' के अभिनय की भाँति स्मरण हो आते थे।

अभ्यास

(क) भाषा बोध

(i) शब्दार्थ

दुर्घटना = दुर् + घटना = बुरी घटना
निरुत्तर = निर् + उत्तर = उत्तर न देना
चौकस = सतर्क
फुर्ती = तेज़ी
लथपथ = भरा हुआ
दर्पण = शीशा
इशारा = संकेत
तिराहा = तीन रास्तों का समूह
असमर्थ = शक्ति से बाहर
गति = चाल
शीघ्र = जल्दी
अनुरोध = प्रार्थना
समीप = पास
पर्याप्त = काफी
दंग = हैरान
प्रभाव = असर

(ii) इन शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयुक्त करें :

दुर्घटना ____________________

निरुत्तर ____________________

चौकस ____________________

लथपथ ____________________

प्रभाव ____________________

दंग ____________________

(iii) मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग करें :-

झाँसा देना ____________________

जान में जान आना ____________________

धोखा खाना ____________________

आँख लगना ____________________

लहूलुहान होना ____________________

जान के लाले पड़ना ____________________

ढाँड़स बँधाना ____________________

साँस फूलना ____________________

दंग रह जाना ____________________

चपेट में आ जाना ____________________

चौकसी बरतना ____________________

बंटाधार हो जाना ____________________

(ख) विषय बोध

(i) रिक्त स्थानों की पूर्ति करें :-

(क) दो बसों की .... हो गई थी।

(ख) मार्च का .... था।

(ग) नौजवान .... वाली दुकान से .... खरीद लाया।

(घ) हम .... पास हैं।

(ङ) नौकरी की .... में हैं।

(ii) इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(क) घटना स्थल से शिमला कितनी दूर था?

(ख) सोहन लाल खन्ना चंडीगढ़ से कहाँ जा रहे थे?

(ग) डॉ. सोहन लाल खन्ना बस से उतरने के लिए कितनी देर इन्तज़ार करते रहे?

(घ) जब दुर्घटना घटित हुई तब कौन-सा महीना था?

(ङ) कितने युवक डॉ. खन्ना की ओर लपके?

(iii) इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें :-

(क) दुर्घटना होने के बाद जब डॉ. खन्ना की आँख खुली तो उन्होंने क्या अनुभव किया?

(ख) दोनों लड़कों ने डॉ. खन्ना की किस प्रकार सहायता की?

(ग) 'मुँह बोले बेटे' कहानी का उद्देश्य स्पष्ट करें।

(ग) व्यावहारिक व्याकरण

(i) कारक ढूँढ़ कर नाम बताएँ :-

1. दो बसों की टक्कर हो गई। ________
2. चंडीगढ़ से शिमला के लिए चले थे। ________
3. बाज़ार में काफी भीड़ थी। ________
4. लड़कों ने डॉ. खन्ना की बहुत सेवा की। ________
5. दोनों लड़के डॉ. खन्ना के मुँह बोले बेटे बन गए। ________
6. डॉ. खन्ना ने अपनी आप बीती सुनाई।. ________
7. स्ट्रेचर से उतर कर चप्पल पहनी। ________
8. हे भगवान! रक्षा करो। ________
9. लड़कों को पैसे दिए। ________
10. दर्पण में देखना चाहते थे। ________

(ii) इन वाक्यों में सकर्मक क्रिया पर गोला लगायें तथा अकर्मक क्रिया को रेखांकित करें :-

1. दो बसों की टक्कर हो गई थी।
2. नींद का झोंका आया।
3. वे खिड़की से सटी सीट पर बैठे थे।
4. दोनों एक साथ बोले।
5. खन्ना साहब ने दोनों ओर निगाह दौड़ाई।
6. दोपहर का समय था।
7. उसने अपना वाहन रोक दिया।
8. मार्च का महीना था।

(iii) विराम चिह्न लगायें :-

- एक युवक ने हँसते हुए कहा हम ही आपको पंचायत भवन पहुँचाएँगे
- बस हमारे पीछे पीछे चले आओ
- मुँह खोलने में कष्ट होने पर भी शिष्टाचार के नाते उन्होंने पूछ ही लिया बेटा तुम क्या काम करते हो
- डॉक्टर ने पूछा कहिए दादा कैसा लग रहा है
- उन्होंने कहा हाँ अब ठीक हूँ

(iv) **विशेषण बनायें :-**

नीचे	= निचला	ऊपर	= ऊपरी
आगे	= _______	भीतर	= _______
पीछे	= _______	बाहर	= _______

(v) **यद्यपि - तथापि, जो-सो, यदि-तो, क्योंकि, इसलिए आदि योजकों का प्रयोग करते हुए वाक्य बनायें।**

(vi) **शब्दों के शुद्ध रूप लिखें :-**

दूरघटना	= _______	लहूलूहान	= _______
सवारिया	= _______	वयोवरदध	= _______
अनूरोध	= _______		

(vii) **समस्त पद विग्रह करें :-**

पंचायत-भवन = _______

दुर्घटना-स्थल = _______

गंतव्य-स्थल = _______

(घ) रचना भाग

(i) अपने मित्र को आँखों देखी दुर्घटना का विवरण देते हुए पत्र लिखो।

(ii) यदि आपकी किसी ने संकट के समय सहायता की हो, तो उसे 50 शब्दों में लिखें।

पाठ-7

श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी

सवा सवा लाख पर
एक को चढ़ाऊँगा,
गोबिन्द सिंह निज नाम तब कहाऊँगा।

* * * *

सत् श्री अकाल

भाल अनल धक धक कर जला
भस्म हो गया था काल।

प्यारे विद्यार्थियो! यह पद महान् कवि निराला का है। इस पद में कवि ने दशम गुरु गोबिन्द सिंह की वीरता का आदर्श प्रस्तुत किया है। भारतीय इतिहास में ऐसे त्याग, बलिदान और वीरता के उदाहरण दुर्लभ हैं। दशम गुरु गोबिन्द सिंह तेजस्वी नेता और महान् योद्धा थे। उनका चेहरा सूर्य के समान तेजस्वी था। उनकी वाणी में ओज था। उन्होंने अन्याय का अन्त करने के लिए 'सत श्री अकाल' का नारा लगाया था। उन्होंने निर्जीवों में प्राण फूँक दिए थे; कायरों को वीर बना दिया था; वीरों को सिंह बना दिया था। उन्होंने एक-एक सिंह को लाखों से जूझने का साहस दिया था। उन्होंने काल का अवतार बनकर शत्रुओं के छक्के छुड़ा दिए थे। इस तरह उन्होंने धर्म, जाति और राष्ट्र को नया जीवन दिया था।

ऐसे महान् नेता और भारत माता के सपूत दशम गुरु गोबिन्द सिंह ने विनय भाव से कहा था, "मैं हूँ परम पुरख को दासा। देखन आयो जगत तमासा" वे अकाल-पुरुष के अवतार थे। वे जाति और धर्म की रक्षा के लिए 22 दिसम्बर, 1666 को पटना (बिहार प्रान्त) में अवतरित हुए थे। उनका

बचपन का नाम गोबिन्द राय रखा गया था। उसके कुछ समय बाद उनके पिता नवम् गुरु तेगबहादुर पंजाब लौट आए थे। पर गोबिन्द राय और इनकी माता श्रीमती गुजरी जी लगभग आठ साल तक पटना में ही रहे।

गोबिन्द राय का बचपन 'होनहार बिरवान के होत चीकने पात' कहावत को चरितार्थ करता है। बचपन में वे साधारण बालकों के समान गुल्ली-डण्डा, दौड़-पकड़ जैसे खेल नहीं खेलते थे। वे घोड़े की सवारी करना, हथियार चलाना, साथियों की दो टोलियाँ बनाकर नकली युद्ध करना और शत्रु विजय के खेल खेलते थे। वे खेल में अपने साथियों का नेतृत्व करते थे, शस्त्र की तरह शास्त्र विद्या से भी उन्हें बड़ा प्रेम था। उनकी बुद्धि असाधारण थी। उन्होंने आसानी से हिंदी , संस्कृत और फारसी भाषा को सीख लिया था।

भारत में उन दिनों औरंगज़ेब का शासन था। इस्लाम का बलात् प्रचार हो रहा था। इस्लाम को न अपनाने वाले हिन्दुओं को तलवार के घाट उतारा जाता था। जम्मू और कश्मीर के लोगों को जबरदस्ती धर्म परिवर्तन के लिए मज़बूर किया जा रहा था। धन और जन-जीवन कुछ भी सुरक्षित न था। भयभीत कश्मीरी आनन्दपुर में गुरु तेग बहादुर की शरण में आए। उन्होंने हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए प्रार्थना की। गुरु तेग बहादुर ने कहा, ''स्थिति किसी महापुरुष का बलिदान चाहती है।'' पास बैठे उनके पुत्र गोबिन्द राय बोल उठे, ''पिता जी आपसे बढ़कर बलिदान योग्य महापुरुष कौन हो सकता है?'' नौ वर्ष की अल्पावस्था में अपने पिता को बलिदान के लिए प्रेरणा देना बड़े साहस की बात थी। गुरु तेग बहादुर जी अपने पुत्र की इच्छा को समझ गए। वे धर्म की रक्षा के लिए दिल्ली पहुँच गए। उन्हें बन्दी बना लिया गया। उन्होंने अपना धर्म नहीं बदला। दिल्ली के चाँदनी चौंक में अपना शीश भेंट कर दिया। वहीं आजकल शीशगंज गुरुद्वारा है।

नवम् गुरु की शहीदी के बाद गोबिन्द राय 11 नवम्बर 1675 को गुरु पद पर बैठे। उन दिनों हिन्दू-धर्म संकट में था। औरंगज़ेब के अत्याचारों के विरुद्ध आवाज़ उठाना जान से खेलना था। पर गुरु गोबिन्द राय जी ने गद्दी पर बैठते ही धर्म की रक्षा का बीड़ा उठाया। औरंगज़ेब के अत्याचारों को चुनौती देने के लिए गुरु परम्परा को बदल दिया। वे मसनदों एवं सेवकों से राजाओं की साज-सज्जा तथा सामग्री की वस्तुएँ भेंट लेने लगे। काबुल के एक मसनद दुनीचंद ने अढ़ाई लाख रुपए से एक डेहरा (शाही तम्बू) तैयार कर गुरु जी को भेंट किया। इसे पाकर गुरु जी बहुत प्रसन्न हुए। असम के राजा रत्न राय ने एक अद्‌भुत प्रशिक्षित हाथी गुरु जी को भेंट किया। इसका नाम प्रसादी रखा गया। रत्न राय ने एक पंचकूला हथियार भी भेंट किया। इसकी कल दबाने से इसे कटार, कृपाण, बर्छी, पिस्तौल और बन्दूक में बदला जा सकता था। गुरु जी स्वयं शस्त्रों का अभ्यास करते थे, शिकार खेलते थे, अपने शिष्यों को भी सैनिक शिक्षा देते थे। वे अपने सेवकों में उत्साह, साहस, वीरता और राष्ट्र-प्रेम की भावनाएँ भरते थे। परिस्थितियाँ ऐसी थीं, जिनके कारण दशम् गुरु को भक्ति के साथ शक्ति को संचित करना पड़ा। उनका मूल लक्ष्य धर्म, साहित्य और संस्कृति की रक्षा करना था। वे संस्कृत के महत्त्व को समझते थे। उन्होंने पाँच सिक्खों को संस्कृत पढ़ने के लिए काशी

भेजा। यह परम्परा खूब फूली-फली। संस्कृत के ये विद्वान निर्मले कहलाए। गुरु गोबिन्द ने सिक्खों को संस्कृत-ग्रन्थों का ज्ञान कराने के लिए महाभारत, रामायण, उपनिषद्, पुराणों आदि का भाषानुवाद कराया। वे स्वयं उच्चकोटि के कवि थे। कहा जाता है कि उनके दरबार में 52 कवि रहते थे। उन्होंने महान् साहित्य रचा था। इस प्रकार शस्त्र और शास्त्र, विद्या का अभ्यास करते और कराते उन्होंने 9 साल आनन्दपुर साहिब में व्यतीत किए।

सन् 1684 में नाहन के राजा मेदिनी प्रकाश के निमन्त्रण पर गुरु गोबिन्द सिंह अपने प्रशिक्षित सैनिकों और शिष्यों के साथ पाऊँटा गए। सुरक्षा की दृष्टि से उन्हें वह स्थान अच्छा लगा। उन्होंने वहाँ यमुना के किनारे सन् 1685 में एक किला बनवाया जिसका नाम पाऊँटा साहिब रखा। पाऊँटा का अर्थ है पाँव टिकाना। जिस स्थान पर गुरु जी ने पाँव टिकाया, वह स्थान पाऊँटा साहिब के नाम से प्रसिद्ध हुआ। वहाँ गुरु जी ने अपनी सैन्य शक्ति को खूब बढ़ाया। औरंगज़ेब द्वारा सेना से निकाले गए पाँच सौ वीर पठान वहीं उनकी शरण में आए थे। निडर गुरु जी ने उन्हें अपनी सेना में भर्ती कर लिया। इससे औरंगज़ेब कुपित हो गया। गुरु जी की बढ़ती हुई शक्ति को देखकर पहाड़ी राजा ईर्ष्या करने लगे थे। वे उनके शत्रु बन गए थे।

सन् 1699 में वैशाखी के पर्व पर गुरु जी ने आनन्दपुर साहब में दरबार सजाया। भरी सभा में उन्होंने बलिदान के लिए पाँच शिष्यों की माँग की। गुरु जी की यह माँग सुनते ही सारी सभा में सन्नाटा छा गया। फिर एक-एक करके लाहौर का क्षत्रिय दयाराम, दिल्ली का जाट धर्मदास, द्वारका का धोबी मुहकम चन्द, जगन्नाथ का कहार हिम्मतराय, विदर का नाई साहब चन्द, पाँचों बलिदान के लिए सामने आए। इस प्रकार गुरु जी ने पाँच प्यारों का चुनाव किया। उन्हें अमृत छकाया तथा उन्हें पाँच ककार धारण कराए। उन सिंहों को सजाया और फिर स्वयं उनसे अमृत छका। इस तरह अन्याय तथा अत्याचार का डट कर विरोध करने के लिए खालसा पंथ की स्थापना की। अब वे गोबिन्द राय से गोबिन्द सिंह बन गए।

गुरु जी वीर थे; योद्धा थे; उन्होंने सेना सजाई थी, अपने राज्य का विस्तार करने के लिए नहीं। उनका लक्ष्य महान था: वे अन्याय और अत्याचार का अन्त करना चाहते थे। उन्हें किसी से ईर्ष्या और द्वेष न था। वे धर्म और शान्ति की स्थापना करना चाहते थे। पर पहाड़ी राजाओं ने गुरु जी को समझा नहीं। वे उनके कट्टर शत्रु बन गए। पहाड़ी राजाओं में भीम चन्द प्रमुख थे। उसने फतेह शाह को गुरु जी पर आक्रमण करने के लिए विवश कर दिया। भीम चन्द की लड़की की शादी फतेह शाह के पुत्र से हुई थी; उसने फतेह शाह को कहा, ''डोली बाद में उठेगी, पहले गुरु गोबिन्द सिंह पर आक्रमण करो।'' मरता क्या न करता, उसने आक्रमण किया; पर सिक्खों की विजय हुई। भंगानी का यह युद्ध पाऊँटा दुर्ग के पास हुआ था।

गुरु जी उदार थे। उनका विरोध किसी व्यक्ति और किसी सम्प्रदाय से न था। उनका विरोध अधर्म और अन्याय से था। जम्मू के सूबेदार मियाँ खाँ ने अपने सेनापति आलिफ खाँ को पहाड़ी

राजा भीम चन्द से कर लेने के लिए भेजा। उसने कर देने से इन्कार कर दिया। आलिफ खाँ ने भीमचन्द पर आक्रमण कर दिया। गुरु जी 'जज़िया' को अधर्म समझते थे। इसलिए उन्होंने भीमचन्द की सहायता की। आलिफ खाँ युद्ध में मारा गया। इसे 'नादौन का युद्ध' कहते हैं।

सन् 1704 में औरंगज़ेब की प्रेरणा से लाहौर और सरहिन्द के सूबेदारों ने पहाड़ी राजाओं की सहायता से आनन्दपुर साहिब को घेर लिया। यह घेरा बहुत समय तक बना रहा। सिक्ख भी इस लड़ाई से तंग आ गए। औरंगज़ेब ने गुरु जी को पत्र लिखा कि वे दुर्ग को छोड़ दें और विश्वास दिलाया कि उन्हें और उनकी सेना को कोई हानि नहीं पहुँचाई जाएगी। सिक्खों ने गुरु जो को किला छोड़ने की सलाह दी। किला छोड़ दिया गया। पर शत्रु सेना ने विश्वासघात किया। उसने चारों ओर से आक्रमण करके गुरु जी को घेर लेना चाहा। इससे सिक्खों को काफी हानि उठानी पड़ी और गुरु जी का परिवार भी बिखर गया।

विकट स्थिति में भी गुरु जी ने साहस नहीं छोड़ा। उन्होंने अपूर्व बलिदान का आदर्श प्रस्तुत किया। बाल्यावस्था में उन्होंने अपने पिता को बलिदान के लिए प्रेरणा दी थी, युवावस्था में अपने चारों पुत्रों को देश और धर्म के लिए न्योछावर कर दिया। चमकौर साहिब पहुँच कर गुरु जी ने अपने जाट शिष्य की हवेली को ही किला बनाकर औरंगज़ेब की सेना का सामना किया। उनके दो पुत्र अजीत सिंह और जुझार सिंह शत्रुओं से लोहा लेते हुए चमकौर के युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए। उनके छोटे दोनों पुत्रों जोरावर सिंह और फतेह सिंह को सरहिन्द के सूबेदार ने जीवित ही दीवार में चिनवा दिया। उन्होंने हँसते-हँसते मौत को गले लगाया पर अपना धर्म नहीं बदला। माता सुन्दरी के आँसुओं को देखकर गुरु जी ने भरी सभा में कहा था :-

इन पुत्रन के सीस पै, वार दिए सुत चार।
चार मुए तो क्या भया, जीवित कई हज़ार।।

दशम गुरु जी साहसी और निडर थे। उन्होंने औरंगज़ेब को फारसी में पत्र लिखा था। इसे 'ज़फरनामा' कहा जाता है। इसमें उन्होंने उसे विश्वासघात के लिए डाँटा और धिक्कारा था। उन्हीं दिनों औरंगज़ेब का निधन हो गया। बहादुर शाह आगरा के सिंहासन पर बैठा। उसे गुरु जी का समर्थन मिला था। उसने गुरु जी का सम्मान किया।

अपने अन्तिम दिनों में गुरु जी गोदावरी नदी के किनारे नंदेड़ (महाराष्ट्र) में रहने लगे। वहाँ माधो दास नाम एक वैरागी से उनकी भेंट हुई। गुरु जी ने उसे अत्याचार और अन्याय का दमन करने के लिए पंजाब भेजा। बाद में वही वैरागी बन्दा बहादुर के नाम से प्रसिद्ध हुआ। उसने सरहिन्द की ईंट से ईंट बजाई और अत्याचारियों का अन्त किया। गुरु जी ने आगे का गुरु पद गुरुवाणी को देकर पंथ को रास्ता दिखाया और सब विवादों का अन्त कर दिया।

नंदेड़ में गुलखाँ नाम का एक पठान रहता था। उसने गुरु गोबिन्द सिंह जी से मैत्री बढ़ाई।

पर उसने गुरु जी से पुराना बदला लिया। एक दिन उसने एकान्त में गुरु जी पर छुरे से प्रहार किया। गुरु जी शेर की भाँति उस पर झपटे और कृपाण के एक ही प्रहार से उसका वध कर दिया। गुरु जी का घाव काफी गहरा था। कई दिनों में भरा। वे अभी स्वस्थ हुए ही थे कि बहादुर शाह द्वारा भेजी हुई भेंटों में से एक कठोर धनुष का चिल्ला चढ़ाते समय जोर लगने से उनका घाव फिर से खुल गया। अधिक रक्त बह जाने के कारण 7 अक्तूबर 1708 ई० को वे स्वर्ग सिधार गए।

'सुभ करमन ते कबहूँ न टरौं' का दृढ़ व्रत अपनाने वाले कर्मठ वीर, अन्याय को चुनौती देने वाले साहसी योद्धा, ईर्ष्या, द्वेष, द्वैत से ऊपर उठकर मानवता के प्रचारक, महान् सन्त, धर्म और संस्कृति के उद्धारक, दीनों के संरक्षक, खालसा पंथ के संस्थापक दशम गुरु गोबिन्द सिंह का व्यक्तित्व अलौलिक था। उनके आदर्शों पर चलकर आज भी हमारे देश का उद्धार हो सकता है।

अभ्यास

(क) भाषा बोध

(i) शब्दार्थ :-

दशम	= दस	दुर्लभ	= जिसका मिलना कठिन हो
तेजस्वी	= शक्तिशाली	बलात्	= बलपूर्वक
अल्पावस्था	= छोटी आयु	आक्रमण	= हमला
मैत्री	= मित्रता	कृपाण	= छोटी तलवार
निधन	= स्वर्गवास	नेतृत्व करना	= अगुवाई करना

(ii) मुहावरों और लोकोक्तियों का वाक्यों में प्रयोग करो:-

छक्के छुड़ाना ____________________

होनहार बिरवान के होत चीकने पात ____________________

काम तमाम करना ____________________

हिम्मत न हारना ____________________

वीरगति को प्राप्त होना ____________________

तलवार के घाट उतारना ____________________

खूब फलना-फूलना ____________________

बीड़ा उठाना ____________________

मौत को गले लगाना ____________________

ईंट से ईंट बजाना ____________________

प्राण फूँक देना ____________________

जान पर खेलना ____________________

(ख) विषय. बोध

(i) इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(क) भारतीय इहिास में गुरु गोबिन्द सिंह जी का नाम क्यों प्रसिद्ध है?

(ख) गोबिन्द राय ने पिता को बलिदान के लिए प्रेरणा क्यों दी?

(ग) गुरु जी के प्रिय खेल क्या-क्या थे?

(घ) 'पाऊँटा' शब्द का क्या अर्थ है?

(ङ) गुरु जी ने सेना क्यों सजाई?

(च) 'ज़फरनामा' के विषय में आप क्या जानते हैं?

(ii) इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें :-

(क) गोबिन्द राय का बचपन 'होनहार बिरवान के होत चीकने पात' कहावत को कैसे चरितार्थ करता है?

(ख) गुरु जी ने खालसा पंथ की स्थापना कैसे की?

(ग) ''इन पुत्रन के सीस पर वार दिये सुत चार
चार मुए तो क्या भया, जीवित कई हज़ार।'' इन पंक्तियों का क्या भाव है?

(घ) 'सुभ करमन ते कबहूँ न टरौं' पंक्ति का क्या भाव है?

(ङ) ''मैं हूँ परम पुरख को दासा। देखन आयो जगत तमासा'' पंक्ति का भाव स्पष्ट करें।

(च) गुरु गोबिन्द सिंह जी का व्यक्तित्व अलौकिक था, स्पष्ट करें।

(ग) व्यावहारिक व्याकरण

(i) अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखें :-

जो विश्वास के योग्य हो ________

जो निडरता से कार्य करे ________

जो कभी न मरे ________

आक्रमण करने वाला ________

धर्म से सम्बन्धित ________

दूर की सोचने वाला ________

जो घोड़े की सवारी करे ________

जानने की इच्छा रखने वाला ________

(ii) निम्नलिखित समास का विग्रह करके समास का नाम बतायें :-

शस्त्र विद्या = ________________

धर्म-परिवर्तन = ________________

महापुरुष = ________________

पुत्र इच्छा = ____________

युद्ध-सामग्री = ____________

भयभीत = ____________

पंजाब = ____________

(iii) सन्धि विच्छेद करें :-

अत्याचारी	= ________	युवावस्था	= ________
अल्पावस्था	= ________	भाषानुवाद	= ________
रामायण	= ________	दुर्लभ	= ________
विद्याभ्यास	= ________	सम्मान	= ________

(iv) विशेषण बनाएँ :-

सहित्य + इक	= साहित्यिक	सम्प्रदाय + इक	= ________
धर्म + इक	= ________	संस्कृति + इक	= ________
साहस + इक	= ________	स्वभाव + इक	= ________

(v) 'प्रहार' और 'प्रशिक्षित' में 'प्र' उपसर्ग है। 'निर्जीव' में 'निर्' और 'दुर्लभ' में 'दुर्' उपसर्ग हैं। इन तीनों उपसर्गों का प्रयोग करते हुए पाँच-पाँच शब्द लिखें।

(घ) रचना बोध

'गुरु गोबिन्द सिंह जी' पर एक निबन्ध लिखें।

पाठ-8

बस चुप भली

अपने मेहरबान बुज़ुर्ग प्राय: एक ही बात दोहराते हैं - 'एक चुप सौ सुख' सभी आफतों से बचने के लिए एक ही राम बाण औषधि है : जुबान पर लगाम और सब काम सिद्ध। कई बार सोचता हूँ आखिर हम आँवलों के स्वाद और बुज़ुर्गों की सीख से क्यों परहेज़ करते हैं। मानता हूँ जुबान दराजी बुरी आदत है परन्तु सवाल यह है कि कोई जुबान दराज क्यों बनता है? गज़ भर की जुबान मुँह से बाहर निकल कर क्यों ज़हर उगलने लगती है? इसलिए कि हम कुछ ऐसा देख लेते हैं, जो हमें बुरा लगता है। कुछ ऐसा सुन लेते हैं, जिसको सहन नहीं कर पाते। उस समय बुज़ुर्गों की तमाम नसीहतें ताक पर धरी रह जाती हैं और हम अपनी तेज़ जुबान का शस्त्र संभालकर मैदान में कूद पड़ते हैं।

इतिहास साक्षी है कि प्रत्येक युग में वाणी-संयम अथवा चुप-साधना का दर्जा किसी भी योग-साधना से कम नहीं रहा। अपने ज़माने का महामूर्ख और काला अक्षर भैंस बराबर मानने वाला कालिदास केवल 'बस चुप भली' के प्रभाव से ही दुश्मनों की छाती पर मूँग दल कर एक परम रूपवती राजकुमारी ब्याह लाया था। दूसरी तरफ अपने युग के सबसे बड़े दार्शनिक मन्सूर जोंबस चुप भली के स्थान पर अपनी बात कह कर ही दम लेते थे, फाँसी का फंदा चूमने पर मजबूर हुए। अपनी मधुर कविताओं के बल पर लोगों के दिलों पर राज्य करने वाले प्रसिद्ध कवि रहीम भी अपने जीवन के आखिरी दिनों में इस निर्दय जुबान के कारण इस तरह परेशान हुए कि बस दोनों कान पकड़ कर बैठ गए और एक दोहा कह गए जो उनके दिल की सच्ची स्थिति बयान कर देता है -

रहिमन जिह्वा बावरी कहि गई सरग पताल।
आप तो कह भीतर गई जूती खात कपाल।।

पिछले चुनावों का जिक्र है, मेरे दो मुहल्लेदार विधानसभा के लिए लंगर-लंगोटे कसकर मैदान में कूद पड़े। एक सुबह दरवाज़े पर दस्तक हुई। नौकर ने दरवाज़ा खोला और एक साहिब अन्दर आ गए। मैं सोफे पर अख़बार पढ़ता-पढ़ता ऊँघ गया था। मैं अधजगा-सा देख रहा था कोई आ रहा है मगर दो-एक और खर्राटे भर लेना चाहता था। इतने में फिर दस्तक हुई। नौकर ने दरवाज़ा खोला और एक और सज्जन तेज़ी से अन्दर घुस आए। मैंने अंगड़ाई लेते हुए उठने का अभिनय किया तो देखा सामने खन्ना साहिब खड़े हैं। अचानक सिरहाने की ओर से आवाज़ आई - हम भी आये हैं और खन्ना साहब के आने से पहले खड़े हैं। खन्ना साहब की दलील यह थी कि मेरी निगाह पहले उन पर पड़ी थी। अब वे दोनों मुझ पर अपना अधिकर जमाने के लिए 'पहले मैं' का राग अलापने लगे। मैंने जब बात बढ़ती देखी तो दोनों को बैठने का इशारा किया। दोनों ज़िद्द करने लगे कि मैं उनके चुनाव-अभियान का तमाम कामकाज संभाल लूँ। मुझ पर दोनों के काफी एहसान थे। मेरी चटोरी जुबान उनका नमक खा चुकी थी, जिसका वे हक माँग रहे थे। अब मैं किस तरह बच निकलता। मैं हनुमान चालीसा और संकटमोचन दोनों स्तोत्रों का मन ही मन पाठ करने

लगा। तभी एक तरकीब लड़ गई। मैंने कागज़ पर लिखकर उन्हें बताया - ''आज मेरा मौन व्रत है। कल प्रात: दर्शन दीजिएगा तब कोई न कोई हल निकलेगा।'' वे तत्काल अपना-सा मुँह लेकर चले गए और मैं 'बस चुप भली' का सहारा लेकर दूसरे दिन पहली फ्लाइट से दिल्ली चला गया।

अभी कुछ दिन पहले दफ्तर में बिहारीलाल और मुरारी लाल का झगड़ा हो गया। नौबत हाथापाई तक पहुँच गई। जो कुछ भी हाथ लगा एक दूसरे पर पटक दिया। अच्छा-खासा हंगामा हो गया। बड़े साहिब तक ख़बर पहुँच गई। दोनों ने मुझे मौके के गवाह के रूप में तलब करवाया। आखिर मेरी पेशगी की घड़ी सिर पर आ गई। उससे पहले बिहारी लाल और मुरारी लाल दोनों मुझसे अलग-अलग मिल चुके थे। दोस्ती का वास्ता डालकर फुसला भी चुके थे और चलते-चलते डरा-धमका भी चुके थे। दोस्तों का विचार था कि मैं साहिब के आगे मामला गोल-मोल कर जाऊँ अन्यथा मेरा अपना बिस्तर भी गोल हो सकता है। मुझे इस संकट से बचने का कोई रास्ता दिखाई नहीं देता था। आखिर गवाही देते वक्त मैंने भयंकर खाँसी के दौरे का वह नाटक किया कि साँस रोक कर वहीं लुढ़क गया। मुझे फौरन डिस्पैंसरी पहुँचा दिया गया। मगर बिहारी और मुरारी दोनों मुझे अपराधी मानते हैं क्योंकि साहिब ने दोनों की तरक्की रोक दी है।

बात पुरानी हो चुकी है, परन्तु इसे भूल जाना संभव नहीं। अपने मुहल्ले के कुछ बुजुर्ग मेरे यहाँ पधारे। उनके होनहार पुत्र को कोई देखने आ रहे थे। वे मेरे मेहमान-खाने में उसकी शराफ़त की नुमाइश लगाना चाहते थे। जहाँ तक उनकी शराफ़त का सवाल था, इसे ज़माना जानता था। शहर के थाने तक में इसकी शोहरत फैल चुकी थी। मैं भी इस बिन-बुलाई आफत से घायल नहीं होना चाहता था। इसलिए 'बस चुप भली' पर अमल करना चाहता था। मगर वे पहले ही लड़की वालों को मेरे यहाँ निमंत्रित कर चुके थे। इसलिए मेहमानखाने के साथ-साथ मेहमानों को खाना भी देना पड़ा और अपने घर में ही खुद मेहमान बनना पड़ा। लड़के का बाप अपने बेटे की नेक-चलनी और कारोबार की प्रशंसा कर रहा था। बात-बात पर मेरी गवाही पर ज़ोर दे रहा था। मैंने 'बस चुप भली' का सहारा ले रखा था। मगर हूँ, हाँ, जी- हाँ, किये बिना कोई चारा न था। आखिर बात पक्की हो गई। शादी भी हो गई मगर मेरा मेहमानखाना अब भी लड़के-लड़की वालों के आए दिन के झगड़ों का पंचायत घर बनकर रह गया है। अब सोचता हूँ कि जल्दी कोई किराए का मकान तय करके यहाँ से निकल भागूँ।

किस्सा संक्षेप में यह है कि बात कोर्ट-कचहरी की हो या शादी-मंगनी की, चुनाव की हो या उप-चुनाव की, सिफ़ारिश की हो या गवाही की, पंचायत की हो या नगरपालिका की, जमानत की हो या अमानत की, तीन की हो या तेरह की, आप इससे दूर भागिए। यदि यह मंजूर नहीं तो जुबान भी खोलनी पड़ेगी और इससे रस भी बरसेगा। जुबान के रस के मज़े आपको बता ही चुका हूँ फिर भी एक अंतिम चेतावनी सुन लीजिए -

रसना के रस बहुत हैं बिन बोले ही लूट,
बोलेगा पछताएगा सरधुन अरे खसूट।

अभ्यास

(क) भाषा बोध

(i) शब्दार्थ :-

निगाह = नज़र
दस्तक देना = दरवाज़ा खटखटाना
रामबाण औषधि = अचूक दवा
बयान = वर्णन करना
रसना = जीभ
जुबानदराजी = लम्बी जुबान (अधिक बोलने की आदत)
जहर उगलना = बुरा-भला कहना
नसीहतें = उपदेश
चटोरी = स्वाद लेने वाली

(ii) इन मुहावरों को अपने वाक्यों में प्रयोग करें :-

काला अक्षर भैंस बराबर ____________________
छाती पर मूँग दलना ____________________
फाँसी का फंदा चूमना ____________________
कान पकड़ना ____________________
मैदान में कूद पड़ना ____________________
राग अलापना ____________________
नमक खाना ____________________
अपना-सा मुँह लेकर चले जाना ____________________
जान के पीछे पड़ना ____________________

(ख) विषय-बोध

(i) सही पर (✓) और गलत पर (×) का चिह्न लगायें :-

(क) जुबानदराजी बुरी आदत है। ( )
(ख) मौन के बल पर कालिदास का विवाह राजकुमारी से नहीं हुआ था। ( )
(ग) निर्दय जुबान के करण रहीम अन्तिम दिनों में परेशान हुए थे। ( )
(घ) बिहारी लाल और मुरारी लाल को साहब ने तरक्की दी थी। ( )
(ङ) चुनाव अभियान में लेखक ने खन्ना का पक्ष लिया था। ( )

(ii) इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(क) सब आफतों से बचने की रामबाण औषधि क्या है?
(ख) न चाहते हुए भी हम क्यों जुबानदराजी करते हैं?
(ग) जुबानदराजी के कारण मन्सूर का क्या परिणाम हुआ?
(घ) अपने ही घर में लेखक को मेहमान क्यों बनना पड़ा?
(ङ) बिहारी लाल और मुरारी लाल की गवाही से लेखक ने मुक्ति किस युक्ति से ली?

(iii) चार या पाँच वाक्यों में उत्तर लिखें :-

(क) 'एक चुप सौ सुख' इस तथ्य (सच्चाई) को अपनी युक्तियों से स्पष्ट करें।

(ख) 'क्या हर स्थिति में चुप रहना चाहिए' अपने विचार लिखें।

(ग) बिहारी लाल और मुरारी लाल के झगड़े से बचने के लिए लेखक ने क्या नाटक किया?

(घ) लेखक ने उलझनमयी परिस्थितियों कोर्ट कचहरी, शादी-मंगनी, चुनाव-उपचुनाव आदि से दूर रहने का संकेत क्यों दिया है?

(ग) व्यावहारिक व्याकरण

(i) निम्नलिखित शब्दों में से उपसर्ग पृथक् करें :-

1. अधिपति, अध्यक्ष, अध्यात्म, अधिराज ।
2. अभिप्राय, अभिशाप, अभिलाषा, अभिमान।
3. अपराध, अपमान, अपशब्द, अपवाद।
4. अतिशय, अतिनिर्धन, अत्याचार, अत्यावश्यक।
5. अनुवाद, अनुचर, अनुरूप, अनुकरण।
6. अवगुण, अवनति, अवस्था, अवसर।
7. उपमान, उपवन, उपकार, उपमंत्री।
8. निर्भय, निर्दोष, निर्वाह, नीरोग।
9. निस्तार, निश्चल, निष्प्राण, निष्प्रभ।
10. परिचय, परिमाण, परिक्रमा, परिवर्तन।

(ii) समस्तपदों को अलग करें (विग्रह) :-

जुबान दराजी	________	शरणागत	________
वाणी-संयम	________	रसोईघर	________
योग-साधना	________	आपबीती	________
तन-मन	________	अनपढ़	________

पाठ-9

पथ की पहचान

पूर्व चलने के बटोही,
बाट की पहचान कर ले।

पुस्तकों में है नहीं,
छापी गई इसकी कहानी,
हाल इसका ज्ञात होता
है न औरों की ज़बानी।

अनगिनत राही गए इस
राह से, उनका पता क्या,
पर गए कुछ लोग इस पर
छोड़ पैरों की निशानी,

यह निशानी मूक होकर
भी बहुत कुछ बोलती है,
खोल इसका अर्थ पंथी,
पंथ का अनुमान कर ले,

पूर्व चलने के बटोही,
बाट की पहचान कर ले।

यह बुरा है या कि अच्छा
व्यर्थ दिन इस पर बिताना,
जब असंभव छोड़ यह पथ
दूसरे पर पग बढ़ाना।

तू इसे अच्छा समझ,
यात्रा सरल इससे बनेगी,
सोच मत केवल तुझे ही
यह पड़ा मन में बिठाना,

हर सफल पंथी यही
विश्वास ले इस पर बढ़ा है,
तू इसी पर आज अपने
चित्त का अवधान कर ले,

पूर्व चलने के बटोही,
बाट की पहचान कर ले।

है अनिश्चित् किस जगह पर
सरित्, गिरि, गह्वर मिलेंगे,
है अनिश्चित् किस जगह पर
बाग-वन सुन्दर मिलेंगे,

किस जगह यात्रा खत्म हो
जाएगी, यह भी अनिश्चित
है अनिश्चित्, कब सुमन,
कब कंटकों के शर मिलेंगे

कौन सहसा छूट जाएँगे,
मिलेंगे कौन सहसा,
आ पड़े कुछ भी, रुकेगा
तू न, ऐसी आन कर ले।

पूर्व चलने के बटोही,
बाट की पहचान कर ले।

अभ्यास

(क) भाषा बोध

(i) शब्दार्थ :-

पूर्व = पहले
पथ = राह, रास्ता
राही = मुसाफिर
अवधान = ध्यान, किसी विषय में मन की एकाग्रता
चित्त = मन
गिरि = पर्वत
बटोही = यात्री
बाट = राह या रास्ता
अनगिनत = जिसकी गिनती न हो
सरित = नदी
गह्वर = गुफा
शर = तीर

(ii) इन शब्दों/मुहावरों के अर्थ बता कर वाक्यों में प्रयोग करें :-

पथ ______

सुमन ______

अनगिनत ______

सहसा ______

बटोही ______

पैरों की निशानी छोड़ना ______

मन में बिठाना ______

(ख) विषय बोध

1. कवि ने कविता में किस पथ की पहचान कर लेने का भाव प्रस्तुत किया है?
2. 'अनगिनत राहियों' से कवि ने किस ओर जाने का संकेत दिया है?
3. राही पथ पर अपनी निशानी कैसे छोड़ जाते हैं?
4. सफल यात्री राह पर कैसे बढ़ता है?
5. राही को कब नहीं रुकना चाहिए?
6. निम्नलिखित पंक्तियों की व्याखया करो :-

   है अनिश्चित किस जगह पर
   सरित् , गिरि, गह्वर मिलेंगे।
   है अनिश्चित किस जगह पर
   बाग वन सुन्दर मिलेंगे।

(ग) व्यावहारिक व्याकरण

(i) इन शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखें -

आँख = ______, ______

पहाड़ = ______, ______

नदी = ______, ______

मुसाफिर = ______, ______

वन = ______, ______

(ii) इन शब्दों के आगे 'अ' लगाकर विलोम शब्द बनायें :-

ज्ञात = ______ निश्चित = ______

सम्भव = ______ सफल = ______

सत्य = ______

(iii) अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखें :-

जो गिना न जा सके = ________

जो निश्चित न हो = ________

पथ पर चलने वाला = ________

(iv) 'अनगिनत', 'अनुमान' शब्द में 'अन' और 'अनु' उपसर्ग हैं।

इसी प्रकार 'अन' और 'अनु' उपसर्ग लगाकर नये शब्द बनायें :-

अन + होनी = ________	अनु + सार = ________
अन + जान = ________	अनु + शासन = ________
अन + मोल = ________	अनु + मति = ________
अन + अन्य = ________	अनु + करण = ________

(घ) रचना बोध

कविता के आधार पर सभी विद्यार्थी 'जीवन का लक्ष्य' विषय पर निबन्ध लिखें।

अंगुलिमाल

संसार में जितने भी महान् पुरुष हुए हैं, उन्हें सच्चाई, धर्म और अच्छी बातों का प्रचार करने के लिए निरन्तर नगर-नगर और गाँव-गाँव घूमना पड़ा है। जैसे हमारे पूज्य महात्मा गाँधी और जवाहरलाल नेहरू स्वतंत्रता-संग्राम के दिनों में गाँव-गाँव घूमे और उन्होंने मनुष्यों में स्वाधीनता प्राप्ति के लिए जागृति उत्पन्न की, उसी तरह महात्मा बुद्ध को 45 वर्ष तक लगातार संसार की भलाई के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना पड़ा।

एक बार महात्मा बुद्ध कौशल की राजधानी श्रावस्ती गये। वहाँ का राजा प्रसेनजित उनका शिष्य था। बुद्ध उसे धर्मोपदेश देने वहाँ जाया करते थे। इस बार जब वे श्रावस्ती पहुँचे तब उन्होंने राजा को व्याकुल पाया। पूछने पर राजा ने बताया कि मैं आजकल अंगुलिमाल नामक डाकू से तंग आ गया हूँ। वह प्रजा को बहुत कष्ट पहुँचाता है, जिसे मैं सहन नहीं कर सकता। क्या करूँ?

महात्मा बुद्ध ने राजा को धीरज बँधाया और अंगुलिमाल को विजय करने का विश्वास दिलाया। अंगुलिमाल बड़ा भयंकर डाकू था। उसके अत्याचारों से प्रजा त्राहि-त्राहि कर उठी थी। गाँव के गाँव उजड़ गये थे। घर-सम्पत्ति, जान-माल कुछ भी सुरक्षित न था। उसने प्रतिज्ञा कर रखी थी कि मैं एक हज़ार मनुष्यों की हत्या करूँगा। परन्तु सैंकड़ों मनुष्यों को बारी-बारी से मार कर उनकी संख्या याद रखना आसान कार्य नहीं था। इस कार्य के लिए उसने युक्ति निकाली। वह जब किसी का वध करता तब उसके शरीर से उसकी उँगली काटकर अपनी माला में गूँथ लेता था। इस प्रकार मारे गये मनुष्यों की उँगलियों की उसके पास एक माला-सी तैयार हो गई थी। जिसे वह गले में पहने रहता था। इसी कारण उसका नाम अंगुलिमाल पड़ गया था।

बुद्ध श्रावस्ती से निकलकर उस जंगल की ओर चले जहाँ अंगुलिमाल रहता था। जंगल जहाँ शुरू होता था, वहाँ राजा की ओर से एक पहरेदार नियुक्त था जो उधर जाने वालों को रोक कर सावधान करता था। उसने महात्मा बुद्ध को उधर जाने से रोका। किन्तु बुद्ध हँसे, वे शान्ति और साहस प्रदान कर जंगल की ओर बढ़ते गये।

सहसा उन्हें किसी की कठोर आवाज़ सुनाई दी ..... "ठहरो !" बुद्ध ने रुककर और पीछे मुड़कर देखा तो जंगल की झाड़ियाँ चीरता हुआ वह विकराल डाकू सामने आ खड़ा हुआ। ऊँचा कद, काला शरीर, विकराल

चेहरा, लाल आँखें, उठे हुए केश, बड़ी-बड़ी मूँछें और हाथ में तेज़ कटार। निश्चय ही वह मनुष्य नहीं दैत्य दिखाई देता था, परन्तु उसके गले में पड़ी उँगलियों की माला से उसे पहचानने में देर नहीं लगी। महात्मा बुद्ध समझ गये कि यही अंगुलिमाल डाकू है।

महात्मा बुद्ध ने अपनी शान्त दृष्टि उस पर डाली। उनकी दृष्टि में डर के स्थान पर प्यार था। उन्होंने बड़े प्रेमपूर्वक उससे पूछा, "मैं तो ठहर गया, भला तुम कब ठहरोगे?"

अंगुलिमाल चकित था। उसके सामने आने वाले मनुष्यों की भय से घिग्घी बंध जाती थी। आज तक उसे कोई ऐसा मनुष्य नहीं मिला था जो उसकी दृष्टि से दृष्टि मिला कर बात कर सकता। यह कौन है जो डरना तो दूर रहा, शान्ति-पूर्वक मुस्करा रहा है? महात्मा के रोम-रोम से प्रेम बरस रहा था, उनकी आँखों में दया टपक रही थी।

वे फिर बोले - "बोल कब ठहरेगा?"

अंगुलिमाल के ऊपर महात्मा के इन शब्दों का जादू का-सा असर हुआ। घुटने टेक कर बोला, "महात्मन्! मैं आपकी बात नहीं समझा।"

बुद्ध बोले, "अरे जीवन दु:ख रूप है और तुम उसे अपने कारनामों से और बढ़ा रहे हो। मैं तो बुद्ध होकर इन दु:खों के बन्धन से छूट गया हूँ परन्तु तुम इस प्रकार के मार-काट के बन्धन से कब छुट्टी लोगे?"

डाकू महात्मा के तेज से काँप रहा था। सहसा वह बुद्ध के चरणों में गिर पड़ा और बोला, "महात्मन् ! मुझे सही मार्ग बताइए, मेरे जीवन तो अब अंधेरा-ही अंधेरा है।"

बुद्ध ने तत्काल उसे उपदेश दिया और शान्ति, दया तथा प्रेम का पाठ पढ़ाकर उसे अपना शिष्य बनाया। यह सच्चाई, दया और प्रेम के भावों की क्रूरता, घृणा और अन्याय पर विजय थी। डाकू के पास कटार थी, भाला था और महात्मा निहत्थे थे, परन्तु उनके पास संसार को मित्र बनाने वाला प्रेम था, दया थी और निर्मल हृदय था, जिनके द्वारा महात्मा बुद्ध ने विकराल डाकू के कठोर हृदय को जीत लिया। इसके बाद कभी किसी ने अंगुलिमाल द्वारा की गई हत्या की घटना नहीं सुनी।

अभ्यास

(क) भाषा बोध

(i) शब्दार्थ :-

निरन्तर	=	लगातार	चकित	=	हैरान
सहसा	=	अचानक	दृष्टि	=	नज़र
युक्ति	=	तरकीब	तत्काल	=	उसी क्षण
जागृति	=	जागरण, सचेत	विकराल	=	भयंकर
निहत्था	=	बिना हथियार के	घृणा	=	नफ़रत
धर्मोपदेश	=	(धर्म+उपदेश) धर्म के उपदेश	दैत्य	=	राक्षस

(ii) इन मुहावरों के अर्थ स्पष्ट करते हुए वाक्यों में प्रयोग करें :-

धीरज बँधाना ______ ______________________

दृष्टि डालना ______ ______________________

घिग्घी बँध जाना ______ ______________________

रोम-रोम से प्रेम बरसना ______ ______________________

आँखों से दया टपकना ______ ______________________

जादू का-सा असर होना ______ ______________________

छुट्टी लेना ______ ______________________

तेज से काँपना ______ ______________________

(ख) विषय-बोध

(i) उपयुक्त शब्द भरकर वाक्य पूरा करें :-

(क) महान् पुरुषों को धर्म का प्रचार करने के लिए .... नगर-नगर और गाँव-गाँव घूमना पड़ा।

(ख) महात्मा बुद्ध ने राजा को .... बँधाया।

(ग) एक.................... मूर्ति सामने खड़ी थी।

(घ) मैं तो .... गया, भला तुम कब .... ।

(ङ) जीवन दु:ख रूप है और तुम उसे अपनी .... और बढ़ा रहे हो।

(च) यह सत्य, दया और प्रेम के भावों की क्रूरता, घृणा और हिंसा पर .... थी।

(ii) इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(क) प्रसेनजित कहाँ का राजा था?

(ख) प्रसेनजित किसका शिष्य था?

(ग) प्रसेनजित ने महात्मा बुद्ध को अपनी व्याकुलता का क्या कारण बताया?

(घ) अंगुलिमाल कौन था?

(ङ) अंगुलिमाल ने क्या प्रतिज्ञा कर रखी थी?

(च) महात्मा बुद्ध ने प्रसेनजित को क्या विश्वास दिलाया?

(iii) इन प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में लिखें :-

(क) अंगुलिमाल का नाम 'अंगुलिमाल' क्यों पड़ा?

(ख) अंगुलिमाल को जब महात्मा बुद्ध ने देखा तो वह कैसा दिखाई दे रहा था?

(ग) मैं तो ठहर गया, भला तुम कब ठहरोगे? इस पंक्ति का आशय बतायें।

(घ) अंगुलिमाल महात्मा बुद्ध के चरणों में क्यों गिर पड़ा?

(ङ) महात्मा बुद्ध ने डाकू अंगुलिमाल का कठोर हृदय कैसे जीत लिया?

(ग) व्यावहारिक-व्याकरण

(ii) पर्यायवाची शब्द लिखें :-

राजा	= ________	मनुष्य	= ________
विजय	= ________	जंगल	= ________
राक्षस	= ________	चरण	= ________

(ii) 'अ' और 'अन' लगाकर विपरीत अर्थ वाले शब्द बनायें :-

समर्थ	= असमर्थ	इच्छा	= अनिच्छा
शुद्ध	= ________	इष्ट	= ________
शान्ति	= ________	आदर	= ________
सत्य	= ________	उचित	= ________
हिंसा	= ________	आस्था	= ________

(iii) वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखें :-

जिसकी आत्मा महान हो ________

हिंसा करने वाला ________

जो निरन्तर घूमता हो ________

जिसके हाथ में कोई अस्त्र न हो ________

अत्याचार करने वाला ________

किसी के उपकार को मानने वाला ________

धर्म का उपदेश देने वाला ________

(iv) इनमें से संज्ञा व विशेषण शब्दों को अलग-अलग करके लिखें:-

(1) ऊँचा कद, काला शरीर, विकराल-चेहरा, लाल आँखें, उठे हुए केश, बड़ी-बड़ी मूँछें और हाथ में तेज़ कटार।

संज्ञा शब्द : ____________________

विशेषण शब्द : ____________________

(2) महात्मा बुद्ध ने अपनी शान्त दृष्टि उस पर डाली।

संज्ञा : ________ ________

विशेषण : ________ ________

(3) महात्मा बुद्ध ने भयंकर डाकू के कठोर हृदय को जीत लिया।

संज्ञा : ________ ________

विशेषण : ________ ________

(4) मैं एक हज़ार मनुष्यों की हत्या करूँगा।

संज्ञा :----- -----

विशेषण :----- ------

(iii) निर्देशानुसार वाक्य को बदलकर दोबारा लिखें :-

(1) वह प्रजा को बहुत कष्ट पहुँचाता है। (भूतकाल में बदलें)

(2) डाकू महात्मा के तेज़ से काँप रहा था। (वर्तमान में बदलें)

(3) डाकू के पास कटार थी, भाला था और महात्मा निहत्थे थे (वर्तमान काल में बदलें)

(4) गाँव के गाँव उजड़ गये थे (भविष्यतकाल में बदलें)

(5) इसे मैं सहन नहीं कर सकता। (भविष्यतकाल में बदलें)

(6) जंगल के बाहर एक पहरेदार नियुक्त होगा। (भूतकाल में बदलें)

(7) वह उँगलियों की माला पहनेगा। (भूतकाल में बदलें)

बाबा साहब अम्बेडकर

जिस व्यक्ति ने अपना समस्त जीवन समाज के एक विशेष वर्ग को ऊपर उठाने में लगाया जो निम्न समझा जाता था और सब ओर से उपेक्षित था। जिसने पग-पग पर जातिगत भेदभाव का दृढ़ता से सामना किया और अपने मन में सामाजिक भेदभाव को मिटाने का दृढ़-संकल्प किया। वह व्यक्ति अन्य कोई नहीं, बाबा साहब अम्बेडकर थे। उनके कठिन परिश्रम, अध्यवसाय, कार्यक्षमता तथा समुन्नत जीवन ने समाज को यह दिखा दिया कि मनुष्य किस प्रकार सामाजिक भेदभाव तथा रूढ़ियों का डटकर सामना करके ऊपर उठ सकता है।

मध्य प्रदेश में इन्दौर के निकट एक नगर है ''मऊ''। इसी मऊ के महार परिवार में 14 अप्रैल सन् 1891 को श्री राम जी राव के घर एक शिशु का जन्म हुआ। पिता ने अपने इस पुत्र का नाम रखा भीम राव। माता तो तभी चल बसी जब भीमराव केवल पाँच वर्ष के बालक थे।

पिता राम जी राव एक सैनिक स्कूल में प्रधानाध्यापक थे। महार जाति उन दिनों अछूत गिनी जाती थी। समझदार पिता यही समझते थे कि समाज में मनुष्य तभी सम्मान के साथ जी सकता है यदि वह सुशिक्षित हो। अत: वे अपने प्रिय पुत्र भीमराव को उच्च शिक्षा दिलाने के इच्छुक थे।

भीमराव को छुआछूत के कटु अनुभव विद्यार्थी जीवन से ही होने लगे थे। स्कूल में पढ़ते हुए उन्हें सब लड़कों से दूर रखा जाता था। अध्यापक उनकी अभ्यास-पुस्तिका और कलम तक नहीं छूते थे। वे संस्कृत पढ़ना चाहते थे लेकिन अध्यापक उन्हें संस्कृत पढ़ाने को तैयार न थे। विद्यालय में उन्हें दिन-भर प्यासा रहना पड़ता था।

एक बार बालक भीम विद्यालय से घर आ रहा था। तभी वर्षा होने लगी। वर्षा से बचने के लिए वह एक मकान के बरामदे में खड़ा हो गया। मकान के मालिक को जब बालक भीम की जाति का पता चला तो उसने उसे बस्ते सहित बरसात के कीचड़ में धकेल दिया।

अपने प्रति समाज के इस व्यवहार को देखकर बालक भीमराव का साहस टूटा नहीं बल्कि उनके व्यवहार में दृढ़ता आई। तभी से उन्होंने यह दृढ़ निश्चय कर लिया कि वह समाज के इस दुर्व्यवहार के प्रति संघर्ष करेगा। साधनों की कमी ने उनका मार्ग नहीं रोका। पिता की नौकरी समाप्त होने पर पूरा परिवार एक कोठरी में रहने लगा। बालक भीमराव के पढ़ने के लिए कोई स्थान नहीं था। भीमराव जल्दी सो जाते और आधी रात के बाद जागकर कोठरी के एक कोने में पढ़ते रहते। अथक परिश्रम के परिणामस्वरूप भीमराव ने सन् 1907 में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली। इन्हीं दिनों विद्यालय के एक अध्यापक ने इनके नाम के साथ अंबावदे गाँव के आधार पर ''अम्बेडकर'' शब्द जोड़ दिया।

भीमराव अम्बेडकर एलफिन्स्टन कॉलेज में पढ़ने लगे। सन् 1912 में बी.ए. परीक्षा उत्तीर्ण कर ली। आगे अध्ययन के लिए साधन नहीं थे। इन्ही दिनों बड़ौदा रियासत की ओर से कुछ योग्य छात्रों को विदेश जाकर अध्ययन करने के लिए 25 रुपये मासिक छात्रवृत्ति देने की घोषणा हुई। अम्बेडकर को अवसर मिल गया पर शर्त यह थी कि वापिस आने पर उन्हें 10 वर्षों तक रियासत की सेवा करनी पड़ेगी। अम्बेडकर साहब सन् 1913 से 1917 तक विदेश में रहे। वहाँ रहते हुए उन्होंने अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र और कानून का गहन अध्ययन किया। कोलम्बिया विश्वविद्यालय में पढ़ते समय उन्हें अनेक नये अनुभव हुए। वहाँ उन्हें सबसे प्यार और समानता का व्यवहार मिला। उन्होंने बहुत कम समय में डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त कर ली और फिर भारत लौट आए।

वापिस आने पर उन्हें बड़ौदा रियासत में सैनिक सचिव के पद पर नियुक्त किया गया। महाराजा का आदेश था कि स्टेशन पर उनका स्वागत किया जाये। परन्तु कोई कर्मचारी उन्हें लेने नहीं पहुँचा। किसी होटल में उन्हें स्थान न मिला। अन्त में उन्होंने एक सराय में शरण ली, पर जिस दिन सराय के मालिक को उनकी जाति का पता चला उसने भी उन्हें निकाल दिया।

सैनिक सचिव के पद पर कार्य करते हुए उन्हें अनेक कटु अनुभव हुए। चपरासी उनको पानी तक पिलाने को तैयार न होता। अन्त में उन्होंने तंग आकर वह नौकरी छोड़ दी और बम्बई चले गये।

बम्बई के सिडेनहम कॉलेज में उन्हें प्रोफ़ेसर के पद पर नियुक्त किया गया। किन्तु यहाँ भी छुआछूत का झंझट था। अन्त में तंग आकर उन्होंने यहाँ से भी त्याग-पत्र दे दिया।

बचपन से जिन विषम परिस्थितियों का डॉ. अम्बेडकर को सामना करना पड़ा, इससे उनका हृदय उद्विग्न हो उठा। आजीविका के रूप में वकालत का पेशा अपनाकर वे दलित वर्ग को छुआछूत के विरुद्ध संगठित करने में जुट गये। उन्होंने अपना पूरा जीवन समाज के इस वर्ग में जागृति उत्पन्न करने और उन्हें अपनें पैरों पर खड़ा करने में लगा दिया। इसके लिए उन्होंने 'बहिष्कृत हितकारिणी सभा' और 'बहिष्कृत भारत' नामक समाचार-पत्र निकाले। सन् 1927 में वे बम्बई विधानसभा के सदस्य मनोनीत हुए।

इस बीच महात्मा गाँधी तथा अन्य राष्ट्रीय नेताओं के सहयोग से उन्होंने इस सामाजिक भेदभाव को मिटाने के प्रयास शुरू कर दिये। लन्दन में आयोजित दो गोलमेज सम्मेलनों के अवसर

पर उन्होंने लोगों का ध्यान अछूतों की समस्या की ओर आकर्षित किया। वे जब वायसराय की कार्यकारी परिषद् के सदस्य बने, तब भी उन्होंने इस समस्या के समाधान का प्रयत्न किया।

सन् 1947 में भारत के स्वतन्त्र होने पर उन्हें संविधान सभा का सदस्य बनाया गया। स्वतन्त्रता के पश्चात् प्रथम राष्ट्रीय सरकार में डॉ॰ अम्बेडकर को केन्द्रीय मंत्रिमण्डल में कानून मंत्री का पद मिला। उन्हें संविधान सभा की उस समिति का अध्यक्ष बनाया गया जिसने संविधान का प्रारूप तैयार करना था। उन्होंने संविधान में अछूतों को समानता के अधिकार दिलाये तथा राष्ट्र की एकता के लिए कई तथ्य संविधान में सम्मिलित करवाये। उनके प्रयत्नों के परिणामस्वरूप भारतीय संविधान में जाति, धर्म, भाषा और स्त्री-पुरुष के आधार पर सभी प्रकार के भेदभाव समाप्त कर दिये गए। राष्ट्रीय एकता के लिए उन्होंने हिंदी को राष्ट्र-भाषा का स्थान दिलाया।

वे हिन्दू धर्म के विरोधी नहीं थे। वास्तव में उनकी लड़ाई उन बुराइयों से थी जो मनुष्य ने धर्म में उत्पन्न कर दी हैं। बौद्ध धर्म को वे इसलिये पसन्द करते थे क्योंकि वह समानता पर आधारित है। इसीलिए अन्त में नागपुर में आयोजित विशाल बौद्ध धर्म दीक्षा समारोह में उन्होंने बौद्ध धर्म को अंगीकार कर लिया था।

डॉ. अम्बेडकर इसलिये महान् हैं क्योंकि उन्होंने समाज के उपेक्षित वर्ग को समानता का अधिकार दिलाया है। उन्हीं के प्रयासों से समाज के इस वर्ग को सभी क्षेत्रों, स्कूलों, गाड़ियों, होटलों, तीर्थों, मन्दिरों में समानता के अधिकार प्राप्त हुए। अब सरकारी नौकरियों और चुनाव क्षेत्रों में उनके लिए स्थान आरक्षित हैं।

डॉ. अम्बेडकर के जीवन को देखकर यही सिद्ध होता है कि कोई भी व्यक्ति जन्म से नहीं बल्कि कर्म से महान् बनता है। कर्म करते रहने से व्यक्ति किसी भी उच्च स्तर तक पहुँच सकता है।

लगभग तीस वर्षों तक देश के क्षितिज पर चमकने वाला यह नक्षत्र 6 दिसम्बर सन् 1956 को सदा के लिए विलीन हो गया। परन्तु इसका प्रकाश शताब्दियों तक करोड़ों पीड़ित, शोषित एवं दलित वर्ग के लोगों का मार्ग प्रशस्त करता रहेगा।

अभ्यास

(क) भाषा बोध

(i) शब्दार्थ :-

समस्त	= सम्पूर्ण	उपेक्षित	= जिसकी उपेक्षा की गई हो
दृढ़ संकल्प	= पक्का निश्चय	परिश्रम	= मेहनत
कटु	= कड़वा	आजीविका	= रोज़ी या पेट भरने का धन्धा
पीड़ित	= सताया हुआ	दलित	= दबाया हुआ

(ख) विषय बोध

(i) इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(क) बाबा अम्बेडकर का जन्म कब, कहाँ और किसके घर हुआ?

(ख) इनकी प्रारम्भिक शिक्षा कहाँ हुई?

(ग) सामाजिक भेदभाव को मिटाने के लिए इनका क्या योगदान रहा?

(घ) इन्होंने कौन-कौन से समाचार-पत्रों में काम किया?

(ii) इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें :-

(क) बाबा साहब अम्बेडकर को 'अछूतों का मसीहा' क्यों कहा जाता है लगभग 50 शब्दों में उत्तर लिखो।

(ख) छुआछूत को मिटाने के लिए बाबा साहब का क्या योगदान रहा?

(ग) व्यावहारिक व्याकरण

(i) शुद्ध करके लिखें :-

परिशरम = ________ दरीदरता = ________

संसकृत = ________ छातरवृति = ________

जागरति = ________ आकरषित = ________

(ii) भाववाचक संज्ञा बनायें :-

एक = ________ समान = ________

महान = ________ स्वतंत्र = ________

(iii) विशेषण बनावें :-

परिवार = ________ शिक्षा = ________ परिश्रम = ________

समाज = ________ आधार = ________ अनुभव = ________

आरक्षण = ________ आयोजन = ________ धर्म = ________

शोषण = ________

(iv) सुशिक्षित में 'सु', दुर्व्यवहार में 'दुर्' तथा विलीन में 'वि' उपसर्ग है। अब 'सु', 'दुर्' तथा 'वि' उपसर्ग से पाँच नये शब्द बनायें:-

________ ________ ________

________ ________

(v) समस्त पद बनायें :-

मंत्रियों का मण्डल = ________ कानून का मंत्री = ________

संविधान की सभा = ________ परिषद् के सदस्य = ________

बुद्ध का धर्म	= ________	स्त्री और पुरुष	= ________
अभ्यास की पुस्तिका	= ________	राष्ट्र की भाषा	= ________
महान है जो राजा	= ________		

(vi) (1) **संधि करें :-**

सम् + विधान	= ________	सम + कल्प	= ________
सम् + पूर्ण	= ________	सम + उन्नत	= ________
सम् + तोष	= ________		

(2) संधि विच्छेद करें :-

प्रधानाध्यापक	= ________	व्यवहार	= ________
परीक्षा	= ________	विद्यालय	= ________
दुर्व्यवहार	= ________	अध्यवसाय	= ________
शताब्दी	= ________	संगठित	= ________

(vii) **विराम चिह्न लगाएँ :-**

सैनिक सचिव के पद पर रहते हुए उन्हें अनेक कटु अनुभव हुए चपरासी तक उनके हाथों से फाइलें लेने में कतराते थे उन्हें पानी तक नहीं मिलता था अंत में तंग आकर उन्होंने नौकरी छोड़ दी और बम्बई चले गए

(viii) **इन वाक्यों में उचित योजक शब्द लगायें :-**

(1) वे संस्कृत पढ़ना चाहते थे ________ अध्यापक उन्हें संस्कृत पढ़ाने को तैयार न थे।

(2) उन्होंने दृढ़ निश्चय किया था ________ वे समाज के इस दुर्व्यवहार के प्रति संघर्ष करेंगे।

(3) वहाँ उन्हें सबसे प्यार ________ समानता का व्यवहार मिला।

(4) समाज में मनुष्य शिक्षा से ही सम्मान पा सकता है ________ वे अपने प्रिय पुत्र भीमराव को उच्च शिक्षा दिलाने के इच्छुक थे।

(5) वे बौद्ध धर्म को पसन्द करते थे ________ वह समानता पर आधारित है।

(6) डॉ.अम्बेडकर के जीवन को देखकर यही सिद्ध होता है ________ कोई भी व्यक्ति जन्म से नहीं, बल्कि कर्म से महान बनता है।

माँ का प्यार

पात्र

शिवाजी
मालवजी
तानाजी
दरबान

पहला दृश्य

स्थान : शिवाजी का शयन कक्ष

[एक सुसज्जित कमरे में शिवाजी एक पलंग पर सो रहे हैं। सामने भवानी का चित्र लटक रहा है। पास ही मालवजी हाथ में नंगी तलवार लिए हुए शिवाजी की हत्या करने के लिए तत्पर हैं। शिवाजी एक भयानक स्वप्न देखकर अचानक आँखें मलते हुए उठ बैठते हैं। मालवजी उन पर वार करता है। पीछे से तानाजी आकर उसका हाथ पकड़ लेते हैं। शिवाजी प्रेम भरी दृष्टि से तानाजी की ओर देखते हैं।]

शिवाजी : (बालक की वीरता पर आश्चर्य करते हुए) तुम कौन हो वत्स?
बालक : (वीरतापूर्वक) मेरा नाम मालवजी है।
शिवाजी : (गंभीर स्वर में) मालवजी! जानते हो, इस अपराध के लिए क्या दंड भोगना होगा?
मालवजी : (निर्भय होकर) मृत्यु!
शिवाजी : मृत्यु-दंड पाने से पहले तुमको मुझे एक बात बतानी होगी।
मालवजी : वह क्या?

शिवाजी : तुम्हारी बातों और चाल-ढाल से जान पड़ता है कि तुम वीर-पुत्र हो, सत्यवादी हो। इस लिए मुझे आशा है कि तुम झूठ न बोलोगे।

मालवजी : जो बात सच है, उसे मैं अवश्य बता दूँगा। इसमें छिपाने की क्या बात है!

शिवाजी : वीर पुत्र! मुझे मारकर क्या मराठा साम्राज्य के मालिक बनना चाहते हो?

मालवजी : नहीं।

शिवाजी : फिर क्या मेरे बैरियों ने तुम्हें मुझे मारने के लिए भेजा है?

मालवजी : हाँ।

शिवाजी : क्यों? क्या मैंने कभी तुम्हें हानि पहुँचाने की चेष्टा की है? क्या मैंने कभी हिंदुत्व की आन पर धब्बा लगाया है? क्या मैंने किसी को धोखा दिया है?

मालवजी : महाराष्ट्र-कुल-भूषण! यह सब कुछ नहीं।

शिवाजी : फिर क्या बात है?

मालवजी : यदि आप पूछते ही हैं तो सुनिए। मेरे पिता आपकी सेना में सिपाही थे। मुगलों से लड़ते समय उन्होंने अपने देश और जाति की रक्षा के लिए अपने प्राण न्योछावर कर दिए। आज उनको मरे हुए दो वर्ष हो गए। इस समय घर में मैं और मेरी माता, केवल दो प्राणी हैं। आज तीन महीने से हम दोनों को पेट-भर अन्न मिलना दूभर हो रहा है। इस संसार में मनुष्य सब कुछ सहन कर लेता है, परंतु पेट की ज्वाला सहन करना बड़ा कठिन है। एक दिन मैं तो इसी विचार में बैठा था कि एक यवन ने आकर मुझसे कहा कि यदि तुम शिवाजी का वध कर दो तो मैं बहुत कुछ इनाम दूँगा। इसी लालच में पड़कर मैं आपकी हत्या करने के लिए यहाँ आया था; सौभाग्यवश आपकी आँख खुल गई।

शिवाजी : जब तुम्हें इतना कष्ट था, तब मेरे पास क्यों नहीं आए?

मालवजी : महाराष्ट्र नरेश! प्रजापति होकर आपके मुख से ये शब्द शोभा नहीं देते। जिस सिपाही ने आपकी सेना में भर्ती होकर आपका नाम उज्ज्वल किया, उसके बाल-बच्चों की देखरेख करना आपका कर्त्तव्य है।

शिवाजी : (बालक की वीरता मन में सराहते हुए दिखावटी रोब से) तानाजी! इस बालक को ले जाकर जेलखाने में बंद कर दो। कल इसे मृत्यु-दंड दिया जाएगा।

मालवजी : मृत्यु-दंड पाने से पहले मैं एक बात की भीख माँगता हूँ।

शिवाजी : वह क्या?

मालवजी : मरने से पहले मैं अपनी पूजनीय माता का एक बार दर्शन करना चाहता हूँ।

शिवाजी : यदि तुम अपनी माता का दर्शन करके न लौटे तब?

मालवजी : मैं वीर-पुत्र हूँ। झूठ बोलकर मृत्यु से बचना नहीं चाहता। प्रतिज्ञा करता हूँ, मैं एक घंटे में माता का दर्शन करके अवश्य लौट आऊँगा।

शिवाजी : (बालक की वीरता की मन में सराहना करते हुए) अच्छा; जाओ। यही देखना है। (मालवजी का प्रस्थान)

शिवाजी : ओह! इस बालक में वीरता कूट-कूट कर भरी है। साथ ही अपनी माता का भक्त भी है। ऐसे ही बालक अपने माता-पिता की लाज रखते हैं। तानाजी तुम्हारा क्या विचार है?

तानाजी : महाराज! आप क्या कहते हैं। मैं तो इसकी वीरता और साहस पर मुग्ध हूँ।

शिवाजी : तानाजी! जानते हो, मैं इस बालक के साथ क्या व्यवहार करूँगा?

तानाजी : नहीं महाराज।

शिवाजी : मैं इसकी परीक्षा लेने के पश्चात् इसे मृत्यु-दंड से मुक्त करके अपनी सेना में भर्ती करूँगा। मेरा अनुमान है कि मातृभूमि की सेवा में यह कोई कसर नहीं उठा रखेगा।

तानाजी : घातक के साथ इतनी दया? धन्य हैं।

शिवाजी : तानाजी! मारने वाले से बचाने वाले में अधिक शक्ति होती है। आज तुमने मेरी जान बचाई। इसलिए मैं तुम्हारा आभारी रहूँगा।

तानाजी : महाराज! आप यह क्या कहते हैं? मैं तो आपका दास हूँ। स्वामी की रक्षा करना दास का कर्त्तव्य है। इसमें आभारी होने की क्या बात है?

शिवाजी : तानाजी, तुम धन्य हो। तुम्हारे जैसे सेनानायकों पर भारतमाता गर्व करती है। अच्छा, थोड़ी देर विश्राम करो।

तानाजी : (प्रणाम करता है) जो आज्ञा महाराज। (प्रस्थान)

दूसरा दृश्य

[स्थान : शिवाजी के दुर्ग का कमरा। समय: दोपहर]

शिवाजी : (तानाजी की ओर मुँह फेरकर) तानाजी, न जाने क्यों मेरे हृदय में उस बालक के प्रति अगाध प्रेम है। जब से वह मेरे सामने से गया है, तब से मैं उसी का स्वप्न देख रहा हूँ।

तानाजी : महाराज! यह उसकी वीरता और साहस का फल है।

शिवाजी : तुम सच कहते हो। मैं उसकी वीरता पर मुग्ध हूँ। इतनी छोटी अवस्था और इतना साहस! जिस शिवाजी के नाम से मुगल सेना काँपती है, उसके सामने एक बालक का इतना साहस!

तानाजी : इसमें भी क्या कोई संदेह है?

दरबान : (प्रवेश कर) महाराज! एक बालक आपसे मिलना चाहता है।

शिवाजी : उसे बुला लाओ।

[दरबान के साथ मालवजी का प्रवेश]

मालवजी : महाराज! आपका अपराधी मृत्यु-दंड पाने के लिए प्रस्तुत है।

शिवाजी : वीर-पुत्र! तुम इतनी जल्दी कैसे आ गए?

मालवजी : महाराज! आपसे विदा होकर मैं घर पहुँचा। माता बड़ी देर से मेरी प्रतीक्षा कर रही थी। देखते ही उन्होंने मुझे छाती से लगा लिया। उस समय मैंने सोचा कि मैं उनसे सारा भेद कह दूँ। परंतु मेरी हिम्मत न पड़ी। कायरता से नहीं वरन् भय से कि यदि मैं सारी बातें उनसे कह दूँगा तो वह मुझे आप तक न आने देंगी और मैं अपनी प्रतिज्ञा का पालन न कर सकूँगा। अब मैं आपकी सेवा में उपस्थित हूँ। आप जो चाहें, कर सकते हैं; परंतु मरने से पहले मैं एक बात की भिक्षा और माँगता हूँ।

शिवाजी : कहो, वह कौन-सी बात है?

मालवजी : मेरी माँ की देख-रेख का समस्त भार आप अपने ऊपर ले लीजिए।

शिवाजी : वीर पुत्र! तुम सचमुच क्षत्रियपुत्र हो। शिवाजी वीरों का आदर करता है, उनकी हत्या नहीं करता। अब तक मैं तुम्हारी परीक्षा ले रहा था। वत्स! तुम मेरी परीक्षा में सफल हुए। जाओ, मैं तुम्हारा अपराध क्षमा करता हूँ।

मालवजी : (शिवाजी के पैरों पर गिरकर) आप धन्य हैं।

शिवाजी : (मालवजी को छाती से लगाकर) वीर-पुत्र! जिस प्रकार तुम अपनी माता के दुख से दुखी होकर व्याकुल हो रहे हो, उसी प्रकार मैं भी दुखी हूँ। रात-दिन मैं इसी चिंता में रहता हूँ कि किस प्रकार मैं भारतमाता का दुख दूर करूँ।

मालवजी : महाराज! यह शरीर आपका है। आपने मुझे जीवनदान दिया है। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि जब तक इस शरीर में जान है, मैं कभी मातृभूमि की सेवा से पीछे न हटूँगा।

शिवाजी : वीरपुत्र! मैं तुमसे यही आशा करता हूँ।

पटाक्षेप

अभ्यास

(क) भाषा-बोध

(i) शब्दार्थ

शयन कक्ष =	सोने का कमरा	सुसज्जित =	सजाया हुआ
वत्स =	पुत्र	साम्राज्य =	विशाल राज्य
चेष्टा =	प्रयास, कोशिश	आन =	मर्यादा, इज़्ज़त
दूभर =	कठिन, मुश्किल	यवन =	विदेशी

पेट की ज्वाला = भूख		नरेश	=	राजा
प्रस्थान =	जाना	घातक	=	हमला करने वाला
आभारी =	उपकार को मानने वाला	पटाक्षेप	=	पर्दे का गिरना

(ii) इन शब्दों और मुहावरों के अर्थ लिखते हुए वाक्यों में प्रयोग करें :-

मृत्यु-दण्ड ______ ______________________

सत्यवादी ______ ______________________

कसर न उठा रखना ______ ______________________

प्राण न्योछावर करना ______ ______________________

पेटभर अन्न ______ ______________________

पेट की ज्वाला ______ ______________________

उज्ज्वल ______ ______________________

आभारी ______ ______________________

अगाध ______ ______________________

हिम्मत न पड़ना ______ ______________________

जीवन दान ______ ______________________

आँखें खुलना ______ ______________________

वीरता कूट-कूटकर भरी होना______ ______________________

(ख) विषय-बोध

(i) इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(क) मालवजी कौन था?

(ख) मालव जी शिवाजी को क्यों मारना चाहता था?

(ग) दिखावटी रोष किसने किया और कब किया?

(घ) बालक ने कौन-सी प्रतिज्ञा की और क्यों की?

(ङ) मालवजी के चले जाने पर शिवाजी ने तानाजी से क्या कहा?

(च) बालक ने अपनी माँ से मृत्यु-दण्ड की बात क्यों नहीं बतायी?

(छ) शिवाजी ने बालक को क्षमा क्यों किया?

(ज) जीवन दान मिलने पर बालक ने शिवाजी को कौन-सा वचन दिया?

(ii) ये वाक्य किसने, किससे कहे :-

		किसने कहा	किससे कहा
(क)	आज उनको मरे हुए दो वर्ष हो गये।	______	______
(ख)	मैं तो इसकी वीरता और साहस पर मुग्ध हूँ।	______	______
(ग)	इतनी छोटी अवस्था में इतना साहस!	______	______

(घ) मुझे आशा है कि तुम झूठ नहीं बोलोगे। ________ ________

(ङ) घातक के साथ इतनी दया? ________ ________

(च) मारने वाले से बचाने वाले में अधिक शक्ति होती है। ________ ________

(छ) आपका अपराधी मृत्यु-दण्ड पाने के लिए प्रस्तुत है। ________ ________

(ज) कायरता से नहीं वरन भय से। ________ ________

(झ) आपने मुझे जीवनदान दिया है। ________ ________

(ग) व्यावहारिक व्याकरण

(i) विपरीतार्थक शब्द लिखें :-

अपराध = ________

दण्ड = ________

मृत्यु = ________

झूठ = ________

मालिक = ________

सौभाग्य = ________

कर्त्तव्य = ________

सत्यवादी = ________

वीर = ________

कृतज्ञ = ________

संदेह = ________

आदर = ________

उपस्थित = ________

आशा = ________

वैरी = ________

(ii) पर्यायवाची शब्द लिखें :-

तलवार = ________, ________

वार = ________, ________

मालिक = ________, ________

वैरी = ________, ________

ज्वाला = ________, ________

लालच = ________, ________

नरेश = ________, ________

जेलखाना = ________, ________

माँ = ________, ________

माता-पिता = ________, ________

संदेह = ________, ________

भेद = ________, ________

अपराध = ________, ________

(iv) नीचे एक ओर कुछ विशेषण शब्द दिये हैं, दूसरी ओर विशेष्य। उपयुक्त विशेषण के साथ विशेष्य जोड़कर लिखें :-

विशेषण	विशेष्य	विशेषण	विशेष्य
अगाध	साम्राज्य	समस्त	साहस
भयानक	प्राण	मराठा	स्वप्न
दिखावटी	प्रेम	अपने	भार
छोटी	कठिन	बड़ा	अवस्था
इतना	रोष		

(v) समासों का विग्रह करें :-

मृत्यु-दण्ड ________

कुल भूषण ________

वीर पुत्र ________

महाराज ________

सेनानायक ________

शयनकक्ष ________

प्रेमभरी ________

(vi) संधि करें :-

वि + आकुल = ________

वि + अवहार = ________

उत् + ज्वल = ________

परि + ईक्षा = ________

सम् + सार = ________

नि : + भय = ________

(vii) निम्नलिखित में से प्रत्यय छाँटकर अलग लिखें :-

वीरता = ________ पूजनीय = ________

हिन्दुत्व = ________ कायरता = ________

आभारी = ________

पाठ-13

नवयुवकों के प्रति

हे नवयुवाओ ! देश भर की दृष्टि तुम पर ही लगी,
है मनुज जीवन की तुम्हीं में ज्योति सबसे जगमगी।
दोगे न तुम तो कौन देगा योग देशोद्धार में?
देखो, कहाँ क्या हो रहा है आजकल संसार में।।
जो कुछ पढ़ो तुम कार्य में भी साथ ही परिणत करो,
सब भक्तवर प्रह्लाद की निम्नोक्ति को मन में धरो -
''कौमार में ही भागवत धर्माचरण कर लो यहाँ
नर-जन्म दुर्लभ और वह भी अधिक रहता है कहाँ।।
दो पथ, असंयम और संयम हैं तुम्हें अब सब कहीं।।
पहला अशुभ है, दूसरा शुभ है इसे भूलो नहीं।''
पर मन प्रथम की ओर ही तुम को झुकावेगा अभी,
यदि तुम न सम्भलोगे अभी तो फिर ने संभलोगे कभी।।

अभ्यास

(क) भाषा-बोध

(i) **शब्दार्थ**

परिणत	=	बदलना
भक्तवर	=	भक्तों में श्रेष्ठ
देशोद्धार	=	देश का उद्धार करना
योग	=	सहयोग
कौमार	=	कुमार/यौवन की अवस्था
निम्नोक्ति	=	नीचे लिखी उक्ति या कथन
धर्माचरण	=	धर्म के अनुसार आचरण/व्यवहार करना
धरो	=	धारण करना

(ख) विषय-बोध

(i) **इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-**

(क) इस कविता के कवि का नाम लिखें।

(ख) 'नवयुवकों के प्रति' कविता किन्हें सम्बोधित की गई है?

(ग) 'जो कुछ पढ़ो तुम कार्य में भी साथ ही परिणत करो।' इस काव्य-पंक्ति का अर्थ लिखें।

(घ) नवयुवकों के सम्मुख कौन-से दो पथ हैं? उन्हें किस पथ का चुनाव करना चाहिए?

(ii) इन काव्य-पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या करें :-

दो पथ असंयम ----------------संभलोगे कभी।

(iii) नवयुवक देश के उत्थान में क्या-क्या योगदान दे सकते हैं? चार-पाँच वाक्यों में उत्तर दें।

(ग) व्यावहारिक व्याकरण

(i) इन शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखें :-

मनुज = ________, ________

ज्योति = ________, ________

संसार = ________, ________

पथ = ________, ________

(i) 'अ' लगाकर विपरीत शब्द बनायें :-

अ + संयम = असंयम

अ + शुभ = ________

अ + धर्म = ________

अ + विश्वास = ________

(iii) देश + उद्धार, धर्म + आचरण इसी प्रकार नये शब्द बनायें :-

अ + उ = ओ , अ + आ = आ

निम्न + उक्ति = ______ कर्म + अनुसार = कर्मानुसार

____ + _____ = ______ ____ + _____ = ______

पाठ-14

यूटा सागा

चौदह वर्षीय यूटा सागा अपने माता-पिता की इकलौती संतान है। वह उनके साथ जापान के मियागी प्रान्त के तटवर्ती इलाके के सेंदई शहर में रहता है। माँ अयूमी ऑसूगा यूनिवर्सिटी में प्रोफ़ेसर है। सम्पन्नता की चकाचौंध के बावजूद वह धर्म और देश से गहरा लगाव रखती है तो पिता ओसामु दाज़ाई फुकुशिमा प्रान्त के फुकुशिमा न्यूक्लियर पावर प्लांट में कार्यरत हैं जो स्वभाव से विनम्र, ईमानदार और देश भक्त हैं।

यूटा माँ को पुकारता है, ''माँ देखो टेलीविज़न हिल रहा है, घर की हर वस्तु हिल रही है।''

''बेटा, पूरा घर ज़ोर से हिल रहा है, ये तो भूकम्प के झटके हैं..........''

यूटा कसकर माँ के हाथों को पकड़ लेता है। तभी टेलीविज़न पर 'टोक्यो' के 'सुनामी वार्निंग सेंटर' से सुनामी से संबंधित चेतावनी जारी होने लगती है कि तभी बिजली चली जाती है। टेलीविज़न बंद हो जाता है।

''बेटा, जल्दी से अपना रेडियो ले आओ।'' अयूमी यूटा से कहती है। यूटा रेडियो ले आता है। रेडियो पर सुनामी की चेतावनी दी जा रही है - ''इस भूकम्प की तीव्रता 8.9 रिएक्टर पैमाने पर है। भूकम्प जानलेवा लहरों का कारण बनने वाला है। सुनामी वार्निंग सेंटर को सुनामी की संभावना पता करने में तीन मिनट का समय लगा है तो तटीय इलाकों में रहने वालों के पास केवल 12 मिनट हैं- इस तबाही से बच निकलने के।''

चेतावनी जारी होते ही अयूमी ऑसूगा और यूटा सागा सतर्क हो जाते हैं। माँ को खींचते हुए यूटा कहता है ''माँ, चलो जल्दी से घर से बाहर चलो। सुनामी से बचने के लिए हमारा घर सुरक्षित नहीं है। हमें किसी ऊँची इमारत पर जाना होगा।''

यूटा व माँ घर से बाहर सड़क पर बेतहाशा भागे जा रहे हैं - सबसे ऊँची जूनियर हाई स्कूल की इमारत की तरफ। सभी लोग घरों से बाहर निकल कर भाग रहे हैं उसी ओर।

यूटा और अयूमी स्कूल पहुँच कर देखते हैं कि स्कूल की सीढ़ियाँ उन बुजुर्गों से अटी पड़ी हैं जो ऊपर नहीं चढ़ पा रहे हैं। कुछ थक कर वहीं बैठ गए हैं और कुछ पड़े-पड़े गहरी साँस ले रहे हैं। जब नीचे की मंज़िल जान बचाने आए लोगों से पूरी तरह भर गई तो सीढ़ियों पर धक्का-मुक्की तेज़ हो गई। एक औरत सीढ़ियों पर गिर पड़ी और वह यूटा सागा का हाथ थाम कर बोलती है –

''प्लीज कम से कम मेरे बच्चे को तो ले जाओ।''

यूटा को कुछ नहीं सूझता वह औरत का बच्चा गोद में थामता है और माँ सहित तीसरी मंज़िल पर पहुँच जाता है। अब वे सुरक्षित हैं। यूटा बच्चे को अपनी माँ को पकड़ाने लगता है तो बच्चा मुस्कुरा देता है। यह देखकर यूटा की आँखों से आँसू छलक आते हैं।

''माँ, मैं इसकी माँ को भी लेकर आता हूँ, इसे भी माँ की ज़रूरत है............''

''लेकिन बेटा.....अगर.......सुनामी..........''

''माँ, ज़िन्दगी और मौत के बीच केवल तीन मंज़िलों का फर्क है.........मैं अभी लौटा..........''

यूटा पूरी शक्ति व स्फूर्ति से भीड़ को चीरता हुआ नीचे पहुँचता है। बेहद कमज़ोर और शायद बीमार औरत जीने की चाह लिए उठने का भरसक प्रयत्न कर रही थी। यूटा पूरी शक्ति से उस औरत को पकड़ता है और खींचता है। उस औरत को लेकर वह सीढ़ियाँ चढ़ता ही है कि सुनामी की लहरें वहाँ पहुँच जाती हैं इससे पहले कि सुनामी उन्हें अपनी आगोश में लेती वे सुरक्षित ऊपर पहुँच जाते हैं।

बच्चा अपनी माँ की गोद में है वह और न जाने कितनी बार यूटा का धन्यवाद करती है।

सभी लोग डरे, सहमे महाप्रलय का मंजर देख रहे हैं। सुनामी की उठी लहरों ने तटों को लाँघ कर रिहायशी इलाकों में सब कुछ तबाह कर दिया। कर्मठता के पर्याय जापानियों को 30 फुट ऊँची लहरों ने समझने और संभलने का अवसर ही नहीं दिया। पानी ने सब कुछ छीन लिया। सेंदई एयरपोर्ट पानी में डूब गया। हवाई जहाज पानी में बह गए। एक पूरी रेल और उसमें बैठे लोग लापता हो गए। कारें, विमान और लोग एक साथ बहे जा रहे हैं। पल-पल पानी में डूबता शहर दिखाई दे रहा है।

कहाँ तो यूटा सागा को आज अपना जन्मदिन मनाना था और कहाँ वह प्रकृति का कहर देख रहा है।

पानी उतरने पर अगले दिन बचाव कर्मियों ने स्कूल की इमारत में सुरक्षित सभी लोगों को अस्थायी शरण-स्थल पहुँचा दिया।

उसी दिन यूटा के पिता ओसामु दाज़ाई अपने परिवार को खोजते हुए आए तो उनका घर और आसपास के सभी घर, इमारतें मलबे में तबदील हो चुके थे। भूचाल से क्षतिग्रस्त इलाका बर्बादी की कहानी बयाँ कर रहा था।

ओसामु दाज़ाई कई शरण-स्थलों में पत्नी और बेटे को तलाशते हैं। लाखों बेघर लोग भोजन, पानी और रहने की जगह व ऊर्जा की कमी से जूझ रहे थे।

आखिर एक राहत शिविर में यूटा की नज़र पिता की ढूँढ़ती निगाहों से टकरायी तो वह भाग कर पिता से लिपट कर फूट-फूट कर रोने लग पड़ा। अयूमी भी भीगी पलकों से पति से मिलती है। पति-पत्नी के पास बातें करने को शब्द ही नहीं हैं।

''पिता जी, अब आप कहीं नहीं जायेंगे। हमारे पास ही रहेंगे.........।'' यूटा ने रुँधे गले से कहा।

''बेटा, ये मेरे धैर्य और संकल्प की परीक्षा है। एक तरफ मेरा परिवार है तो दूसरी तरफ मेरा देश.........''

''देश!........ मैं कुछ समझी नहीं।'' - अयूमी पति की ओर देखते हुए कहती है।

''अयूमी, शायद आप लोगों को पता नहीं कि फुकुशिमा न्यूक्लियर पावर प्लांट में विस्फोट हो गया है जिससे रेडिएशन का रिसाव हो रहा है।''

यूटा सागा पिता जी की बातें बड़े ध्यान से सुनते हुए पूछता है, ''ये कैसे हो गया पिता जी?.........''

''बेटा, भूकम्प और उसके बाद आई सुनामी की हाहाकारी लहरों के कारण न्यूक्लियर प्लाँट के रिएक्टरों के कूलिंग सिस्टम की बिजली आपूर्ति रुक गई थी जिससे परमाणु ईंधन को ठंडा नहीं रखा जा सका और रिएक्टरों के अंदर तापमान तेज़ी से बढ़ने लगा जिससे उनमें विस्फोट हो गया जिससे रेडिएशन सामान्य से कई गुणा निकलने लगा। इससे हमारे देश को तो खतरा है ही साथ ही अन्य देशों को भी खतरा है।''

पिता जी थोड़ा साँस लेकर फिर बोलने लगते हैं - ''इससे कई प्रकार की बीमारियाँ फैल सकती हैं जैसे त्वचा का जलना, ठंड लगना, आँखों में जलन, बुखार, अस्थमा, खाँसी, बोन तथा फेफड़ों का कैंसर हो सकता है। इसी कारण फुकुशिमा के पाँच लाख लोग शहर छोड़ चुके हैं। रेडिएशन से बचाव के लिए एक लाख अस्सी हज़ार लोगों को शहर से 20 कि.मी. दूर राहत शिविर में पहुँचाया गया है।''

''पिता जी, क्या प्लांट पर आपके साथी अब भी काम कर रहे हैं?'' - यूटा बड़ी उत्सुकता से पूछता है।

''हाँ बेटा, प्लांट पर हो रहे रेडिएशन से देश और दुनिया को खतरे से बचाने के लिए फुकुशिमा संयंत्र में 200 कर्मचारी जान जोखिम में डालकर रेडिएशन कम करने में जुटे हैं और चार शिफ्ट में 50-50 की टीम काम कर रही है। मुझे पता है हम एक ऐसे मिशन पर हैं जहाँ से शायद ही सकुशल लौटकर परिवार से मिल सकें अगर मिले भी तो शायद बुरी तरह से रेडिएशन का शिकार होकर।''

तभी अयूमी पति का हौसला बढ़ाती है -

''आप तो जानते ही हैं कि जापानी भाषा में फुकुशिमा का शाब्दिक अर्थ होता है - भाग्यशाली द्वीप और फिर वहाँ आई मुसीबत को दूर करने वाले आप लोग तो और भी भाग्यशाली हुए न....... हमारे लिए ये आपदाएँ एक अवसर की तरह रही हैं जिन्होंने हमें फिर उठ खड़े होने के लिए प्रेरित किया है। .... ये आपदाएँ हमारे राष्ट्रीय चरित्र को नहीं तोड़ सकतीं। यही तो हमारी सबसे बड़ी सम्पत्ति है .... देश प्रेम है.......''

तभी यूटा भी नम आँखों से पूरे जोश से पिता का साहस बढ़ाता है -

''पिता जी आप प्लांट पर ज़रूर जाइए......... ज़रूर जाइए......... क्योंकि परिवार से बड़ा देश है......... और देश से बड़ी दुनिया .... आप जाइए पिता जी......... आप जाइए......... आप तो मेरे न्यूक्लियर निंजा (परमाणु योद्धा) .... हैं .... न्यूक्लियर निंजा..........''

अभ्यास

(क) भाषा-बोध

शब्दार्थ :-

चकाचौंध	=	आँखों का झपकना, चुँधियाने वाली चमक
भूकम्प	=	भूचाल
बेतहाशा	=	अचानक और वेगपूर्वक, बिना सोचे समझे
आगोश	=	लपेट
महाप्रलय	=	संपूर्ण सृष्टि का नाश
कर्मठता	=	काम में कुशलता, कर्मनिष्ठता
क्षतिग्रस्त	=	हानिप्राप्त
संभावना	=	हो सकने का भाव, मुमकिन होना।
संयंत्र	=	यंत्रों, औज़ारों का समूह, कारखाना
भाग्यशाली	=	खुशकिस्मत

(ख) विषय-बोध

(i) इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(क) यूटा सागा अपने माता-पिता के साथ कहाँ रहता है?

(ख) यूटा सागा के माता-पिता का क्या नाम है तथा वे क्या कार्य करते हैं?

(ग) रेडियो पर सुनामी की क्या चेतावनी जारी होती है?

(घ) सुनामी से बचने के लिए यूटा सागा व माँ कहाँ जाते हैं?

(ङ) स्कूल पहुँच कर यूटा सागा और अयूमी ऑसूगा क्या देखते हैं?

(च) ओसामु दाज़ाई अपने परिवार को कहाँ-कहाँ तलाशते हैं?

(छ) रेडिएशन से किस प्रकार की बीमारियाँ फैल सकती हैं?

(ज) देश और दुनिया को खतरे से बचाने के लिए फुकुशिमा संयंत्र में कितने कर्मचारी किस तरह से काम कर रहे थे?

(झ) फुकुशिमा का शाब्दिक अर्थ क्या होता है?

(ञ) यूटा प्लांट पर जाने के लिए अपने पिता का साहस कैसे बढ़ाता है?

(ii) इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें :-

(क) डरे-सहमे लोगों द्वारा देखे गए महाप्रलय (सुनामी) के मंजर का वर्णन करें।

(ख) फुकुशिमा न्यूक्लियर पावर प्लांट में विस्फोट कैसे हो गया?

(ग) अयूमी पति ओसामु दाज़ाई का हौसला कैसे बढ़ाती है?

(ग) व्यावहारिक व्याकरण

(i) इन वाक्यों में सम्बन्ध बोधक अव्ययों को रेखांकित करें :-

(1) तटीय इलाकों में रहने वाले लोगों के पास केवल 12 मिनट हैं।

(2) यूटा व माँ घर से बाहर सड़क पर बेतहाशा भागे जा रहे हैं।

(3) माँ, ज़िंदगी और मौत के बीच केवल तीन मंज़िलों का फर्क है।

(4) लोग सीढ़ियों से ऊपर नहीं चढ़ पा रहे हैं।

(5) यूटा सागा माँ सहित तीसरी मंज़िल पर पहुँच जाता है।

(ii) वाक्यों में प्रयोग करें :-

तटवर्ती ____________________

सतर्क ____________________

चेतावनी ____________________

विस्फोट ____________________

संकल्प ____________________

तबाही ____________________

ऊर्जा ____________________

(iii) एक वचन बनायें :-

सीढ़ियाँ = ____________

बुजुर्गों = ____________

बच्चे = ____________

बीमारियाँ = ____________

स्थलों = ____________

जापानियों = ____________

इलाकों = ____________

मंजिलों = ____________

इमारतों = ____________

आपदाएँ = ____________

लहरों = ____________

तटों = ____________

(iv) भाववाचक संज्ञा बनायें :-

विनम्र = ____________

गहरा = ____________

चढ़ना = ____________

थकना = ____________

कर्मठ = ____________

(v) विशेषण बनायें :-

धर्म = ____________

परिवार = ____________

राष्ट्र = ____________

प्रकृति = ____________

घर = ____________

अर्थ = ____________

चरित्र = ____________

शहर = ____________

(vi) पर्यायवाची शब्द लिखें :-

आँख = ____________

लहर = ____________

दुनिया = ____________

पानी	=	____________
सम्पत्ति	=	____________
हाथ	=	____________
बिजली	=	____________
तट	=	____________
पिता	=	____________
शक्ति	=	____________

(vii) **विपरीत शब्द लिखें :-**

सुरक्षित	=	____________
अस्थायी	=	____________
सम्पन्नता	=	____________
सामान्य	=	____________
ज़िन्दगी	=	____________
कमजोर	=	____________

(viii) **अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखें :-**

ऐसा स्थान जहाँ लोग शरण लेते हों	=	____________
चारों ओर समुद्र से घिरा भू-भाग	=	____________
बिना घर का	=	____________
देशानुरागी व्यक्ति	=	____________

(ix) **शुद्ध करें :-**

परिक्षा	=	____________
धनयवाद	=	____________
परमाणू	=	____________
शिवीर	=	____________
वसतु	=	____________

(x) **पढ़ो और समझो (हिंदी में प्रयुक्त होने वाले अंग्रेज़ी शब्द)**

यूनिवर्सिटी
प्रोफ़ेसर
टेलीविज़न
टीम
मिशन
कूलिंग सिस्टम

वार्निंग सेंटर

न्यूक्लियर पावर प्लांट

रिक्टर

रेडिएशन

शिफ्ट

बोन कैंसर

एयरपोर्ट

(ग) आत्मबोध

(i) आप भी अपने परिवार में यूटा के परिवार की तरह देश-प्रेम की भावना को प्रमुख रखें।

(ii) आप अपने देश में आने वाली प्राकृतिक आपदाओं से बचने के लिए क्या करेंगे?

(घ) रचना बोध

(i) प्राकृतिक आपदाओं की सूची बनायें।

(ii) जापान और जापानी संस्कृति की जानकारी एकत्रित करें।

साइंस सिटी

देश के आज़ाद होने के पश्चात् भारत के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू जी के समय से ही लोगों में वैज्ञानिक सोच उत्पन्न करने और समाज को भ्रमों से निकालने के प्रयत्न शुरू हो गये थे। उस समय बहुत-सी राष्ट्रीय प्रयोगशालायें स्थापित हुईं जिन्होंने भारत के विज्ञान एवम् तकनीकी के विकास में अहम् योगदान दिया। देश के विकास के लिये हर प्राणी में वैज्ञानिक सोच होना अनिवार्य है।

इसी दिशा में लोगों के ज्ञान में वृद्धि के लिये जालन्धर-कपूरथला सड़क पर, पंजाब और केन्द्र सरकार की ओर से संयुक्त रूप में 72 एकड़ भूमि में पुष्पा गुजराल साइंस सिटी स्थापित किया गया है। इसका शिलान्यास 17 अक्टूबर, 1997 को तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री इन्द्र कुमार गुजराल जी ने किया था। श्रीमती पुष्पा गुजराल एक समाजसेवी महिला थीं और श्री इन्द्र कुमार गुजराल की माता थीं। 19 मार्च 2005 को डायरैक्टर जनरल डां रघुबीर सिंह खण्डपुर की सरपरस्ती में इसे साधारण जनता के लिये खोल दिया गया।

दोआबा के कपूरथला शहर में 100 करोड़ की लागत से बना साइंस सिटी आज न सिर्फ पंजाब बल्कि पूरे देश के लोगों में वैज्ञानिक सोच पैदा करने के लिये अहम् भूमिका निभा रहा है। जब हम इसके मुख्य आकर्षणों की बात करते हैं तो सबसे पहले आता है स्पेस थियेटर (Space Theatre) का नाम । गोलाकार बना यह थियेटर अपनी तरह का खास थियेटर है। जिसके बाहर 25 लाख के करीब विभिन्न रंगों की टाइलों से ग्लोब बनाया गया है। इस थियेटर में आम थियेटर से 10 गुणा बड़ी स्क्रीन के ऊपर वैज्ञानिक फिल्में दिखाई जाती हैं। बायें, दायें और ऊपर स्क्रीन वाले इस थियेटर में एक सूई गिरने तक की आवाज़ से लेकर बादल गरजने की आवाज़ भी बहुत साफ़ सुनाई देती है।

इसी थियेटर में डिज़िटल प्लैनेटेरियम के माध्यम से बच्चों को ग्रहों, तारा मण्डल और मंदाकिनियों (Galaxy) के बारे में विस्तृत जानकारी दी जाती है। यहाँ एक एक ऐसी मशीन भी लगाई गई है जिसमें बैठकर आपको ऐसा लगेगा कि आप आकाश में उड़ रहे हैं। पर यह मशीन न तो

उड़ती है और न ही कहीं जाती है। यह सिर्फ अपनी जगह में झूलती है। इस मशीन को फ्लाइट सिम्यूलेटर (Flight Simulator) कहा जाता है।

फ्लाइट सिम्यूलेटर के साथ-साथ यहाँ पर एक अर्थ क्वेक सिम्यूलेटर (Earthquake Simulator) लगाया गया है। जहाँ पर बैठ कर आप को भूकंप के असली झटकों जैसा अहसास होगा। इस सिमूलेटर के सामने लगी स्क्रीन पर दिखाया जाता है कि अलग-अलग रिएक्टर पैमाने पर आप भूकंप को कैसे महसूस करते हैं। इस सिमूलेटर के बाहर लगे चित्रों में यह भी दर्शाया गया है कि एकदम भूकंप आते ही आपने क्या करना है। साइंस सिटी का थ्रीडी शो भी बेमिसाल है। विशेष किस्म की ऐनक से देखते हुए आपको ऐसा महसूस होगा जैसा फिल्म के अभिनेता स्क्रीन से बाहर आकर आपको छू रहे हैं।

साइंस सिटी में लेज़र की किरणों पर आधारित लेज़र शो भी दिखाया जाता है। आपको यह जानकर हैरानी होगी कि जिन किरणों का आप इस शो में आनंद लेते हैं उनका प्रयोग आँखों के उखड़ा हुआ रेटीना जोड़ने के लिये भी होता है। लेज़र की खोज 1960 में प्रसिद्ध इंजीनियर थोडर मेमाईन ने की थी। साइंस सिटी में साइंस एक्सपलोरियम नाम की इमारत में हमारे स्वास्थ्य के रहस्य को खोलती हुई एक "अमेजिग लीविंग मशीन" (Amaging Living Machine) नाम की एक गैलरी बनायी गई है। इस गैलरी के अन्दर दाखिल होते ही आपकी नज़र सबसे पहले 12 फुट ऊँचे दिल के एक मॉडल पर पड़ती है। इस दिल में दाखिल होते ही आपको दिल की धड़कन जैसी आवाज़ सुनाई देती है। इसके अतिरिक्त पारदर्शी मनुष्य के थियेटर में आपको मनुष्य शरीर के सारे अंगों की प्रक्रिया का पता चलेगा। यह पारदर्शी मनुष्य अपनी कहानी खुद कहता है। यहाँ पर सी.टी. स्कैन और ऑपरेशन (चीरफाड़) भी मॉडलों के जरिये आप खुद कर सकते हैं। एच.आई.वी. एड्स पर यहाँ एक अलग से गैलरी बनायी है, जिसमें इस बीमारी के लक्षणों और कारणों के बारे में विस्तारपूर्वक बताया गया है।

यहीं पर ही एक 'फन साइंस नाम' की गैलरी में विज्ञान के मूल सिद्धान्तों को मनोरंजक तरीके से समझाया गया है। यहाँ पर लगे वोरटैक्स (Vortex) की घूमन-घेरी में जाकर आपको एक अजीब तरह का अहसास होगा। आपको लगेगा कि जैसे आप घूम रहे हैं, असल में जिस जगह पर आप खड़े होते हैं वह घूम नहीं रही होती सिर्फ उसका इर्द-गिर्द ही घूमता है। इसके अतिरिक्त यहाँ पर एक तस्वीर में से और कई तरह की तस्वीरें भी बनती दिखाई गई हैं।

इसके बिल्कुल साथ वरचुअल रिएलटी गैलरी (Virtual Reality Gallery) भी है। यहाँ पर लगाई प्रदर्शनियों में दिखाई देती तितलियाँ सामने खड़े दर्शक की हिल-झुल के साथ हिलती हैं और ऐसे महसूस होता है जैसे ये आपके ऊपर आकर बैठ गई हों। इसके इलावा भी यहाँ पर बहुत ही मनोरंजक प्रदर्शनियों के जरिये बहुत कुछ सीखने को मिलता है। मेकअॅप के जरिये आप यहाँ सिर्फ दो मिनट में ही बूढ़े को जवान और जवान को बूढ़े बना सकते हैं।

साइंस सिटी में बनी एक झील के बीच में एक टापू बनाया गया है। जहाँ पर डायनासोर के 45 मॉडल बनाये हैं। इस डायनासोर पार्क के अन्दर जाते ही आपको ऐसा लगेगा कि यह डायनासोर

मॉडल आपको अपने साथ खेलने के लिए बुला रहे हैं। यहाँ पर लगे डायनासोर को तीन भागों में बाँटा गया है। (1) क्रेटेशियश (2) ट्रेशियश (3) जूरैसिक। यह माना जाता है कि डायनासोर का अन्त ज्वालामुखी फटने के कारण मौसम ठीक न होने के कारण हुआ था। इस सिद्धांत को दर्शाता ज्वालामुखी का बहुत बड़ा मॉडल भी बनाया गया है। जिसमें आवाज़ों के आधार पर हिलते-जुलते डायनासोर मॉडल भी लगाये गये हैं। इनके पास आकर आपको ऐसा लगेगा कि आप इनके साथ बातें कर रहे हैं।

साइंस सिटी का एक ऐसा भाग भी है, जहाँ पर सिर्फ सौर ऊर्जा का ही प्रयोग किया जाता है। यहाँ पर सूर्य शक्ति केन्द्र में रखी गई बैटरियाँ सौर ऊर्जा को एकत्र करके रखती हैं, इससे पता चलता है कि सूर्य न निकलने पर भी आप सौर ऊर्जा का प्रयोग कर सकते हैं। संगीतक कुर्सी पर बैठते ही यहाँ पर बारिश और एक मीठी-सी धुन सुनाई देती है। यह एक अद्भुत नज़ारा है, इसके नीचे खड़े हाथी की सूँड़ पर पानी डालते ही हाथी पानी को ऊपर गिराता है। ऐसी ही पनशक्ति केन्द्र में रणजीत सागर डैम मॉडलों के द्वारा समझाया गया है कि पानी से बिजली कैसे तैयार की जाती है। इसके अतिरिक्त परमाणु शक्ति केन्द्र में यह बताया गया है कि परमाणु शक्ति का उपयोग सिर्फ बम बनाने के लिये नहीं होता, इसका उपयोग हमारी भलाई के लिये भी होता है।

डिफेंस गैलरी (Defence Gallery) में मिग-23 रखा गया•है जो कि 1980 में बनाया गया था और 1981-82 में भारतीय वायु सेना को सौंपा गया था। इसे ऑप्रेशन बरासटैक और कारगिल की लड़ाई में भी प्रयोग किया गया था। यहाँ पर विजयन्ता टैंक भी रखा गया है जो भारत का बनाया गया एक स्वदेशी टैंक हैं। इसका प्रयोग 1971 की लड़ाई में किया गया था।

साइंस सिटी में एल-टी स्वाति हवाई जहाज़ भी रखा गया है यह जहाज़ पंजाब सरकार की ओर से साइंस सिटी को उपहार में दिया गया है। इसका प्रयोग जहाज़ चालकों को प्रशिक्षण देने के लिये किया जाता रहा है।

साइंस सिटी में बच्चों को टेलीस्कोप द्वारा रात के समय होने वाले आकाशीय परिर्वतनों को बड़े ही नज़दीक से दिखाया जाता है। बच्चे शाम को यहाँ पर चन्द्रमा और दूसरे ग्रहों को नज़दीक से देखते हैं।

स्पेस गैलरी में स्पेस के रहन-सहन और खान-पान की विस्तृत जानकारी दी जाती है इसके अलावा लाल ग्रह आदि के मॉडल भी यहाँ पर रखे गये हैं। पोलर सैटेलाइट लांचिंग विहेकल (Polar Sattelite Launching Vehicle) का मॉडल यहाँ पर उड़ान भरता हुआ दिखाई देता है।

एक साइंस ऑफ स्पोर्टस नाम की गैलरी भी बनायी गई है। इस गैलरी में खेलों के पीछे काम करते वैज्ञानिक सिद्धांतों को खोल कर बताया गया है।

इसके अतिरिक्त रेलवे गैलरी में दिल्ली की मैट्रो, जापान की बुलेट ट्रेन और कालका-शिमला रेल के मॉडल प्रदर्शित किये गये हैं।

धरती पर जीवन की शुरूआत को दर्शाता लाइफ थ्रू दी एजिज़ (Life Through The Ages) पैनोरमा भी यहाँ पर बनाया गया है। यह पैनोरमा हमें बताता है कि मनुष्य किस-किस दौर से निकल कर आज यहाँ तक पहुँचा है। इसके अतिरिक्त जलवायु परिवर्तन से सम्बन्धित शो भी दिखाये जाते हैं।

विज्ञान के साथ-साथ मनोरंजन करना ही साइंस सिटी का मुख्य उद्देश्य है और यह साइंस सिटी देश भर के लोगों के लिये विशेष आकर्षण का केन्द्र बनता जा रहा है।

अभ्यास

(क) भाषा-बोध

(i) शब्दार्थ

प्रयोगशाला = वह स्थान जहाँ पदार्थ विज्ञान, रसायन शास्त्र आदि विषयक तथ्यों को समझने, जानने या नयी बातों का पता लगाने के लिए प्रयोग किये जाते हैं।

शिलान्यास = नींव पत्थर रखना

अहम् = महत्त्वपूर्ण

(ii) इन शब्दों के अर्थ लिखकर वाक्य प्रयोग करें :-

शिलान्यास ______ ______________________

भूमिका ______ ______________________

ग्लोब ______ ______________________

गैलरी ______ ______________________

प्रदर्शनी ______ ______________________

(ख) विषय -बोध

(i) इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(क) साइंस सिटी कहाँ पर स्थापित किया गया है?

(ख) साइंस सिटी का शिलान्यास किसने, कब और किसके नाम पर किया गया था?

(ग) स्पेस थियेटर और आम थियेटर में क्या अन्तर है?

(घ) लेज़र की खोज किसने की थी?

(ङ) दिल का मॉडल कहाँ पर रखा हुआ है?

(च) पारदर्शी मनुष्य के थियेटर की क्या विशेषता है?

(छ) वरचुअल रिएलटी गैलरी में मनोरंजन कैसे होता है?

(ज) डायनासोर पार्क में डायनासोर के कितने मॉडल हैं?

(झ) ऊर्जा पार्क में किन-किन शक्तियों का प्रदर्शन किया गया है?

(ञ) डिफैंस गैलरी में कौन-कौन से टैंक हैं?

(त) टेलीस्कोप का प्रयोग किसलिए किया गया है?

(थ) रेलवे गैलरी की क्या विशेषता है?

(ii) इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें :-

(क) फ्लाइट सिमूलेटर और अर्थ क्वेक सिमूलेटर में क्या अन्तर है?

(ख) साइंस सिंटी को देखने के बाद वैज्ञानिक सोच को ठोस आधार मिलता है? क्या यह सही है? अपने उत्तर की पुष्टि किसी एक उदाहरण द्वारा करें।

(ग) साइंस सिटी पंजाब का गौरव है। इसने पंजाब राज्य का मान बढ़ाया है। अपने उत्तर की पुष्टि करें।

(घ) साइंस सिटी में आपको सबसे अच्छा क्या लगा? संक्षेप में लिखें।

(ग) व्यावहारिक व्याकरण

(i) इन शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखें :-

आज़ाद	= ______	अनिवार्य	= ______
दायें	= ______	साफ	= ______
असली	= ______	स्वदेशी	= ______
विस्तार	= ______		

(ii) इन शब्दों में बतायें कि 'र्' रेफ है या 'र' पदेन :-

प्रदर्शनी = ________

ग्रह = ________

आकर्षण = ________

सिर्फ = ________

अनिवार्य = ________

स्क्रीन = ________

(iii) निम्नलिखित समास शब्दों का विग्रह करें :-

समास	**विग्रह**
प्रयोगशाला	________
समाज सेवा	________
पंजाब	________
बेमिसाल	________
परमाणु शक्ति	________

(iv) निम्नलिखित शब्दों को शुद्ध करके लिखें :-

विज्ञानिक	=	________	अनीवार्य	=	________	आकरषण	=	________
अधारित	=	________	अवाज़	=	________	विषेश	=	________
केन्दर	=	________	वायू	=	________	परदर्शनी	=	________
जलवायू	=	________	उदेश्य	=	________	नजदीक	=	________
सिदाँध	=	________	जाहज	=	________	आजाद	=	________
शुरूआत	=	________						

(v) इन शब्दों मे से मूल शब्द अलग करके लिखें :-

वैज्ञानिक = ________

राष्ट्रीय = ________

स्थापित = ________

स्वास्थ्य = ________

प्रदर्शनी = ________

आकाशीय = ________

आकर्षित = ________

(घ) रचना बोध

(i) अपने मित्र/सहेली को साइंस सिटी देखने के लिए उत्साहित करते हुए पत्र लिखें।

(ii) अपने विज्ञान के अध्यापक को साथ लेकर साइंस सिटी देखकर आयें और अपने अनुभव डायरी में लिखें।

तुम भी ऊँचे उठ सकते हो

बड़ा हुआ तो क्या हुआ जैसे पेड़ खजूर
पंथी को छाया नहीं फल लागे अति दूर।

आपने खजूर का पेड़ अवश्य देख होगा। परन्तु क्या आपने खजूर के पेड़ पर किसी पक्षी को घोंसला बनाते देखा है? क्या खजूर के पेड़ की छाया में किसी पथिक को विश्राम करते देखा है? क्या कभी खजूर की छाया में गाय-भैंस, मई-जून की चिलचिलाती धूप में दोपहर गुज़ारती हैं? खजूर के काँटेदार-नुकीले पत्ते किस पशु-पक्षी का भक्ष्य हैं? खजूर के पेड़ों पर चढ़कर आप जैसे बच्चे, क्या कोई खेल खेलते हैं? आपने किसी उद्दण्ड बालक को खजूर से छलांग लगाते भी नहीं देखा होगा। सावन मास में गाँव की रमणियाँ खजूर के पेड़ पर झूला भी नहीं डालतीं।

खजूर की लकड़ी तो ठीक प्रकार से तेज़ आँच भी नहीं पकड़ती और सदा धुआँ-सा देती हुई धीरे-धीरे सुलगती रहती है। फिर ऐसा पेड़ भला किस काम का?

परन्तु मैं ऐसा कदाचित् नहीं मानता कि खजूर का पेड़ सर्वथा निर्गुण, सब प्रकार से बेकार और अनुपयोगी है। प्रकृति का ऐसा नियम है कि संसार की छोटी से छोटी एवं तुच्छ और कुरूप दिखाई देने वाली वस्तुओं का भी अपना विशेष योगदान होता है और प्रकृति-चक्र में प्रत्येक चीज़ की एक विशिष्ट भूमिका होती है। फिर खजूर का पेड़ तो बहुत बड़ा और ऊँचा होता है। यह भला कैसे संभव हो सकता है कि इसका प्राणी मात्र के लिए कोई विशेष लाभ अथवा उपयोग न हो?

खजूर के पेड़ का लम्बा, ऊँचा आकार मनुष्य को उसके बौने होने का अहसास करवाता है। इस वृक्ष के छत्र एवं शिखर को देखने के लिए मनुष्य को अपनी टोपी एवं पगड़ी संभालने की आवश्यकता पड़ती है। मानव जो चन्द्रमा और मंगल ग्रह तक जाने में समर्थ है और जिसने अन्तरिक्ष पर विजय प्राप्त कर ली है उसे खजूर के पेड़ को देखने मात्र से अपने छोटेपन का अहसास होता है इस बात की याद भी आती है कि उसकी विजय श्री में अभी कुछ शेष बचा है।

ऐसा माना जाता है कि खजूर के पेड़ के सब भाग, इसकी जड़ से लेकर छत्र में उगने वाले नुकीले पत्तों तक को प्राणी मात्र की भलाई के लिए प्रयोग किया जा सकता है। पेड़ का कोई भाग व्यर्थ अथवा अनुपयोगी नहीं है। अरब देशों में खजूर की जड़ के स्वादिष्ट व्यंजन बनते हैं। इसकी लकड़ी खुरदरी और टेढ़ी-मेढ़ी होने पर भी मरुस्थल में उपयोगी वस्तु है। खजूर के पेड़ पर पक्षी घोंसले भले ही न बनाते हों परन्तु इसकी लकड़ी को मनुष्य घर बनाने के लिए प्रयोग करते हैं। समुद्र तट पर बसे हुए लोग खजूर के तने से नौकाओं का भी निर्माण करते रहे हैं।

एक प्रकार के खजूर के वृक्ष से मीठा रस निकाला जाता है। महाराष्ट्र और बंगाल के गाँवों के लोग वृक्ष के तने को छील कर और एक तेज़ धार वाले चाकू से इसमें कटाव लगाकर एक हाँडी बाँध देते हैं। इसमें दिन-भर धीरे-धीरे रस टपकता रहता है। प्राय: दूसरे दिन हाँडी उतार कर यह मीठा और सुगन्धित रस इकट्ठा कर लिया जाता है। हाँडी में अतिरिक्त रस एकत्रित करने के लिए इसे पुन: पेड़ के साथ बाँध दिया जाता है। वर्ष में तीन चार महीने खजूर का रस इकट्ठा करने का मौसम रहता है। रस को उबाल कर गुड़ बनाते हैं। ठीक उसी तरह जैसे गन्ने के रस से गुड़ बनता है। कुछ लोग इसका दुरुपयोग भी करते हैं। रस के पड़े रहने मात्र से इसमें हल्की-सी खटास आ जाती है और इससे शराब जैसा द्रव्य भी बना लिया जाता है। इसे ताड़ी कहते हैं। पेड़ से रस निकालना, रस का गुड़ बनाना, इसे ताज़ा अथवा खमीर उठा कर ताड़ी के रूप में चोरी-छिपे बेचना सागर तट के समीप बसे लाखों लोगों का धन्धा है। ताड़ी बनाना और बेचना अवैध कार्य है।

खजूर के पत्तों से चटाइयाँ, झोंपड़ियाँ और विभिन्न प्रकार की हस्तशिल्प की सुन्दर वस्तुओं का निर्माण होता है। पत्तों से बनी चटाइयों के थैलों में ही भर कर खजूर दूर-दूर तक भेजी जाती है।

खजूर के पेड़ों पर मीठे, पौष्टिक एवं रसदार फल गुच्छों के रूप में लगते हैं। ये हल्के पीले रंग से लेकर गहरे भूरे रंग के होते हैं। इनका आकार एक बादाम से लेकर किसी मोटे आलूबुखारे के बराबर बड़ा हो सकता है। रसदार खजूरों से भरे हुए गुच्छे पेड़ के छत्र से लटकते हुए अति सुन्दर लगते हैं। खजूर के ताज़ा फल बहुत नर्म होते हैं। इन्हें हाथ से दबाने से मीठा रस निकाला जा सकता है। फसल पकने पर खजूर कुछ सूखकर अधिक मीठी हो जाती है। एकदम ताज़ा खजूर अधिक नर्म और रसदार होने के कारण निर्यात नहीं की जा सकती। इसलिए इसको खाने का वास्तविक स्वाद और आनन्द उत्पादन क्षेत्रों में ही लिया जा सकता है। खजूर की गुठलियों को व्यर्थ मानकर फेंका नहीं जाता है बल्कि इन्हें पीस कर ऊँट आदि पशुओं के चारे में मिला दिया जाता है। इस प्रकार खजूर के पेड़ का प्रत्येक भाग प्रयोग में लाया जाता है।

वैज्ञानिकों के अनुसार खजूर एक अत्यन्त पौष्टिक एवं अपने आपमें हर प्रकार से सम्पूर्ण भोजन है। सर्दी के मौसम में लोग खजूर का अधिक सेवन करते हैं। कहते हैं इसमें सब प्रकार के खनिज और विटामिन मिलते हैं। जो मानव शरीर के विकास एवं स्वरूप के लिए आवश्यक होते हैं। सूखी हुई खजूर को औषधि के रूप में भी प्रयोग किया जाता है। इसे शक्ति एवं स्फूर्तिदायक समझा जाता है। शादी-विवाह और अन्य शुभ अवसरों में इसका प्रयोग शुभ माना गया है।

अधिकतर खजूर के पेड़ शुष्क जलवायु, कड़ी धूप और अल्प वर्षा वाले अर्ध-मरुस्थलीय क्षेत्रों में उगते हैं। इन्हें विपरीत एवं कठोर भौतिक परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। इन कठिनाइयों के बावजूद खजूर के वृक्ष अपने आत्मसम्मान की रक्षा करते हुए सदैव सीधे ऊपर

आकाश की ओर उठते हैं और हमें मीठे-रसदार फल प्रदान करते हैं।

हमारे विचार में तो खजूर एक सर्वगुण सम्पन्न पेड़ है जो हमें ऊँचा उठने की निरन्तर प्रेरणा प्रदान करता है तथा मानव को यह भी याद दिलाता है कि कठोर परिश्रम और कड़ी तपस्या से आँधी और तूफानों का सामना करके तुम भी ऊँचे उठ सकते हो और छू सकते हो नभ के तारे।

अभ्यास

(क) भाषा-बोध :

1. शब्दार्थ :

पथिक = यात्री
आँच = आग
हाँडी = मिट्टी का बरतन
तट = किनारा
व्यर्थ = बेकार
नभ = आकाश
अवैध = गैर कानूनी
विश्राम = आराम
कदाचित्= कभी भी
खटास = खट्टापन
ताड़ी = शराब
शुष्क = सूखा
औषधि = दवा
भक्ष्य = खाने योग्य

2. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करें :-

विश्राम ____________________

पथिक ____________________

विजयश्री ____________________

मरुस्थल ____________________

अवैध ____________________

(ख) विषय बोध

(i) इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(क) खजूर का पेड़ मनुष्य को क्या अहसास दिलाता है?
(ख) खजूर की लकड़ी किस काम आती है?
(ग) महाराष्ट्र और बंगाल के गाँवों में खजूर का रस कैसे इकट्ठा किया जाता है?
(घ) ताड़ी किसे कहते हैं और यह कैसे बनती है?
(ङ) खजूर के पत्तों का क्या उपयोग है?
(च) खजूर के फल देखने में कैसे लगते हैं?

(ii) इन प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में लिखें :-

(क) खजूर के क्या-क्या लाभ हैं?
(ख) खजूर का पेड़ हमें क्या सीख देता है?

(ग) व्यावहारिक व्याकरण

(i) शुद्ध रूप लिखो :-

बलकि = ________

छतर = ________

सवाद = ________

आनन्द = ________

दुपहर = ________

(ii) अन्,अनु, कु, दुर् उपसर्ग लगाकर विपरीत शब्द बनाओ :-

शासन	= ________	उपयोगी	= ________
आवश्यकता	= ________	आस्था	= ________
रूप	= ________	मति	= ________
उपयोग	= ________	दैव	= ________
बल	= ________		

(iii) परन्तु, कि, इसलिए , एवं योजकों का वाक्यों में प्रयोग करें ।

(iv) अति + अन्त = अत्यन्त

इसी प्रकार इन शब्दों के सन्धिविच्छेद करें :-

अत्यधिक = ________

अत्याचार = ________

इत्यादि = ________

पाठ-17

नीरज के दोहे

(1) मेरे विषय विकार जो, बने हृदय के शूल
हे प्रभु , मुझ पर कृपा कर, करो उन्हें निर्मूल।

(2) मर्यादा और त्याग का, एक नाम है राम
उसमें जो मन रम गया, रहा सदा निष्काम।

(3) इन्द्रधनुष के रंग-सा जग का रंग अनूप
बाहर से दीखे अलग, भीतर एक स्वरूप।

(4) लोभ न जाने दान को, क्रोध न जाने ज्ञान
हो दोनों से मुक्ति जब, हो अपनी पहचान।

(5) धन तो साधन मात्र है, नहीं मनुज का ध्येय
ध्येय बनेगा धन अगर, जीवन होगा हेय।

(6) हम कितना जीवित रहे, इसका नहीं महत्त्व
हम कैसे जीवित रहे, यही तत्व अमरत्व।

(7) अपना ही हित साधते, सारे देश विशेष
सर्व-भूत-हित-रत सदा, वो है भारत देश।

(8) दूध पिलाये हाथ जो, डसे उसे भी साँप
दुष्ट न त्यागे दुष्टता, कुछ भी कर लें आप।

(9) तोड़ो मसलो या कि तुम, उस पर डालो धूल
बदले में लेकिन तुम्हें खुशबू ही दे फूल।

(10) स्नेह, शान्ति, सुख सदा ही, करते वहाँ निवास
निष्ठा जिस घर माँ बने, पिता बने विश्वास।

अभ्यास

(क) भाषा-बोध

(i) शब्दार्थ

विकार = लोभ, मोह, अहंकार आदि विषय वासनाएँ
शूल = काँटा, चुभन

निर्मूल = निर् + मूल = बिना जड़ का, सर्वथा नष्ट

निष्काम = इच्छा रहित

अनूप = बेजोड़, अति सुन्दर

ध्येय = उद्देश्य

हेय = हीन

रत = लीन, लगा हुआ

सर्वभूत = जो सब जगह हो

निष्ठा = आधार, एकाग्रता, श्रद्धा

(ख) विषय-बोध

(i) इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(क) इन दोहों के कवि का नाम लिखें।

(ख) कवि नीरज ने प्रभु से प्रथम दोहे में क्या प्रार्थना की है?

(ग) हमें अपना मन किसमें और किस भाव से रमाना चाहिये?

(घ) कवि ने जग के रंग की तुलना किस रंग से की है?

(ङ) हम अपने को कब पहचान सकते हैं?

(च) जीवन में महत्त्व किस बात का है?

(छ) सभी देशों में भारत की विशेष पहचान क्या है?

(ज) दुष्ट व्यक्ति की तुलना किससे की गई है?

(झ) फूल की क्या विशेषता है?

(ञ) घर की सुख-शान्ति किसमें निहित है?

(ii) इन दोहों की सप्रसंग व्याख्या करें :-

(क) लोभ न जाने ------------- पहचान।

(ख) स्नेह, शान्ति ------------- विश्वास।

(ग) 'साँप' और 'फूल' के उदाहरण द्वारा कवि क्या कहना चाहता है? स्पष्ट करें।

(घ) जीवन की पहचान क्या है? पठित दोहे के आधार पर उत्तर दें।

(ङ) कवि ने धर्म/अध्यात्म से सम्बन्धित दोहों में क्या-क्या कहा है?

(ग) व्यावहारिक व्याकरण

(i) दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखें :-

जग = __________, __________

मुक्ति = __________, __________

ध्येय = __________, __________

मनुज = __________, __________

हित = ________,________

हाथ = ________,________

दूध = ________,________

साँप = ________,________

खुशबू = ________,________

फूल = ________,________

स्नेह = ________,________

(ii) 'जीवित' में 'इत', 'महत्त्व' में 'त्व' और 'दुष्टता' में 'ता' प्रत्यय लगे हैं।' इन तीनों प्रत्ययों से नये शब्द बनायें :-

मर्यादा + इत = ________, अमर + त्व = ________,

मनुज + ता = ________, क्रोध + इत = ________,

____+___ = ________ ____+___ = ________

____+___ = ________ ____+___ = ________

____+___ = ________ ____+___ = ________

पाठ-18

लघुकथाएँ

1. सीख

रमेश की पत्नी इस बात से चिन्तित थी कि उन्होंने आठ महीने से सास को रखा हुआ है किन्तु उनका जेठ एक बार भी माँ की खबर तक लेने नहीं पहुँचा। रमेश को भी रह-रहकर यही ख्याल आता कि उसके भाई ने न तो माँ की खबर ली और न ही कोई पैसे भेजे। रमेश इतनी बात सोच ही रहा था कि इतने में उसका भाई सुरेश आ गया। रमेश ने उस दिन साफ़-साफ़ कह दिया कि यदि माँ मेरे पास रहेगी तो माँ के खर्चे के लिए कुछ न कुछ पैसे भेजा करो। सुरेश ने कहा कि अभी तो मेरी कोई गुंजाइश नहीं है। रमेश को लगा कि सुरेश यूँ ही टालमटोल कर रहा है। कभी उनमें बात होती कि माँ को छह महीने एक भाई रखे तो छह महीने दूसरा। किन्तु सुरेश इस बात पर भी राज़ी न हुआ क्योंकि उसकी पत्नी माँ को अपने पास रखने को तैयार ही नहीं थी। रमेश माँ को रखना तो चाहता था। परन्तु वह चाहता था कि सुरेश भी माँ के खर्चे के कुछ पैसे दिया करे। दोनों में कोई फैसला नहीं हो रहा था। इतने में गाँव के मुखिया चौधरी जी दिखाई दिये। रमेश ने उन्हें बुलाया और सारी बात बता दी और पूछने लगा कि चौधरी साहब आप भी दो भाई हो, माँ आपके पास रहती है तो क्या आपका भाई आपको माँ के खर्चे के पैसे भेजता है? उसने कहा कि चौधरी साहब हमारी इस समस्या का कोई हल निकालें। चौधरी साहब ने उसकी पूरी बात सुनी। उन्होंने उन्हें समझाते हुए कहा, "सच बात तो यह है कि मैंने अपनी माँ को अपने पास नहीं रखा हुआ बल्कि मैं अपनी माँ के पास तब से रह रहा हूँ जब से मेरा जन्म हुआ है। यह मेरा सौभाग्य है कि मैं अपनी माँ के पास रहता हूँ।" दोनों भाई उनकी बात सुनकर अपना-सा मुँह लेकर रह गये। उनके सिर शर्म से झुक गये। आज उन्हें सीख मिल गयी थी। उस दिन के बाद रमेश ने कभी सुरेश से माँ के खर्चे के पैसे नहीं माँगे और माँ के साथ खुशी-खुशी रहने लगा।

2. स्वाभिमान

सुबह-सवेरे अख़बार बाँटने जब एक छोटा-सा लड़का आने लगा तब मन में उत्सुकता जगी कि पूछ लूँ कि पढ़ते-लिखते क्यों नहीं? या पापा पढ़ाते क्यों नहीं? इस कंपकंपाती सर्दी में जब बच्चे रज़ाई से बाहर नहीं निकलते तब वह अख़बार बाँटने क्यों और किन मज़बूरियों से निकलता है।

एक दिन जैसे ही वह अख़बार फेंक कर जाने लगा तब मैंने रोक कर पूछ लिया- रुकना, ओ लड़के।

-कहिये!

-क्या स्कूल पढ़ने नहीं जाते?

-जाता हूँ और नौवीं में पढ़ता हूँ।

-फिर तुम्हारे पापा तुम्हें इस काम के लिये क्यों भेजते हैं?

-पापा बीमार हैं और मैं उनकी मदद करना चाहता हूँ।

-कल मैं तुम्हें कुछ नोटबुक्स देना चाहता हूँ।

-क्यों? मैं खुद कॉपियाँ ले सकता हूँ, सर! जो नहीं ले सकते उन्हें दीजिये न!

इतना कहकर उसने पैडल पर पाँव जमाया और अख़बार बाँटने चल दिया।

3. मेहनत का करिश्मा

चुन्नू ने कमरे में झाँककर देखा। उसकी माँ की खाँसने की आवाज़ निरन्तर सुनाई दे रही थी। आज दीवाली का दिन था। गली में सभी बच्चे पटाखे चला रहे थे लेकिन चुन्नू अपने घर की दहलीज़ में गुमसुम खड़ा था। उसका दिल भी पटाखे चलाने के लिए मचल रहा था। वह दबे पाँव माँ के कमरे में गया और धीरे-से अलमारी खोली। जर्जर हुए कपड़ों के नीचे उसे एक छोटी-सी पोटली दिखाई दी। खोलकर देखा तो उसमें कुछ कागज़ और एक पचास का नोट था। उसने धीरे से वह नोट अपनी जेब में रखा और बाज़ार पटाखे खरीदने चल पड़ा। अब वह भी और दोस्तों की तरह अमीर हो गया था।

घंटा भर पटाखे चलाने के बाद जब वह वापस घर आया तो माँ चारपाई पर औंधे मुँह पड़ी थी। जब बहुत बुलाने पर भी न बोली तो चुन्नू रोने लगा। वह जल्दी से पड़ोस में रहने वाले डॉक्टर को बुला लाया। डॉक्टर ने माँ की जाँच की और कागज़ के टुकड़े पर कुछ दवाइयाँ लिख कर उसके हाथ में थमा दिया और कहा कि अगर दो घंटे तक माँ को ये दवाइयाँ न दीं तो भगवान ही उसका मालिक है। उसने डबडबाई आँखों से माँ की ओर देखा। वह अब भी चारपाई पर बेसुध पड़ी थी। उसने माँ की अलमारी खोली पर अलमारी में एक पैसा तक न था। अब वह घबरा गया, कहाँ से वह माँ की दवाइयों के लिए पैसे लाये? अब वह अपनी चोरी पर भी पछता रहा था। काश! उसने माँ की अलमारी से पैसे न निकाले होते। 'अब पछताये होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत'। लेकिन वह अपनी माँ को मरता हुआ भी न देख सकता था। बाहर अब भी बच्चे पटाखे चला रहे थे, परन्तु उसे कुछ भी अच्छा न लग रहा था।

वह गहरी सोच में डूब गया। अचानक उसे याद आया कि कुछ दिन पहले पाठशाला में कागज़ के फूल बनाने वाला एक कलाकार आया था जिसने प्रार्थना सभा में बच्चों को कागज़ के फूल बनाने सिखाये थे। उसने अलमारी में से झिलमिलाते सतरंगी कागज़ निकाले और फूल बनाने शुरू कर दिये। बिजली की-सी फुर्ती उसके हाथों में आ गई थी। देखते ही देखते रंग-बिरंगे फूलों से भरी एक डलिया तैयार थी। पास ही बाज़ार था। वह गली की नुक्कड़ पर बैठ गया और चिल्लाकर-चिल्लाकर फूल बेचने लगा।

देखते ही देखते उसके सभी फूल बिक गये। अब उसके हाथ में एक सौ सात रुपये थे।

उसने जेब में से कागज़ का वह पुर्जा निकाला जिस पर डॉक्टर ने दवाइयाँ लिखी थीं। जब यह दवाइयों की दुकान से लौटा तो उसके एक हाथ में दवाइयों का लिफाफा था तो दूसरे हाथ में बचे हुए पैसे। उसने घर आकर जल्दी से माँ को दवा पिलाई। कुछ ही देर में वह खतरे से बाहर थी।

अभ्यास

(क) भाषा बोध

(i) शब्दार्थ :-

उत्सुकता = जानने की इच्छा
कंपकंपाती सर्दी = कंपकंपी पैदा करने वाली ठंड
करिश्मा = चमत्कार
जर्जर = जीर्ण, टूटा-फूटा
सतरंगी = सात रंगों वाला
नुक्कड़ = नोक, मोड़, छोर

(ii) इन मुहावरे/लोकोक्तियों का अर्थ लिखते हुए वाक्य बनायें :-

साफ-साफ कहना ______ ______________________
टालमटोल करना ______ ______________________
अपना-सा मुँह लेकर रह जाना______ ______________________
पाँव जमाना ______ ______________________
दिल मचलना ______ ______________________
औंधे मुँह गिरना ______ ______________________
हाथ में थमाना ______ ______________________
अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत ______ ______________________
____
गहरी सोच में डूबना ______ ______________________

(ख) विषय बोध

(i) इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(क) रमेश और सुरेश में किस बात की समस्या थी?
(ख) चौधरी साहब ने रमेश और सुरेश को क्या समझाया?
(ग) दोनों भाइयों को क्या सीख मिली?
(घ) स्वाभिमान का क्या अर्थ है?
(ङ) छोटा-सा लड़का क्या काम करता था?
(च) लेखक ने जब उसे कॉपियाँ देनी चाहीं तो उसने क्या उत्तर दिया?
(छ) चुन्नू ने माँ की अलमारी से क्या निकाला?
(ज) पचास के नोट का उसने क्या किया?

(झ) चुन्नू ने माँ की दवाई के लिए पैसे कैसे जुटाये?

(ञ) उसकी खुशी का ठिकाना क्यों न था?

(ग) व्यावहारिक व्याकरण

(i) निम्नलिखित शब्दों में उपसर्ग/प्रत्यय लगाकर नए शब्द बनायें :-

उपसर्ग + मूल शब्द	=	नया शब्द	मूल शब्द + प्रत्यय	=	नया शब्द
बे + रोक	=	______	खुश + ई	=	______
बे + काबू	=	______	निर्भीक + ता	=	______
बे + शर्म	=	______	कोमल + ता	=	______
बे + कार	=	______	नम्र + ता	=	______

(i) पर्यायवाची शब्द लिखें :-

अख़बार = ______ फूल = ______

खुद = ______ जेब = ______

मदद = ______ माँ = ______

बीमार = ______

(iii) 'कलाकार' शब्द कला + कार से मिलकर बना है। इसी प्रकार अन्य शब्द बनायें :-

चित्र + कार = ______

मूर्ति + कार = ______

नाटक + कार = ______

संगीत + कार = ______

साहित्य + कार = ______

(iv) बहुवचन रूप लिखें :-

कॉपी = कॉपियाँ चिड़िया = ______

दवाई = ______ गुड़िया = ______

पोटली = ______ लुटिया = ______

चारपाई = ______ बुढ़िया = ______

अलमारी= ______

(घ) आत्म-बोध

आपने एक मुहावरा सुना होगा 'अपना हाथ जगन्नाथ'। जिसका अर्थ है - अपने हाथ से काम करना सबसे अच्छा है। दूसरी तथा तीसरी लघु कथायें इसी मुहावरे को चरितार्थ करती हैं। अत: हमेशा याद रखें : कार्य कोई भी छोटा नहीं होता, उसके पीछे मन की भावना महान होनी चाहिए।

(ङ) रचना-बोध

आप अपने परिवार/पड़ोस/मित्र/संबंधी की क्या सहायता कर सकते हैं? सोचिये और लिखिये।

पाठ-19

भारत रत्न : डॉ० अब्दुल कलाम

आकाश में उड़ते पक्षी तो हम सबने देखे हैं, पर सोचो उनका इंजन कहाँ है? उन्हे उड़ने की शक्ति कहाँ से मिलती है? पक्षी को शक्ति उसके अपने जीवन से, उड़ान भरने की इच्छा से मिलती है। यह बात, रामेश्वरम ऐलिमेंटरी स्कूल के अध्यापक श्री शिवा सुब्रह्मण्यम अपने छात्रों को रामेश्वरम् के समुद्री तट पर समझा रहे थे। पाँचवीं कक्षा के विद्यार्थियों में 'उड़ान प्रक्रिया' समझता एक ऐसा विद्यार्थी भी था जो बड़ा होकर भारत का राष्ट्रपति बना। सोचो, कौन था वह? जिसके मन में पक्षी की उड़ान एक प्रेरणा बन गई और अपने लक्ष्य में सफल हुए। हम बात कर रहे हैं भारत के प्रथम नागरिक अर्थात् पूर्व राष्ट्रपति डॉ० अब्दुल पाकिर जैनुल अब्दुल कलाम की। इन्होंने जुलाई 2002 से जुलाई 2007 तक भारत के राष्ट्रपति पद को सुशोभित किया था।

आपका जन्म एक मध्यमवर्गीय परिवार में 15 अक्तूबर 1931 में रामेश्वरम में धनुषकोटी गाँव में हुआ। पिता की आमदनी कम थी, अतः बालक कलाम ने पिता का हाथ बँटाना शुरू कर दिया। वे सुबह पाठशाला जाने से पहले चार बजे उठते, माँ के आँचल में संवरकर, अब्बू के साथ नमाज़ पढ़ते और अपने गणित अध्यापक श्री स्वामी अय्यर से गणित पढ़ने जाते। वापसी में पैदल तीन किलोमीटर रामेश्वरम रेलवे स्टेशन से अख़बार के बंडल लाकर घर-घर बाँटते। माँ के हाथ का नाश्ता कर फिर पाठशाला जाते थे।

आपने प्रारंभिक शिक्षा गाँव से पूरी की। रामनाथपुरम से मैट्रिक परीक्षा पास की। मद्रास तकनीकी संस्थान से वैमानिकी इंजीनियरी (एयरोनॉटिक्स इंजीनियरिंग) में डिग्री प्राप्त की। यहीं से आपने अंतरिक्ष विज्ञान में कुशलता प्राप्त की।

माँ से सच्चाई और नैतिकता, पिता से कर्मठता के अतिरिक्त प्रो० विक्रमसाराभाई, प्रो० सतीश धवन, प्रो० ब्रह्म प्रकाश, प्रो० एम.जी. मेनन तथा डॉ० राजा रमन्ना आदि प्रसिद्ध विभूतियाँ आपके प्रेरणा स्रोत रहे।

माता-पिता व गुरुजनों के प्रति सदा विनम्रता व आदर की भावना सदा आपके मन में रही है। सफलता की बुलंदियों पर होते हुए भी विनम्रता आपका आभूषण था।

आप सपनों को बहुत महत्त्व देते थे, परन्तु केवल सपने देखकर ही नहीं अपितु उन्हें लक्ष्य में परिवर्तित करना। यदि सपने टूट जाएँ तो निराश न हों जैसा कि उन्होंने स्वयं ज़िन्दगी में अपनाया था। आपका सपना एयरफोर्स मे पायलट बनना था परन्तु अन्तिम चयन प्रक्रिया में असफल होने पर आप निराश नहीं हुए। आपने अपना सारा ध्यान उड़ान प्रणाली में काम आने वाले यन्त्र बनाने में लगा दिया था।

सन् 1958 में आप दिल्ली में वैज्ञानिक सहायक नियुक्त हुए। प्रो० एम.जी. मेनन के साथ मुम्बई में रॉकेट इंजीनियरी सम्बन्धी कार्य किया। सन् 1963 में भारत की पहली रॉकेट उड़ान व अन्य उड़ानों में विशेष योगदान दिया। रोहिणी उपग्रह को अंतरिक्ष में छोड़ने वाले प्रक्षेपण यन्त्र एस.एल.वी. 3 की सफलता के बाद तो आप प्रधानमंत्री के विज्ञान एवं तकनीकी सलाहकार बन गए। नाग, अग्नि, पृथ्वी, आकाश, त्रिशूल आदि एक से एक बढ़िया मिसाइलों की सफलता ने तो आपको 'मिसाइल मैन' का नाम दे दिया।

मिसाइलों में प्रयुक्त धातु कार्बन, को आपने विकसित किया। इस धातु कार्बन से हैदराबाद निज़ाम संस्थान ने अपंग बच्चों के चलने के लिए छड़ी तैयार की।

देश के लिए महान योगदान के लिए सन् 1981 में पद्मभूषण, सन् 1990 में पद्म विभूषण और 1997 में भारत रत्न की उपाधि से सम्मानित होने पर देश को गर्व है। सन् 1998 में पोखरण परमाणु विस्फोट परीक्षण की सफलता में आपका विशेष योगदान रहा, इसने भारत को विकसित राष्ट्रों की श्रेणी में ला दिया।

एक वैज्ञानिक, राष्ट्रपति के गरिमामय पद पर रहते हुए आपमें कमाल की मिलनसारिता रही थी। आप असंख्य लोगों से मिले चुके थे जिनमें किसान, सरपंच, युवा और बच्चे शामिल थे। बच्चों में घुलमिल जाने पर आप चाचा नेहरू की याद करा देते थे।

देशवासियों के सुनहरे भविष्य, खुशहाल समाज के लिए चिंतनशील इस विभूति का युवाओं में दृढ़ विश्वास था। आपका विश्वास था कि भारत के युवा अपने-अपने क्षेत्रों में काम करें तो सन् 2020 से पहले भारत एक विकसित राष्ट्र बन जाएगा। आपके अनुसार आज का युवा काफी सजग है। वह विभिन्न क्षेत्रों में अपनी भागीदारी चाहता है। युवाओं को प्रेरित करते हुए आपका विचार था कि युवा अपने ज्ञान का सदुपयोग करें। ज्ञान बाँटने से बढ़ता है। अपने अवकाश के समय में ज़रूरतमंद बच्चों में अपना ज्ञान बाँटें। पर्यावरण सुधार के लिए प्रत्येक विद्यार्थी अधिक से अधिक पौधे लगाकर उनकी देखभाल भी करे। प्रत्येक नागरिक एक-दूसरे को अपना ज्ञान, धन, खुशी,

मुस्कान बाँटें तो एक खुशहाल समाज निर्मित होते समय न लगेगा। हर इन्सान में कोई न कोई अनोखा गुण जरूर होता है, उसे उभारने की जरूरत होती है। हमें दूसरे की बुराइयों को नज़रअंदाज करके उनकी अच्छाइयों से सबक सीखना चाहिए।

आठ दशकों के बसंत की ओर बढ़ रहा अथक युवा मन भारत के उत्थान के लिए हर संभव प्रयत्न कर रहा था किंतु 27 जुलाई , 2015 की शाम भारतीय प्रबंधन संस्थान शिलांग (मेघालय) में 'रहने योग्य ग्रह' पर रूके व्याख्यान दे रहे थे कि अचानक हृदय गति रुक जाने के कारण वही अचेत होकर गिर पड़े। डॉक्टरों ने इन्हें बचाने का हर संभव प्रयास किया किंतु उनका प्रयास विफल रहा। अंतत: उनका देहावसान हो गया। निस्संदेह वे आज भी करोड़ों भारतीयों के लिए प्रेरणास्त्रोत बने रहेंगे।

अभ्यास

(क) भाषा-बोध

(i) शब्दार्थ :-

लक्ष्य = उद्देश्य

अब्बू = पिता

अन्तरिक्ष विज्ञान = अन्तरिक्ष में स्थित, ग्रहों, उपग्रहों आदि की स्थिति, स्वरूप आदि की जानकारी प्राप्त करने के उद्देश्य से की गई यात्रा से संबंधित विज्ञान

कर्मठता = काम में कुशलता

विभूति = उच्च पद, शक्ति

सजग = जागरूक

नजरअन्दाज = अनदेखा

अथक = कभी न थकने वाला

मशगूल = लीन

(ii) इन शब्दों के अर्थ लिखकर वाक्य बनायें :-

उपाधि = ________ अथक = ________

मिसाइल = ________ लक्ष्य = ________

अन्तरिक्ष = ________ सपना टूटना = ________

(ख) विषय-बोध

(i) इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(क) भारत के प्रथम नागरिक किसे कहा जाता है?

(ख) राष्ट्रपति अब्दुल कलाम का पूरा नाम लिखें।

(ग) डॉ॰ अब्दुल कलाम ने अपने पिता का हाथ बँटाने के लिए क्या काम किया?

(घ) डॉ॰ अब्दुल कलाम ने वैमानिकी इंजीनियरी (एयरोनॉटिक्स इंजीनियरिंग) की डिग्री कहाँ से प्रप्त की?

(ङ) डॉ॰ अब्दुल कलाम के प्रेरणास्रोत कौन-कौन थे?

(च) एस. एल. वी. 3 क्या है?

(छ) डॉ॰ अब्दुल कलाम को 'मिसाइल मैन' क्यों कहा जाता है?

(ज) अपंग बच्चों के लिए आपने क्या बनाया और उसमें कौन-सी धातु प्रयोग की जाती है?

(झ) आपको कौन-कौन से सम्मान, कब-कब प्राप्त हुए?

(ञ) किस गुण के कारण आप चाचा नेहरू की याद करा देते हैं?

(त) हर इन्सान के बारे में आपकी क्या राय है?

(ii) इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें :-

(क) उस घटना का वर्णन करो जिससे प्रेरित होकर उन्होंने उड़ान को अपना लक्ष्य बनाया।

(ख) 'सपने टूट जायें तो निराश न हों।' ऐसा उन्होंने क्यों कहा?

(ग) युवा वर्ग के लिए डॉ॰ अब्दुल कलाम का क्या संदेश है?

(घ) अब्दुल कलाम की जीवनी से आपने क्या-क्या सीखा?

(ङ) अपने विद्यालय के पुस्तकालय से इनकी जीवनी लेकर पढ़ें। अच्छी बातें/गुण अपनी डायरी में नोट करें।

(ग) व्यावहारिक व्याकरण

(i) इन शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखें :-

पक्षी = ________, ________

इच्छा = ________, ________

आकाश = ________, ________

अध्यापक = ________, ________

लक्ष्य = ________, ________

समुद्र = ________, ________

अब्बू = ________, ________

(ii) इन शब्दों के विपरीत अर्थ वाले शब्द लिखें :-

आमदनी = ________

गुण = ________

असफल = ________

इच्छा = ________

विकसित = ________

मिलन = ________

विश्वास = ________

युवा = ________

सदुपयोग = ________

बुराई = ________

(iii) इन शब्दों में से मूल शब्द अलग करें :-

सुशोभित = ________

नागरिक = ________

निर्मित = ________

सम्मानित = ________

विकसित = ________

परिवर्तित = ________

(iv) 'ता' लगाकर भाववाचक संज्ञा बनायें :-

नैतिक = ________

कर्मठ = ________

विनम्र = ________

सफल = ________

आवश्यक = ________

मिलनसार = ________

सजग = ________

नागरिक = ________

सड़क सुरक्षा-जीवन रक्षा

(आज स्कूल की प्रार्थना सभा में सड़क सुरक्षा के बारे में जानकारी देने के लिए प्रधानाचार्य ने ट्रैफिक पुलिस अधिकारी को आमंत्रित किया है। स्टेज पर सड़क यातायात नियमों तथा चिह्नों से सम्बन्धित चार्ट लगे हुए हैं जिन्हें जानने के लिए सभी विद्यार्थी बहुत उत्सुकता से बैठे हुए हैं)

प्रधानाचार्य : बच्चो ! सड़क पर दिनोंदिन दुर्घटनाएँ बढ़ती जा रही हैं जिसका मुख्य कारण है- सड़क पर लापरवाही से चलना तथा यातायात के नियमों का पालन न करना। आज हमारे बीच ट्रैफिक पुलिस अधिकारी मौजूद हैं। मैं इनका यहाँ पधारने के लिए स्वागत करता हूँ। ये आज आपको यातायात के नियमों के बारे में बतायेंगे।

ट्रैफिक पुलिस अधिकारी : बच्चो ! हमारा आज का विषय है- सड़क सुरक्षा : जीवन रक्षा अर्थात् हमें सड़क पर स्वयं भी सुरक्षित ढंग से चलना चाहिए तथा दूसरे की सुरक्षा का भी ध्यान रखना चाहिए। तभी हमारा जीवन भी सुरक्षित रहेगा। यही सड़क पर चलने का मूल मंत्र है। बच्चो ! यदि आपके मन में सड़क सुरक्षा से सम्बन्धित कोई प्रश्न हो तो आप पूछ सकते हैं।

विद्यार्थी : सर ! हमें सड़क पर चलते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

ट्रैफिक पुलिस अधिकारी : हमें हमेशा सड़क के बायीं ओर ही चलना चाहिए। सड़क को भागकर पार नहीं करना चाहिए। बायीं व दायीं दोनों तरफ देखकर बड़ी सावधानी पूर्वक सड़क पार करनी चाहिए। सड़क के किनारे बने फुटपाथ पर ही चलना चाहिए।

विद्यार्थी : वाहन चलाना सीखने के लिए कितनी उम्र होनी चाहिए?

ट्रैफिक पुलिस अधिकारी : वाहन चलाना सीखने के लिए कम से कम उम्र 16 साल होनी चाहिए। यदि साइकिल, स्कूटर या कार आदि चलाना सीखना हो तो खाली मैदान में ही सीखना चाहिए। सड़क पर तभी चलायें जब आपको पूरी तरह चलाना आ जाये अन्यथा स्वयं या दूसरे के लिए यह खतरनाक हो सकता है। हाँ, वाहन तेज़ रफ़्तार से नहीं चलाना चाहिए।

चित्र-1

विद्यार्थी : क्या स्कूटर चालक के पीछे बैठे व्यक्ति के लिए भी हेलमेट पहनना ज़रूरी है?

ट्रैफिक पुलिस अधिकारी : स्कूटर चालक के साथ-साथ पीछे बैठे व्यक्ति के लिए भी हेलमेट पहनना जरूरी है।

विद्यार्थी : अक्सर देखा जाता है कि महिलायें हेलमेट नहीं पहनतीं। क्या उन्हें हेलमेट पहनने की छूट है?

ट्रैफिक पुलिस अधिकारी : निस्संदेह महिलाओं के लिए भी हेलमेट पहनना ज़रूरी है किन्तु इस नियम को आज तक अन्य नियमों की अपेक्षा कठोरता से लागू नहीं किया जा सका है। पर मुझे आशा है कि भविष्य में ट्रैफिक पुलिस इसे गंभीरता से लेगी।

विद्यार्थी: वाहन चलाते समय सेफ्टी बेल्ट लगाना क्यों अनिवार्य है?

ट्रैफिक पुलिस अधिकारी : बच्चो! केवल वाहन चालक को ही नहीं अपितु वाहन चालक के साथ आगे वाली सीट पर बैठे व्यक्ति को भी सेफ्टी बेल्ट का प्रयोग करना चाहिए जिससे अचानक झटका लगने से होने वाली दुर्घटना से बचा जा सकता है।

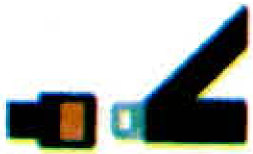

चित्र-2

विद्यार्थी : कौन से वाहनों पर काले रंग के शीशे व लाल रंग की बत्ती लगायी जा सकती है ?

ट्रैफिक पुलिस अधिकारी : विशेष अधिकार प्राप्त व्यक्ति ही ट्रैफिक विभाग से आज्ञा प्राप्त करके काले रंग के शीशे व वाहनों के ऊपर लाल बत्ती का प्रयोग कर सकते हैं। बिना आज्ञा के किसी को ऐसा नहीं करना चाहिए।

विद्यार्थी : यदि कोई वाहन चला रहा है और एकदम से उसके फोन की घंटी बजती है तो उसे क्या करना चाहिए?

ट्रैफिक पुलिस अधिकारी : वाहन चलाते समय मोबाइल नहीं सुनना चाहिए। यदि आपको सुनना ही है तो वाहन को सावधानीपूर्वक एक किनारे पर ले जाकर और रोककर ही सुनना चाहिए। अन्यथा चलते वाहन पर ऐसा करने से दुर्घटना हो सकती है।

ट्रैफिक पुलिस अधिकारी : अच्छा बच्चो ! क्या आपने कभी सड़क के किनारे लगे कुछ बोर्ड देखे हैं जिन पर कुछ संकेत दर्शाये होते हैं?

चित्र-3

विद्यार्थी : सर! एक बोर्ड हमारे स्कूल के पास लगा है।

ट्रैफिक पुलिस अधिकारी : बिल्कुल ठीक ! (चित्र नम्बर 3 दिखाते हुए) स्कूल से कुछ कदम पहले बोर्ड पर बैग ले जा रहे बच्चे का चित्र बना होता है) बच्चो! यह चित्र दर्शाता है कि आगे स्कूल है इसलिए वाहन की गति धीमी रखी जाये क्योंकि छोटे बच्चे सड़क के नियमों से परिचित नहीं होते।

चित्र-4 (क)

चित्र-4 (ख)

विद्यार्थी : सर! अस्पताल तथा डिस्पैंसरी के बाहर भी बोर्ड पर एक चिह्न होता है। कृपया इसके बारे में बताइए।

ट्रैफिक पुलिस अधिकारी : (चित्र 4 दर्शाता हुआ) बच्चो! अस्पताल के पास बोर्ड पर हार्न का निशान बनाकर काटा गया होता है जिसका अर्थ है कि यहाँ बिना मतलब के हार्न न बजाया जाए क्योंकि हार्न की तेज़ आवाज़ मरीज़ों के आराम में रुकावट पैदा करती है।

विद्यार्थी : सर! आजकल पार्किंग की बहुत समस्या है। हमें वाहन कहाँ पार्क करना चाहिए?

ट्रैफिक पुलिस अधिकारी : बिल्कुल ठीक प्रश्न किया। इसके लिए मैं आपको कुछ चित्र दिखाता हूँ।

चित्र-5

चित्र-6

चित्र-7

चित्र-8

चित्र-9

देखो बच्चो! चित्र नम्बर 5 में 'P' के नीचे दायीं तरफ तीर का निशान दर्शाता है कि वाहन दायीं तरफ खड़ा करें। चित्र नम्बर 6 में 'P' के दोनों तरफ तीर का निशान यह दर्शाता है कि वाहन दोनों तरफ खड़ा किया जा सकता है। चित्र नम्बर 7 में 'P' के नीचे बना साइकिल का चित्र दर्शाता है कि यहाँ केवल

साइकिल खड़ी करें तथा चित्र 8 में 'P' के नीचे कार का चित्र दर्शाता है कि यहाँ केवल कार खड़ी करें। चित्र नम्बर 9 दर्शाता है कि यहाँ वाहन खड़ा न करें। बच्चो! हमें निश्चित स्थान पर ही अपने वाहन को खड़ा करना चाहिए इससे किसी को भी असुविधा नहीं होती।

विद्यार्थी : सर चित्र नम्बर 10 में चौराहे में लाल-हरी बत्ती के पास सड़क पर बनी काली-सफेद लाइनें क्या दर्शाती हैं?

ट्रैफिक पुलिस अधिकारी : (चित्र नम्बर 10 को दर्शाते हुए) बच्चो, इन काली-सफेद लाइनों को

चित्र-10

ज़ेबरा लाइनें कहा जाता है। पैदल चलने वालों को सदा ज़ेबरा लाइनों पर चलते हुए ही सड़क पार करनी चाहिए।

विद्यार्थी : सर! चित्र नम्बर 11 तथा चित्र नम्बर 12 में क्या दर्शाया गया है?

ट्रैफिक पुलिस अधिकारी : (चित्र दर्शाते हुए)

बच्चो ! चित्र नंबर 11 में बोर्ड पर बना चिह्न दर्शाता है कि आगे सड़क ऊबड़-खाबड़ है इसलिए हमें ध्यान से चलना चाहिए ताकि कहीं ठोकर न लगे। चित्र नम्बर 12 में बना चिह्न दर्शाता है कि आगे खतरनाक झुकाव या कोई गड्ढा है इसलिए इस रास्ते से बचकर चलें।

चित्र-11

चित्र-12

विद्यार्थी : सर! चित्र 13,14 तथा 15 क्या दर्शाते हैं?

ट्रैफिक पुलिस अधिकारी : चित्र 13 में बायीं ओर मुड़े हुए तीर के निशान का मतलब है कि सड़क के बायीं ओर मुड़ें तथा चित्र 14 में दायीं ओर मुड़े हुए तीर के निशान

चित्र-13

चित्र-14

चित्र-15

का मतलब है कि सड़क के दायीं ओर मुड़ें तथा चित्र 15 में गोलाकर में घूमते तीर के निशान दर्शाते हैं कि सामने गोल चक्कर है।

चित्र-16

विद्यार्थी : सर! चित्र 16 में 50 लिखा हुआ है, इसका क्या मतलब है?

ट्रैफिक पुलिस अधिकारी : इसका आशय है कि इस सड़क पर वाहन की गति सीमा 50 निर्धारित है। इससे अधिक गति से वाहन यहाँ मत चलायें।

विद्यार्थी : सर! सड़क पर दुर्घटना से बचने के लिए हमें और किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

ट्रैफिक पुलिस अधिकारी : हमें सड़क पर खेलना अथवा उछलकूद नहीं करनी चाहिए। कूड़ा अथवा फलों के छिलके सड़क पर नहीं फेंकने चाहिए। यदि आप साइकिल चला रहे हैं तो मोड़ लेने से पूर्व हाथ से मुड़ने की तरफ संकेत दो। कभी भी दोनों हाथ छोड़कर साइकिल न चलायें। यदि आप एक समूह में साइकिल चला रहे हैं तो सड़क का काफी हिस्सा घेर कर समानांतर न चलें अपितु एक-दूसरे के पीछे-पीछे चलें। यदि आप गाड़ी में हैं तो दूसरी गाड़ी से आगे केवल दायें हाथ की ओर से निकलें। हमें भारी गाड़ियों के बीच से भी नहीं निकलना चाहिए। अत: बच्चो! इस तरह हम यातायात के नियमों का पालन करते हुए अपने व दूसरे के जीवन की रक्षा सहज ही कर सकेंगे।

सभी विद्यार्थी : धन्यवाद सर! हम सदैव यातायात के नियमों का पालन करेंगे। (इसके बाद सभी विद्यार्थी पंक्ति बनाकर अपनी-अपनी कक्षा में चले गये)

अभ्यास

(क) भाषा-बोध

(i) शब्दार्थ

अन्यथा	=	नहीं तो	हेलमेट	=	सिर की रक्षा करने वाला टोप
सेफ्टी बैल्ट	=	सुरक्षा बैल्ट	निर्धारित	=	नियत, निश्चित किया हुआ
संकेत	=	इशारा	पार्क	=	वाहन/गाड़ी खड़ा करना

(ख) विषय बोध

(i) इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(क) सड़क पर दिनों-दिन बढ़ती दुर्घटनाओं का लेखक ने क्या कारण बताया है?

(ख) 'सड़क सुरक्षा जीवन रक्षा' से लेखक का क्या अभिप्राय है?

(ग) स्कूटर तथा कार चलाने के लिए कम से कम कितनी उम्र होनी चाहिए?

(घ) वाहन चलाते समय मोबाइल सुनना क्यों खतरनाक हो सकता है?

(ङ) निश्चित स्थान पर वाहन पार्किंग का क्या फायदा है?

(च) चौराहे में लाल-हरी बत्ती के पास सड़क पर काली सफेद लकीरें क्या दर्शाती हैं?

(ii) इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें:-

(क) वाहन चलाते समय सेफ्टी बैल्ट लगाना क्यों अनिवार्य है?

(ख) कौन-से वाहनों पर काले रंग के शीशे व लाल रंग की बत्ती लगायी जा सकती है?

(ग) हमें सड़क पर दुर्घटना से बचने के लिए किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

(ग) व्यावहारिक व्याकरण

(i) शुद्ध करके लिखें :-

पराथना	=	________	चारट	=	________
टरैफिक	=	________	दाँयी	=	________
मंतर	=	________	सिखना	=	________
किन्तू	=	________	रफतार	=	________
मोबाईल	=	________	रूकावट	=	________
मतबल	=	________	निश्चित	=	________
उबड़-खबड़	=	________	रस्ते	=	________
धन्यावाद	=	________			

(ii) रिक्त स्थान में उचित सम्बन्धबोधक शब्द भरकर वाक्य पूरे करें :-

(क) इसे अन्य नियमों ______ कठोरता से लागू नहीं किया जा सका है।(की ओर, की अपेक्षा)

(ख) आज्ञा ________ किसी को ऐसा नहीं करना चाहिए। (के लिए, के बिना)

(ग) सड़क ________ काली-सफेद लकीरें लगायी गयी हैं। (के पास, पर)

(घ) हमें भारी गाड़ियों ________ से नहीं निकलना चाहिए। (के बीच, के बदले)

(ङ) चालक ________ बैठे व्यक्ति को भी हेलमेट पहनना चाहिए। (के बगैर, के पीछे)

(iii) अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखें :-

(1) स्कूल का सर्वप्रमुख अध्यापक ________

(2) स्कूल में सुबह आयोजित की जाने वाली सभा ________

(3) स्कूटर चलाने वाला व्यक्ति ________

(4) विद्‌या प्राप्त करने वाला ________

(5) जो बीमार हो ________

(6) जहाँ बीमारों का इलाज हो ________

(7) चौराहे में लाल बत्ती के पास सड़क पर लगी काली-सफेद लाइनें ________

(iv) एक शब्द में अलग-अगल अक्षरों व मात्राओं के प्रयोग से कई शब्द बना सकते हैं। 'खतरनाक' शब्द से बनने वाले विविध शब्द कैसे बनते हैं। देखो

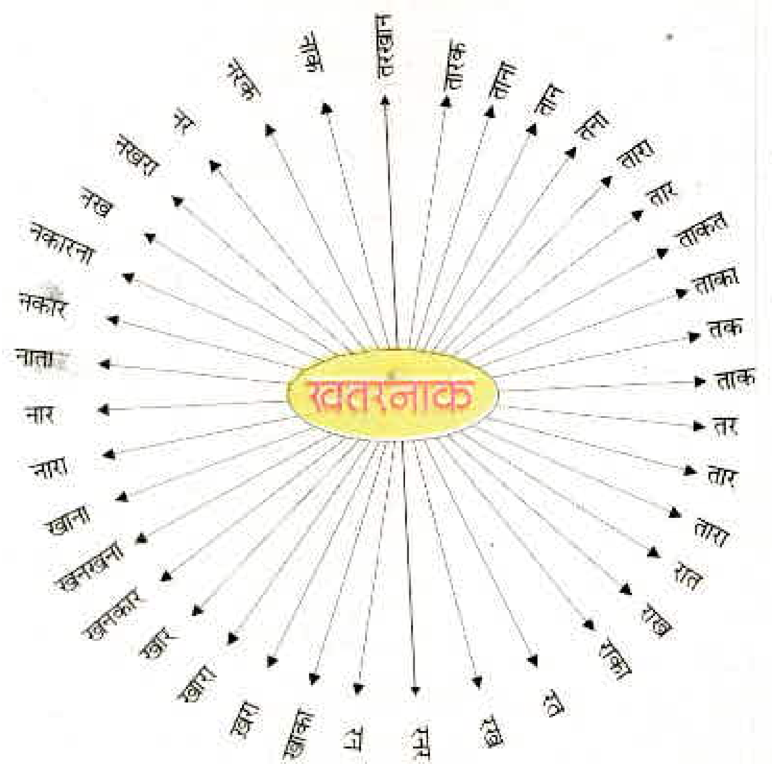

इस तरह निम्नलिखित शब्दों में अलग-अलग अक्षरों व मात्राओं के प्रयोग से नए शब्द बनायें :
अचानक, जानकारी

इन्हें भी याद रखिये

1. स्कूटर चालक के साथ-साथ पीछे बैठे व्यक्ति को भी बढ़िया किस्म का (ISI) हेलमेट पहनना चाहिए।
2. महिलाओं को भी अपनी सुरक्षा हेतु हेलमेट पहनना चाहिए।
3. यदि लाल बत्ती हुई हो और उस समय किसी भी तरफ से कोई न आता-जाता दिखाई दे तो भी हमें लाल बत्ती पर खड़े रहना चाहिए।
4. केवल हरी बत्ती पर ही चलना चाहिए।
5. हमें हरी बत्ती दिखाई देने पर जल्दी लाँघने के लिए अपने वाहन की गति बढ़ा नहीं देनी चाहिए। इससे जल्दबाज़ी में दुर्घटना घट सकती है।
6. हमें हेलमेट सुरक्षा के लिए पहनना है न कि नियमों का पालन करने के लिए। हेलमेट होते हुए भी उसे सिर पर न पहन कर हाथ में पकड़ना या स्कूटर पर लटका कर रखना नियमों की अवहेलना के साथ-साथ बेवकूफी है।
7. हमें सड़क पर अपने वाहन से किसी से रेस नहीं लगानी चाहिए।
8. हमें अपना वाहन निश्चित जगह पर ही खड़ा करना चाहिए।

पाठ-21

हरी-हरी दूब पर

हरी-हरी दूब पर
ओस की बूँदें
अभी थीं,
अब नहीं हैं।
ऐसी खुशियाँ
जो हमेशा हमारा साथ दें
कभी नहीं थीं,
कहीं नहीं हैं।

क्वाँर की कोख से
फूटा बाल सूर्य,
जब पूरब की गोद में
पाँव फैलाने लगा,
तो मेरी बगीची का
पत्ता-पत्ता जगमगाने लगा,
मैं उगते सूर्य को नमस्कार करूँ
या उसके ताप से भाप बनी,
ओस की बूँदों को ढूँढूं?

सूर्य एक सत्य है
जिसे झुठलाया नहीं जा सकता
मगर ओस भी तो एक सच्चाई है
यह बात अलग है कि ओस क्षणिक है
क्यों न मैं क्षण-क्षण को जीऊँ?
कण-कण में बिखरे सौंदर्य को पीऊँ?

सूर्य तो फिर भी उगेगा,
धूप तो फिर भी खिलेगी,
लेकिन मेरी बगीची की
हरी-हरी दूब पर,
ओस की बूँद
हर मौसम में नहीं मिलेगी।

अभ्यास

(क) भाषा ज्ञान

शब्दार्थ :-

क्वाँर = आश्विन (कुआर) का महीना
ओस = वाष्प का रूप
दूब = घास
फूटा बाल सूर्य = प्रात: कालीन उगता सूर्य
पाँव फैलाना = निकलना, उदित होना
बगीची = छोटी बगिया
ताप = गरमी
भाप = जल का वाष्पीय रूप
क्षणिक = पल भर रहने वाला

(ख) विषय-बोध

(i) इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(क) 'ओस की बूँदें अभी थीं, अब नहीं हैं' - इस पंक्ति में कवि क्या कहना चाहता है?
(ख) हमारी खुशियों के बारे में कवि ने 'हरी हरी दूब में' कविता में क्या कहा है?
(ग) प्रात:कालीन सूर्य से बगीचे की सुन्दरता का वर्णन करें।
(घ) 'क्यों न मैं क्षण-क्षण को जीऊँ' में कवि क्या कहना चाहता है?

(ii) इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें :-

(क) जीवन की वास्तविकता को स्वीकार करने में कवि कहाँ तक सफल हो पाया है?
(ख) शाश्वत खुशियों के संदर्भ में कवि की क्या धारणा है?

(ग) व्यावहारिक व्याकरण

(i) पर्यायवाची शब्द लिखें :-

दूब = ________, ________
ओस = ________, ________

पाँव = ________, ________

क्षण = ________, ________

पत्ता = ________, ________

सौन्दर्य = ________, ________

सूर्य = ________, ________

सत्य = ________, ________

(ii) निम्नलिखित अनेकार्थक शब्दों के विभिन्न अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयुक्त करें :-

मगर - लेकिन - वह आ तो सकता था मगर आया नहीं।

मगर - घड़ियाल - मैंने चिड़ियाघर में एक मगर देखा।

बाल, हरी, हर, पूरब

(घ) रचनात्मक व्याकरण

(i) आप प्रात:कालीन और सायंकालीन सैर करने के लिए बाग में जाते होंगे। प्रात:कालीन सूर्य की लालिमा, पक्षियों का कलरव, ओस के कणों पर सतरंगी इन्द्रधनुषी आभा, फूलों की खुशबू और सुन्दरता, तालाब में खिला कमल आदि प्राकृतिक सुन्दरता का आपने अनुभव किया होगा। इस तरह के अनुभवों को अपनी डायरी में लिखने का प्रयत्न करें।

(ii) सुमित्रानंदन पंत की 'किरणों का खेल', डॉ॰ राम कुमार वर्मा द्वारा रचित 'ये गजरे तारों वाले' तथा जयशंकर प्रसाद की 'बीती विभावरी जाग री' कविताएँ पढ़कर प्राकृतिक सुन्दरता का आनन्द लें।

(iii) श्री अटल बिहारी वाजपेयी भारत के पूर्व प्रधानमंत्री हैं। वे कविताएँ, गीत, व्यंग्यात्मक रचनाएँ, मुक्तक छंद लिखने में सिद्धहस्त हैं। उनकी अन्य रचनाएँ पुस्तकालय से लेकर पढ़ें।

(iv) 'ओस का मोती' एक मुहावरा है जिसका अर्थ है - 'क्षणिक अस्तित्व की वस्तु एवं बात'।

पाठ-22

उम्मीद का अन्तिम पत्ता

स्यू और जॉह्नसी दो नौजवान कलाकार, एक छोटे-से घर में एक साथ रहती थीं। उनका घर एक पुराने मकान की तीसरी मंज़िल पर था।

नवम्बर के महीने में जॉह्नसी बहुत गंभीर रूप से बीमार पड़ गई। उसे निमोनिया हो गया था। वह बिना हिले-डुले बिस्तर पर लेटी रहती और खिड़की के बाहर देखती रहती। उसकी सहेली स्यू बहुत चिंतित हो गई थी। उसने एक डॉक्टर को बुलाया। हालांकि डॉक्टर हर-रोज़ जॉह्नसी को देखने आता लेकिन उसकी स्थिति में कोई सुधार नहीं था।

एक दिन डॉक्टर ने स्यू को एक तरफ ले जाकर पूछा, ''क्या जॉह्नसी को कोई परेशानी है?''

''नहीं'' स्यू ने उत्तर दिया। ''पर आप यह क्यों पूछ रहे हैं?'' डॉक्टर ने कहा, ''ऐसा लगता है कि जॉह्नसी ने यह बात दिमाग में बिठा ली है कि वह अब ठीक नहीं हो पायेगी। यदि वह जीना ही नहीं चाहती तो दवाइयाँ उस पर कोई असर नहीं करेंगी।''

स्यू अपनी ओर से पूरा प्रयत्न करती कि जॉह्नसी अपने आस-पास की चीज़ों में दिलचस्पी ले। वह फैशन और कपड़ों के बारे में उससे बातें करती लेकिन जॉह्नसी कोई उत्तर न देती। जॉह्नसी एक मूर्ति की तरह अपने बिस्तर पर स्थिर लेटी रहती। स्यू अपना ड्राइंग बोर्ड जॉह्नसी के कमरे में ले आई और चित्र बनाने लगी। जॉह्नसी का ध्यान उसकी बीमारी से हटाने के लिए वह चित्र बनाते हुए सीटी बजाने लगी।

अचानक स्यू ने जॉह्नसी को कुछ फुसफुसाते हुए सुना। वह खिड़की के बाहर देख रही थी और कह रही थी, ''बारह!'' थोड़ी देर बाद वह धीरे से बोली, ''ग्यारह'' फिर ''दस'' फिर ''नौ'', ''आठ'', ''सात।'' स्यू ने बड़ी उत्सुकता से खिड़की के बाहर देखा। उसने उस खिड़की

के सामने ईंटों की दीवार के मध्य तक चढ़ी एक आईवी-लता देखी। बाहर की शीत हवा से उस लता के पत्ते गिर रहे थे।

"क्या बात है मेरी प्यारी सेहली?" स्यू ने पूछा।

"छः" जॉह्नसी फुसफुसाई। "वे अब और तेज़ी से गिर रहे हैं। तीन दिन पहले वहाँ लगभग सौ पत्ते थे। अब केवल पाँच शेष रह गए हैं।"

"जब अन्तिम पत्ता गिर जाएगा, तो मैं मर जाऊँगी।" जॉह्नसी ने दृढ़ता से कहा "मुझे तो यह बात तीन दिनों से पता है।" "ओह! यह मूर्खता भरी बात है।" स्यू ने उत्तर दिया। "तुम्हारे स्वस्थ होने का उस पुरानी आईवी लता के पत्तों से क्या सम्बन्ध हो सकता है? डॉक्टर साहब को पूरा विश्वास है कि तुम स्वस्थ हो जाओगी।"

जॉह्नसी कुछ न बोली। स्यू गई और उसके लिए एक कटोरा सूप लेकर आई।

" मुझे किसी सूप की ज़रूरत नहीं है?" जॉह्नसी ने कहा। "मुझे भूख नहीं है....... अब केवल चार पत्ते ही वहाँ रह गए हैं। मैं अंधेरा होने से पहले अन्तिम पत्ता गिरता देखना चाहती हूँ। फिर मैं हमेशा के लिए सो जाऊँगी।"

स्यू जॉह्नसी के बिस्तर पर बैठ गई, उसे चूमा और कहा, "तुम नहीं मरोगी। मैं परदा नहीं कर सकती क्योंकि मुझे रोशनी की आवश्यकता है। मैं इस चित्र को पूरा करना चाहती हूँ और तुम्हारे लिए कुछ पैसा कमाना चाहती हूँ। मेरी प्यारी सहेली।" उसने जॉह्नसी से आग्रह किया, "वचन दो कि जब तक मैं चित्र बना रही हूँ, तुम खिड़की से बाहर नहीं देखोगी।"

"ठीक है।" जॉह्नसी ने कहा, "अपना चित्र जल्दी पूरा करो क्योंकि मैं अन्तिम पत्ता गिरता हुआ देखना चाहती हूँ। मैं प्रतीक्षा कर-कर थक चुकी हूँ। मुझे मरना है इसलिए मुझे उन पके हुए पत्तों की तरह शान्ति से जाने दो।"

"सोने की कोशिश करो।" स्यू ने कहा। "मुझे एक बूढ़े खनिक का चित्र बनाना है। मैं बह्रमैन को अपना मॉडल बनने के लिए बुला लेती हूँ।"

वह शीघ्रता से नीचे चली गई। बह्रमैन सबसे नीचे वाली मंजिल में रहता था।

वह साठ साल का एक बूढ़ा चित्रकार था। उसके जीवन का सपना था कि वह एक सर्वश्रेष्ठ-कलाकृति बनाए पर अब तक यह सपना ही था। स्यू ने अपनी सारी परेशानियाँ बह्रमैन को बता दीं। उसने उसे बताया कि किस प्रकार जॉह्नसी को विश्वास हो गया था कि वह उस अन्तिम पत्ते के गिरते ही मर जाएगी।

"क्या वह मूर्ख है?" बह्रमैन ने पूछा, "वह इतनी नासमझ कैसे हो सकती है?"

" उसे बहुत तेज़ ज्वर है" स्यू ने शिकायत की। "वह कुछ भी खाने-पीने से मना कर

रही है और मुझे इस बात की बहुत चिन्ता हो रही है।''

''मैं तुम्हारे साथ चलता हूँ और जॉह्नसी को देखता हूँ'', बह्रमैन ने कहा।

वे बिना आवाज़ किए जॉह्नसी के कमरे में गए। जॉह्नसी सो रही थी। स्यू ने परदा कर दिया और वे दूसरे कमरे में चली गईं। स्यू ने खिड़की से बाहर झाँका। लता पर केवल एक ही पत्ता शेष रह गया था। बहुत तेज़ बारिश हो रही थी और बर्फीली हवा चल रही थी। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि वह पत्ता कभी भी गिर जाएगा। बह्रमैन कुछ न बोला और वापिस अपने कमरे में चला गया।

अगली सुबह जॉह्नसी सोकर उठी। बड़ी कमज़ोर-सी आवाज़ में उसने स्यू को परदा खोलने को कहा। स्यू घबराई हुई थी। उसने अनचाहे मन से परदा हटा दिया।

''ओह'', लता को देखते ही स्यू हैरानी से बोली।

''देखो, उस लता पर अभी भी एक पत्ता है। वह काफी हरा और स्वस्थ (ताज़ा) लग रहा है। आँधी और तेज़ हवाओं के बावजूद भी वह गिरा नहीं।''

''मैंने रात को तेज हवाओं की आवाज़ सुनी थी'' जॉह्नसी ने कहा। ''मैंने सोचा यह रात को गिर गया होगा। यह आज अवश्य ही गिर जाएगा और मैं मर जाऊँगी। ''

''तुम नहीं मरोगी'' स्यू ने कहा। ''तुम्हें अपने मित्रों के लिए जीना होगा। अगर तुम मर गई तो मेरा क्या होगा?''

जॉह्नसी धीरे से मुस्कराई और उसने अपनी आँखें बन्द कर लीं। वह कुछ समय बीतने के बाद बार-बार खिड़की के बाहर देखती रही और पत्ते को वहीं पाया।

शाम को एक और तूफ़ान आया, पर पत्ता गिरा नहीं। जॉह्नसी लेटी हुई काफी समय तक पत्ते को देखती रही। फिर उसने स्यू को बुलाया।

''मैं एक बुरी लड़की बन गई थी। तुमने कितने प्यार से मेरी देखभाल की लेकिन मैंने तुम्हें सहयोग नहीं दिया। मैं कष्ट में थी और निराश थी। अन्तिम पत्ते ने यह दिखा दिया है कि मैं कितनी दुर्व्यवहारी बन गई थी। मुझे अहसास हो गया है कि मौत की चाह रखना पाप है।''

स्यू ने जॉह्नसी को गले से लगा लिया। उसे बहुत सारा गर्म सूप लाकर पीने को दिया और एक दर्पण लाकर दिया। जॉह्नसी ने अपने बालों में कंघी की और उत्साह और खुशी से मुस्कराई।

दोपहर को डॉक्टर साहब आए। मरीज़ की जाँच के बाद उन्होंने स्यू से कहा, ''अब जॉह्नसी में जीने की इच्छा पैदा हो गई है। मुझे विश्वास है वह शीघ्र ही स्वस्थ हो जाएगी। अब मुझे नीचे जाकर बह्रमैन को देखना चाहिए। उसे भी निमोनिया हो गया है। परन्तु मुझे उम्मीद नहीं कि वह ज़िन्दा रहेगा।''

अगली सुबह स्यू आई और जॉह्नसी के बिस्तर पर बैठ गई। जॉह्नसी का हाथ अपने हाथों में लिया और कहने लगी, "मैं तुम्हें कुछ कहना चाहती हूँ। आज सुबह बह्रमैन की निमोनिया के कारण मृत्यु हो गई। वह केवल दो दिन ही बीमार रहा। पहले दिन चौकीदार ने उसे उसके बिस्तर पर देखा। उसके कपड़े और जूते गीले थे और वह काँप रहा था। वह उस तूफानी रात में घर से बाहर रहा था।"

फिर उनको उसके बिस्तर के पास एक सीढ़ी और जलती हुई लालटेन मिली। फर्श पर सीढ़ी के पास कुछ ब्रश और हरा और पीला रंग भी था। "प्यारी जॉह्नसी", स्यू ने कहा, "खिड़की से बाहर देख। उस आईवी लता के पत्ते को देख। तुम्हें हैरानी नहीं हुई, इतनी तेज़ हवा चलने के बावजूद भी यह फड़फड़ाता क्यों नहीं हैं? यह बह्रमैन की 'सर्वश्रेष्ठ-कलाकृति' है। उसने इसे उस रात बनाया, जब लता का अन्तिम पत्ता गिर चुका था।"

अभ्यास

(क) भाषा-बोध

(i) शब्दार्थ

फुसफुसाना	=	धीमी, अस्फुट आवाज़ में बोलना
लता	=	बेल
आग्रह	=	किसी बात पर बार-बार ज़ोर देना
खनिक	=	गड्ढा या खान खोदने वाला व्यक्ति
ज्वर	=	बुखार, ताप
सर्वश्रेष्ठ	=	सबसे उत्तम
कलाकृति	=	कलामयी रचना
निमोनिया	=	सर्दी से फेफड़े में श्लेष्मा के जमा हो जाने से होने वाली सूजन या प्रदाह

(ii) इन शब्दों के अर्थ लिखते हुए वाक्य बनायें :-

लता ________ ______________________________

आग्रह ________ ______________________________

अनचाहा ________ ______________________________

चित्र ________ ______________________________

मूर्ति ________ ______________________________

सर्वश्रेष्ठ ________ ______________________________

कलाकृति ________ ______________________________

(ख) विषय-बोध

(i) इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(क) स्यू और जॉह्नसी कौन थीं?

(ख) जॉह्नसी को क्या हो गया था?

(ग) जॉह्नसी के मन में क्या बात बैठ गई थी?

(घ) जॉह्नसी का मन बहलाने के लिए स्यू ने क्या किया?

(ङ) आईवी लता से गिरते पत्ते को देखकर जॉह्नसी ने स्यू से क्या कहा?

(च) बह्‌रमैन कौन था?

(छ) बह्‌रमैन की सर्वश्रेष्ठ कलाकृति क्या थी?

(ज) अन्तिम पत्ते को लता पर लगा देखकर जॉह्नसी को क्या विश्वास हो गया था?

(ii) इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें :-

(क) जॉह्नसी में जीने की चाह क्यों नहीं थी?

(ख) स्यू ने अपनी सहेली के लिए क्या-क्या काम किये?

(ग) बह्‌रमैन ने जॉह्नसी के लिए ऐसा क्या किया जिससे उसके मन में जीने की चाह उत्पन्न हो गई ?

(ग) व्यावहारिक व्याकरण

(i) इन शब्दों में से मूल शब्द अलग करके लिखें :-

चिन्तित	=	________	स्वास्थ्य	=	________
तूफानी	=	________	उत्सुकता	=	________
दिलचस्पी	=	________	परेशानी	=	________
बर्फीली	=	________	अन्तिम	=	________
शान्ति	=	________			

(ii) विपरीत शब्द लिखें :-

स्वस्थ	=	________	सहयोग	=	________
अंधेरा	=	________	इच्छा	=	________
निराश	=	________	दुर्व्यवहार	=	________
ज़िन्दा	=	________	प्यार	=	________

(iii) पर्यायवाची शब्द लिखें :-

उम्मीद = ________, ________

लता = ________, ________

बारिश = ________, ________

पत्ता = ________, ________

(iv) 'अनचाहा' में 'अन' और दुर्व्यवहार में 'दुर्' उपसर्ग है। 'अन' और 'दुर्' लगाकर नये शब्द बनायें :-

अन + जान	= ________		दुर् + दशा	= ________	
अन + ____	= ________		दुर् + ____	= ________	
अन + ____	= ________		दुर् + ____	= ________	

(घ) रचना-बोध

आपको सहेली/मित्र का पत्र मिला है जिससे आपको मालूम हुआ कि उसके पिता/माता दुर्घटनाग्रस्त हो गये हैं। उनकी स्थिति गम्भीर है। ऐसे में पत्र लिखकर उसका उत्साह बढ़ायें।

चिन्तन एवं मनन

जीवन में कई बार ऐसे क्षण आते हैं जब मन निराशा से भर जाता है। ऐसे क्षणों में भी हमें छोटी-छोटी चीज़ों में आशा की एक किरण दिखाई दे सकती है। अतः निराश होने की कोई आवश्यकता नहीं है। ऐसे सुख के छोटे-छोटे क्षण ढूँढ़ें।

लोगों को ऐसे ही परेशान करोगे तो तुम्हें भला कौन पूछेगा?

[आम के चुप होते ही अमरूद की बारी आती है]

अमरूद : मेरी कोई ग़लती नहीं है, सरकार! यद्यपि यहं बात सच है कि श्रीवास्तवजी के लड़के बंटी को खाँसी मेरी ही वजह से हुई है; तथापि इसमें मेरा रत्ती भर भी दोष नहीं। उस दिन श्रीवास्तवजी शाम के समय सब्ज़ी लेने बाजार गए तो मुझे खरीद लाए। बंटी ने झट मुझे खाना शुरू कर दिया। अब आप ही बताइए, सर्दी के दिन में शाम के समय अमरूद खाने से खाँसी नहीं होगी तो और क्या होगा? अगर मुझे सवेरे, थोड़ा दिन चढ़ने के बाद से लेकर दोपहर तक खाया जाये तो मैं कोई नुकसान नहीं पहुँचाता। नुकसान की कौन कहे, मैं तो बहुत फायदे की चीज़ हूँ , सरकार। अगर मुझे भोजन के साथ या भोजन करने के बाद खाया जाये तो मैं पाचन क्रिया बढ़ाने के साथ-साथ पेट की खूब अच्छी तरह सफाई भी करता हूँ। दाँतों और मसूड़ों के लिए भी मैं बहुत फायदेमंद चीज़ हूँ। डॉक्टरों का कहना है कि मैं दिमाग की गरमी और पागलपन दूर करने में भी सहायक हूँ। इसके अलावा पेट की कब्ज और बवासीर आदि में भी उपयोगी हूँ। अब आप ही बताएँ , सरकार अगर मुझे कोई सही तरीके से इस्तेमाल ही न करे तो इसमें मेरा क्या दोष? (अमरूद बैठ जाता है।)

[अमरूद के बैठते ही महाराजा आम के दूसरे मंत्री संतरा प्रसाद आ जाते हैं।

संतरा : (आम क तरफ देखकर) और इस गाजर की भी बहुत शिकायतें आ रही हैं, सरकार। जो भी इसे खाते हैं, दस्त और पेट की गड़बड़ी के शिकार हो जाते हैं। इसको कई बार समझाया गया, लेकिन यह अपनी आदत से बाज़ नहीं आ रही है।

आम : (गाजर की तरफ देखकर)क्यों ... गाजरजी आप तो बुज़ुर्ग हैं।आप ऐसी हरकत क्यों करती हैं?

गाजर : (आम की तरफ देखकर) श्रीमान संतरा प्रसाद द्वारा मुझ पर लगाए गए आरोप सच नहीं हैं, सरकार। आप मुझपर विश्वास करें। उलटी, दस्त और पेटदर्द आदि गड़बड़ियाँ मेरे कारण नहीं बल्कि मुझको खानेवालों की लापरवाही के कारण होती हैं। दरअसल मेरे शरीर पर उगे लंबे-लंबे बालों में 'एंटामीबा' नामक जीवाणु होते हैं, जो पेट के अंदर कीड़े पैदा करते हैं तथा पाचनक्रिया को प्रभावित करते हैं। अत: लोगों को चाहिए कि खाने से पहले मुझको अच्छी तरह से रगड़-रगड़कर साफ पानी से धो लें। बल्कि मैं तो विभिन्न प्रकार के विटामिनों का बहुत अच्छा और सस्ता स्रोत हूँ। मेरे अंदर विटामिन 'ए', विटामिन 'बी', विटामिन 'डी', विटामिन 'के' आदि प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होते हैं और शरीर के विकास में मैं महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हूँ।

[गाजर अपने स्थान पर बैठ जाती है। गाजर बैठते ही मूली बोलने लगती है।

मूली : (आम की तरफ देखकर) अगर इज़ाजत हो तो मैं भी कुछ कहूँ, श्रीमान।

आम : हाँ-हाँ, कहिए मूली देवी, क्या कहना चाहती हैं आप?

मूली : गाजर बहन जी ने जो कुछ भी कहा है वह बिलकुल सच कहा है, सरकार। गाजर बहन

की बातें काफी हद तक मेरे ऊपर भी लागू होती हैं। मेरे शरीर पर भी रोएँ होते हैं और उनमें भी घातक जीवाणु होते हैं। अत: मुझे भी खाने से पहले खूब अच्छी तरह धो लेना चाहिए।

केला : (आम की तरफ देखकर) उधर देखिए महाराज, अंगूर राम उधर कोने में छिपकर बैठे हैं। वैसे तो अपने आपको ये फायदेमंद फल बताते हैं, लेकिन सूचना मिली है कि इनको खाने से भी कई लोग बीमार पड़े हैं। इनका स्पष्टीकरण आवश्यक है, महाराज।

आम : (उचककर इधर-उधर देखते हुए) भई अंगूर राम, आप पीछे से उठकर सामने आइए और श्री केलाजी की बातों का जवाब दीजिये।

[एक छोटा-सा बच्चा जो अंगूर का मुखौटा पहने है, पीछे से उठकर आगे आता है। वह आम की तरफ हाथ जोड़कर नमस्कार करता है।]

अंगूर : वैसे तो श्रीमान केलाजी हमारे बुजुर्ग हैं, वह जो चाहें सो कहें लेकिन सच्चाई यही है, सरकार कि गुणों के मामले में मेरा कोई जवाब नहीं। मैं देखने में जितना छोटा हूँ उतना ही अधिक फायदेमंद हूँ। विटामिन 'ए', विटामिन 'बी',विटामिन 'सी', प्रोटीन, वसा कार्बोहाइड्रेट, कैल्शियम, फास्फोरस, लोहा आदि मनुष्य के लिए उपयोगी भला कौन-सा ऐसा तत्व है जो मुझमें नहीं है? तभी तो शरीर में खून बढ़ाने, खून की सफाई करने, पाचनक्रिया ठीक करने, नेत्र-ज्योति बढ़ाने में मेरी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। कमज़ोर और रोगियों के लिए तो मैं अति उपयोगी हूँ।

केला : (अंगूर की बात काटते हुए) अपने मुँह से अपने गुणों का बखान आप बहुत कर चुके। हम मानते हैं, अंगूर राम, कि आप बहुत गुणवान फल हैं, लेकिन क्या यह सत्य नहीं है कि आपको खाने से कई लोग पेट की गड़बड़ी के शिकार हुए हैं?

अंगूर : आपका आरोप सच है; लेकिन लोगों के बीमार होने में मेरी रत्ती भर भी ग़लती नहीं है। होता यह है कि ठेलेवाले मुझे खुला लेकर बेचा करते हैं। मेरे ऊपर तमाम धूल और गंदगी पड़ती रहती है तथा मक्खियाँ भिनभिनाती रहती हैं। लेकिन मुझे खरीदने वाले इतना भी कष्ट नहीं करते कि खाने से पहले ठीक से धो लें। बस, खरीदा और फटाफट खाने लगे। ऐसे में अगर वे बीमार पड़ते हैं तो फिर मेरा क्या दोष? एक दूसरी बात भी है। मुझे डाल पर से कच्चा ही तोड़ लिया जाता है और कार्बाइड आदि गैसों द्वारा मुझको पकाया जाता है। इन गैसों का कुछ अवशेष मेरी चमड़ी पर रह जाता है, जो लोगों को नुकसान पहुँचाता है।

आम : (हँसते हुए) ठीक है, ठीक है, अंगूर रामजी! हम मान गए कि लोगों के बीमार होने में आपका दोष नहीं है। लेकिन आप उपाय भी तो बताइए, ताकि लोग बीमार न पड़ें।

अंगूर : बहुत सीधा-सा उपाय है, हजूर। लोगों को चाहिए कि खाने से पहले मुझे अच्छी तरह से धो लें; बल्कि बेहतर तो यह होगा कि पाँच-दस मिनट तक मुझे पानी में ही डालकर छोड़ दें, फिर खूब धो-पोंछकर ही खाएँ।

[अंगूर बैठ जाता है। अंगूर के बैठते ही सेब बोलने लगता है।]

सेब : (आम की तरफ देखकर) हम सभी फलों की स्थिति लगभग एक जैसी ही है, महाराज। अधिकांश लोग हमें खाने का सही तरीका ही नहीं जानते, इसलिए हम लोग चाहते हुए भी उतना अधिक फायदा नहीं पहुँचा पाते जितना पहुँचाना चाहिए; बल्कि कभी-कभी तो उलटे उन्हें फायदे की जगह हमसे नुकसान हो जाता है। उदाहरण के लिए मुझको ही लीजिए। खनिज, लवण और विटामिनों की मैं खान हूँ, गुणों का मैं खजाना हूँ। मेरे बारे में तो यहाँ तक कहा गया है कि जो व्यक्ति रोज एक सेब खाए उसे कभी डॉक्टर के यहाँ जाने की ज़रूरत ही नहीं पड़ती। लेकिन बहुत-से ऐसे लोग हैं जो खाने से पहले मेरी चमड़ी, यानी छिलका उतार देते हैं। मेरे छिलके के ठीक नीचे विटामिन 'सी' और 'ए' होता है, जो छिलका उतारने पर नष्ट हो जाता है। लोगों को चाहिए कि मुझे छिलके सहित ही धोकर खाएँ।

[सेब अपनी जगह पर बैठ जाता है।]

आम : आप बिल्कुल ठीक कह रहे हैं; सेबजी। आप सबकी बातों से यही निष्कर्ष निकलता है कि लोग फलों को खाने में आवश्यक सावधानी नहीं बरतते। लोगों को चाहिए कि खाने से पहले फलों को खूब अच्छी तरह से धो लें। कुछ फलों की तासीर गरम होती है , जैसे मैं खुद हूँ। अत: लोगों को चाहिए कि खाने से पूर्व हमें कुछ देर तक पानी में भिगोए रखें। तीसरी बात यह कि फलों को उनके छिलके सहित खाना चाहिए। छिलके उतारने से फलों के पोषक तत्त्व नष्ट हो जाते हैं। अच्छा भाइयो, सभी को बहुत-बहुत धन्यवाद! अब सभा विसर्जित की जाती है।

[परदा गिरता है।]

अभ्यास

(क) भाषा-बोध

(i) शब्दार्थ

चौपाल = खुली मंडपाकार बैठक जहाँ गाँव के लोग बैठकर पंचायत आदि करते हों; छायादार बड़ा चबूतरा

कफ सिरप	=	खाँसी की दवा
नेत्र ज्योति	=	आँखों की देखने की शक्ति
इज़ाजत	=	आज्ञा
अवशेष	=	बचा हुआ
विसर्जित	=	अन्त, समाप्ति

(ख) विषय -बोध

(i) इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(क) अमरूद को कब खाना चाहिए?

(ख) गाजर ने खाने से पहले अपने बारे में क्या हिदायत दी?

(ग) उन दो सब्ज़ियों के नाम लिखें जिन पर रोएँ होते हैं।
(घ) अंगूर ने अपने क्या फायदे बताये?
(ङ) फलों को खाने से पहले धोना क्यों ज़रूरी है?
(च) उन दो फलों के नाम लिखें जिन्हें खाने से पहले कुछ देर तक पानी में भिगोना चाहिये?
(छ) सेब के छिलके क्यों नहीं उतारने चाहिए?

(ii) इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें :-

(क) फलों को खाने से पहले क्या-क्या सावधानी बरतनी चाहिए?
(ख) फलों को पकाने के लिए रसायनों का प्रयोग घातक है, क्यों?
(ग) पीले रंग के फलों के नाम लिखें, जिनमें विटामिन 'ए' की मात्रा अधिक होती है?
(ग) खट्टे/रस वाले फलों के नाम लिखें, इनमें विटामिन 'सी' की मात्रा अधिक होती है।
(ङ) कौन-से ऐसे फल हैं जो यदि काटकर थोड़ी देर पड़े रहें तो काले हो जाते हैं? उनमें भोजन का कौन-सा खनिज लवण होता है?
(च) फलों और सब्ज़ियों पर प्रचलित मुहावरे/लोकोक्ति इकट्ठी करें। जैसे आम के आम गुठलियों के दाम।
(छ) उन फलों के नाम लिखें जिन्हें छिलका सहित/छिलका रहित खाया जाता है।

छिलका सहित खाये जाने वाले फल	छिलका रहित खाये जाने वाले फल
________	________
________	________
________	________
________	________

(ग) व्यावहारिक व्याकरण

(i) इन शब्दों में से मूल शब्द अलग करें :-

प्रतिनिधित्व = प्रतिनिधि
फायदेमंद = ________
लापरवाही = ________
स्पष्टीकरण = ________
महत्त्वपूर्ण = ________
गुणवान = ________
अधिकांश = ________
विसर्जित = ________

(ii) इन शब्दों के विपरीत शब्द लिखें :-

फायदा = ________
आवश्यक = ________

कमजोर	=	________
रोगी	=	________
ज़रूरी	=	________
गुण	=	________
महत्त्वपूर्ण	=	________
विश्वास	=	________
उपयोगी	=	________
गुणवान	=	________
विसर्जन	=	________

(iii) उचित योजक शब्द लगाकर वाक्य पूरे करें :-

(1) ________ लोगों को ऐसे ही परेशान करोगे ________ तुम्हें भला कौन पूछेगा।

(2) ________ यह बात सच है कि बंटी को खाँसी मेरी वजह से ही हुई है ________ इसमें मेरा रत्ती भर भी दोष नहीं।

(3) दाँतों ________ मसूड़ों के लिए भी मैं फायदेमंद हूँ।

(4) इसको कई बार समझाया गया ________ यह अपनी आदत से बाज़ नहीं आ रही है।

(5) मेरे शरीर के रोओं में घातक जीवाणु होते हैं ________ मुझे खाने से पहले खूब अच्छी तरह से धो लेना चाहिए।

(6) आप ऐसा कोई उपाय बतायें________ लोग बीमार न पड़ें।

(7) लोग हमें खाने का सही तरीका नहीं जानते ______ हम लोग चाहते हुए भी पूरा फायदा नहीं पहुँचा पाते हैं।

योग्यता विस्तार

हमें स्वस्थ रहने के लिए संतुलित भोजन करना चाहिए। संतुलित भोजन वह है जिसमें सभी पोषक तत्त्व यथा-कार्बोहाइड्रेटस, प्रोटीन, वसा, विटामिन, खनिज लवण, जल और रेशे उचित मात्रा में हों।

नीचे एक ओर फलों के नाम दिये गये हैं, दूसरी ओर विटामिन के नाम हैं। जिस फल में जो विटामिन अधिक मात्रा में पाया जाता है उसके नीचे सही निशान अंकित करें।

फल	विटामिन ए	विटामिन बी	विटामिन सी	विटामिन डी	विटामिन के
अंगूर					
सेब					
आम					

अभिनय

इस एकाँकी का स्कूल के वार्षिक उत्सव पर अभिनय करवायें।

पाठ-24

नेत्रदान

प्रात: के ठण्डक युक्त हल्के-हल्के झोंके, चिड़ियों का चहचहाना, फूलों पर तितलियों का मंडराना और कोयल की मीठी कूक का आनन्द लेने का समय केवल रविवार को ही नसीब होता है। मैं अपने घर के बगीचे में चाय की चुसकियों का लुत्फ उठा रही थी कि सहसा मेरे फोन की घंटी बजी। इससे पहले कि मैं उठकर अन्दर जाती मेरी बेटी फोन लेकर बाहर ही आ गई। फोन पर बात करते ही मैं फूट-फूटकर रोने लगी। किसी अप्रिय घटना के घटित होने की आशंका से मेरे पति भी समाचार-पत्र छोड़ उठ खड़े हुए। उन्होंने बेटी को पानी लाने को कहा। पानी पीने के उपरान्त मैंने उन्हें बताया कि मेरी प्रिय सहेली का हृदय आघात के कारण देहान्त हो गया है। यह समाचार सुनकर अपने आप को स्थिर करते हुए उन्होंने कहा, 'जैसी भगवान की मर्जी। उसके आगे किसी की भी पेश नहीं चलती।' फिर बोले, 'हमें अभी उनके घर जाकर स्थिति को संभालना चाहिये।

ज्यों ही हम घर से निकलने लगे, त्यों ही मुझे याद आया कि उसने तो मेरे साथ नेत्रदान करने का संकल्प किया था। मैंने अपना संकल्प-पत्र उठाया और फोन द्वारा नेत्र बैंक को सूचना दी।

सदा चुहलबाजी करने वाली मेरी सहेली आज बच्चों के विलाप से बेखबर, शान्त, साध्वी-सी प्रतीत हो रही थी। घर में मातम छाया हुआ था। मुझे देखते ही उसकी बेटी मेरे गले से लिपटकर रोने लगी।

मैंने पूछा, "यह अचानक कैसे हुआ?"

उसने मुझे बताया कि सुबह चार बजे के करीब मम्मी ने घबराहट और छाती में दर्द की शिकायत की थी। हम उन्हें तुरन्त अस्पताल ले गये परन्तु तब तक वह हमें छोड़कर किसी और दुनिया में जा चुकी थी।

उसकी मृत्यु का सदमा हम सबके लिए असहनीय था लेकिन मैंने अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए उसके पति को एक ओर ले जाते हुए बताया कि मैंने नेत्र-बैंक में सूचना दे दी है। वे लोग आते ही होंगे।

उसके पति ने हैरानी से पूछा, "वह क्यों?"

मैंने उन्हें बताया कि उसने आपको नेत्रदान की इच्छा के बारे में कुछ नहीं बताया क्या?

उन्होंने कहा, "नहीं तो।" फिर वह कुछ सोचते हुए बोले, हाँ वह उस दिन फोन पर कुछ कह तो रही थी कि जब आप वापिस आओगे तब आपको एक महत्त्वपूर्ण ख़बर सुनाऊँगी। मैं कल रात को ही बाहर से आया हूँ इसलिये बात नहीं हो सकी।"

"हाँ, भाई साहिब गत रविवार एक संस्था की ओर से लगाये गये नेत्र दान शिविर में हम दोनों ने नेत्रदान संकल्प-पत्र भरे थे।" मैंने उन्हें अपना नेत्रदान संकल्प-पत्र दिखाते हुए कहा।

अभ्यास

(क) भाषा-बोध

(i) शब्दार्थ

नसीब = भाग्य
सहसा = अचानक
आशंका = सन्देह, शक
हृदयआघात = दिल का काम करना बन्द हो जाना
चुहलबाजी = शरारती
विलाप = रोना-धोना
असहनीय = जिसे सहन न किया जा सके
संकल्प = इच्छा, निश्चय
सर्वोपरि = सबसे ऊपर
स्वेच्छा = अपनी इच्छा
आर्द्र = नमी युक्त
शल्य = चीर-फाड़
आश्वस्त= जिसका डर दूर कर दिया गया हो

(ii) इन मुहावरों के अर्थ लिखते हुए वाक्य बनायें :-

लुत्फ उठाना ________ ________________________________
मातम छाना ________ ________________________________
गले से लिपटकर रोना ________ ________________________________
किसी और दुनिया में जाना ________ ________________________________
जीवन प्रकाशमान होना ________ ________________________________
यज्ञ सफल होना ________ ________________________________
जीवन के मायने बदलना ________ ________________________________

(ख) विषय-बोध

(i) इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(क) नेत्र दान करने का संकल्प किस-किस ने किया था?
(ख) हृदयाघात के कारण किसकी मृत्यु हो गई थी?
(ग) नेत्र संकल्प का क्या अर्थ है?
(घ) सहेली के परिवार वालों ने नेत्रदान करने का विरोध कैसे किया?
(ङ) एक व्यक्ति की आँखें कितने लोगों को लगाई जाती हैं?
(च) हमारे देश में कितने लोग ऐसे हैं जिनका आँखों का पर्दा किसी न किसी कारण धुँधला हो जाता है?

परिवार के बुजुर्ग भी हमारी बातचीत सुन रहे थे। सहसा उसके ससुर गुस्से में बोले, ''उसने हमसे पूछा तक नहीं?''

इतने में मेरे पति ने उन्हें प्यार से समझाते हुए कहा , ''बाबू जी, हर इन्सान का अपने शरीर पर अधिकार होता है, उसकी इच्छा सर्वोपरि है और अंगदान तो स्वेच्छा से होता है।''

मैंने बाबू जी को सहारा देते हुए कहा, ''हमें मृतक की इच्छा का सम्मान करना चाहिए।''

उन दोनों की सहमति समझते हुए मैंने रुई और बर्फ मँगवाई तथा बर्फ को रुई में लपेटकर उसकी बंद आँखों के ऊपर रख दिया और पंखा बन्द करने को कहा। ज्यों ही मैंने मृतका का सिर ऊँचा उठाया तभी उसकी सास जोर-से चिल्लाई, ''अरे, यह तुम क्या कर रही हो? मैंने उसे बहू नहीं, बेटी बनाकर रखा था। मैं उसके शरीर की चीर-फाड़ नहीं होने दूँगी।'' तभी उसके पति ने धीरे से बताया, ''माँ, तुम्हारी बहू ने जीते जी अपनी आँखें दान करने का संकल्प किया था।''

मैंने भी आर्द्र नेत्रों से उन्हें समझाया, ''मृतक का शरीर देहाग्नि के साथ ही राख हो जाता है। नेत्र दान से तो वह सदा दुनिया में रह सकेगी।''

तभी उसकी मौसी सास भी आ पहुँची। उसने रोते हुए पूछा, ''क्या हुआ दीदी बहू को?''

''अरी देख, यह सब मिलकर मेरी बहू की आँखें दान कर रहे हैं।'' मौसी सास ने कहा। ''अच्छा नेत्रदान कर रहे हैं। दीदी, यह तो बड़े गर्व की बात है। मैंने भी यह संकल्प-पत्र चार वर्ष पूर्व भरा था। आप तो जानती ही है कि मेरा पोता देख नहीं पाता। हो सकता है बहू की आँखों से मेरे पोते का जीवन प्रकाशमान हो जाये।'' तभी सहेली का बेटा बोला, ''दादी जी, हो सकता है मम्मी की आँखें ही आपके पोते को मिल जायें।'' मैंने उसे प्यार से समझाया, ''नहीं बेटा, यह बात गुप्त रखी जाती है। फिर दोनों आँखें नहीं, एक व्यक्ति को केवल एक आँख ही लगाई जाती है। दूसरी आँख से किसी अन्य व्यक्ति का जीवन रोशन हो सकता है।''

मैंने उन्हें बताया, ''हमारे देश में 25 लाख से अधिक बच्चे ऐसे हैं जिनकी आँखों का सामने वाला पर्दा (कोर्निया) किसी न किसी कारण धुँधला हो जाता है जिससे उन्हें देखने में कठिनाई होती है। धुँधले पर्दे की जगह यदि साफ़ पर्दा लगा दिया जाये तो वे भी देख सकते हैं। मगर यह तभी सम्भव है यदि कोई नेत्र दान करे।''

इतने में नेत्र बैंक से नेत्र विशेषज्ञ, शल्य चिकित्सक और उनकी टीम के अन्य सदस्य आ गये। उन्होंने परिवार की सहमति तथा सारी औपचारिकताएँ पूरी करने के बाद 15 से 20 मिनट में आँखें लेने के बाद नकली आँखें लगा दीं ताकि उसका चेहरा सामान्य बना रहे। मेरा धन्यवाद किया और चले गये।

मेरा यज्ञ सफल हो गया था। मैंने हाथ जोड़कर भरे नयनों से, सहयोग के लिए पूरे परिवार का धन्यवाद किया। मैं आश्वस्त थी कि अब मेरी सहेली फिर से संसार को देखने के लिए एक नई देह में प्रवेश करेगी। नेत्र दान ने उसके जीवन के मायने ही बदल दिये थे।

अभ्यास

(क) भाषा-बोध

(i) शब्दार्थ

नसीब = भाग्य
सहसा = अचानक
आशंका = सन्देह, शक
हृदयआघात = दिल का काम करना बन्द हो जाना
चुहलबाजी = शरारती
विलाप = रोना-धोना
असहनीय = जिसे सहन न किया जा सके
संकल्प = इच्छा, निश्चय
सर्वोपरि = सबसे ऊपर
स्वेच्छा = अपनी इच्छा
आर्द्र = नमी युक्त
शल्य = चीर-फाड़
आश्वस्त= जिसका डर दूर कर दिया गया हो

(ii) इन मुहावरों के अर्थ लिखते हुए वाक्य बनायें :-

लुत्फ उठाना ________ ____________________
मातम छाना ________ ____________________
गले से लिपटकर रोना ________ ____________________
किसी और दुनिया में जाना ________ ____________________
जीवन प्रकाशमान होना ________ ____________________
यज्ञ सफल होना ________ ____________________
जीवन के मायने बदलना ________ ____________________

(ख) विषय-बोध

(i) इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(क) नेत्र दान करने का संकल्प किस-किस ने किया था?
(ख) हृदयाघात के कारण किसकी मृत्यु हो गई थी?
(ग) नेत्र संकल्प का क्या अर्थ है?
(घ) सहेली के परिवार वालों ने नेत्रदान करने का विरोध कैसे किया?
(ङ) एक व्यक्ति की आँखें कितने लोगों को लगाई जाती हैं?
(च) हमारे देश में कितने लोग ऐसे हैं जिनका आँखों का पर्दा किसी न किसी कारण धुँधला हो जाता है?

(छ) नेत्र बैंक की टीम के पहुँचने से पूर्व क्या करना चाहिए?

(ज) नेत्र दान करने में कितना समय लगता है?

(ii) **इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें :-**

(क) नेत्रदान संकल्प-पत्र के बारे में आप क्या जानते हैं? लिखें।

(ख) नेत्र दान के क्या लांभ है?

(ग) व्यावहारिक व्याकरण

(i) **'अ' लगाकर विपरीत शब्द बनायें :-**

प्रिय = ________

सहनीय = ________

सहमति = ________

सहयोग = ________

सम्भव = ________

इन विपरीत अर्थ वाले शब्दों को भी समझें :-

अर्थ = अनर्थ

इच्छा = अनिच्छा

ठण्डक = तपन

कर्त्तव्य = अधिकार

(ii) **लिंग बदलें :-**

बेटा = ________

पति = ________

सास = ________

माता = ________

मौसी = ________

दादी = ________

साधु = ________

(iii) **'बे' लगाकर नये शब्द बनायें :-**

बे + ख़बर = ________

बे + सहारा = ________

बे + शक = ________

बे + मेल = ________

बे + रोक = ________

(vi) **'नेत्र' शब्द के पर्यायवाची लिखें।**

योग्यता विस्तार

- नेत्र दान किसी भी आयु में मरणोपरान्त किया जा सकता है।
- एक व्यक्ति की आँखें किन्हीं दो व्यक्तियों को प्रत्यारोपित की जाती हैं।
- यह सूचना गुप्त रखी जाती है कि किस व्यक्ति को किसकी आँख लगी है।
- नेत्र दान करने वाले को दानी (Donar) और नेत्र प्राप्त करने वाले को प्राप्त कर्त्ता (Donee) कहा जाता है।
- नेत्र लेने के बाद इन्हें 24 से 36 घंटे तक रखा जाता है, जहाँ इनकी जाँच-पड़ताल की जाती है।
- नेत्र बैंक में एक रजिस्टर लगा होता है जिसमें इच्छुक व्यक्तियों के नाम दर्ज़ होते हैं। क्रम अनुसार ही नेत्र प्रत्यारोपित किये जाते हैं।
- नेत्र लगाने को ग्राफटिंग (Grafting) कहते हैं।
- केवल आँख का पर्दा (Cornea) ही प्रत्यारोपित किया जाता है।
- नेत्र में रोशनी आने में तीन से चार माह लगते हैं।
- कोर्निया के धुंधले होने के अनेक कारण जैसे आँख में संक्रमण, चोट, खान-पान में कमी और आप्रेशन में कोई बाधा आदि हैं।
- जिस व्यक्ति का रेटिना खराब हो गया हो या पीलिया, कैंसर, एडज़, रेबीज जैसे संक्रामक रोग से पीड़ित मृतक के नेत्र दान के अयोग्य होते हैं।
- नेत्र बैंक की टीम के पहुँचने तक मृत्यु के उपरान्त दोनों आँखें बन्द कर दें, पंखा न चलायें। बर्फ रुई में लपेटकर उसकी आँखों पर रख दें। तकिया लगाकर मृतक का सिर ऊँचा कर दें।

संकल्प

- कोई भी जीवित व्यक्ति संकल्प पत्र भर सकता है।
- संकल्प पत्र निकटवर्ती नेत्र बैंक को भेजा जाता है।
- नेत्र बैंक से नेत्र दानी कार्ड (Eye Donar Card) मिलता है। इसे हमेशा अपने पास सम्भाल कर रखें।
- संकल्प पत्र न भी भरा हो तो भी नेत्र दान हो सकता है। उत्तराधिकारी की सहमति आवश्यक है।

पाठ-25

पदावली

(1)

हमारे प्रभु , औगुन चित न धरौ।
समरदसी है नाम तुम्हारो, सोई पार करौ।।
इक लोहा पूजा में राखत, इक घर बधिक परौ।
सो दुविधा पारस नहिं जानत, कंचन करत खरौ।।
इक नदिया इक नार कहावत, मैलो नीर भरौ।
जब मिलि गए तब एक बरन ह्वै, गंगा नाम परौ।।
तन माया, ज्यौ ब्रह्म कहावत, सूर सु मिलि बिगरौ।
कै इनकौ निरधार कीजियै, कै प्रन जात टरौ।।

-सूरदास-

(2)

मैया मोहि दाऊ बहुत खिझायौ।
मौसों कहत मोल को लीनो, तू जसुमति कब जायौ।।
कहा करौ, इहि रिस के मारै खेलन ह्वै नहिं जात।
पुनि-पुनि कहत कौन है माता, को है तेरौ तात।।
गोरे नन्द, जसोदा गोरी तुम कत स्यामल गात।
चुटकी दे दे ग्वाल नचावत, हँसत सबै मुस्कात।।
तू मोहौं कौं मारन सीखी, दाउहिं कबहूँ न खीझै।
मोहन मुख रिस की ये बातें, जसुमति सुनि-सुनि रीझै।।
सुनहु कान्ह, बालभद्र चबाई, जनमत ही को धूत।
सूर स्याम मोहिं गोधन की सौं, हौं माता तू पूत।।

-सूरदास-

(3)

मैंने नाम रतन धन पायौ।
वसतु अमोलक दी मेरे सतगुरु करि किरपा अपणायो।।
जनम जनम की पूँजी पाई, जग में सब खवायो।
खरचै नहिं कोई चोर न लवै दिन-दिन बढ़त सवायौ।।
सत की नाँव खेवटिया सतगुरु भवसागर तरि आयौ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर हरखि हरखि जस गायौ।।

-मीराबाई-

(4)

पग घुंघरू बाँध मीरा नाची रे।
मैं तो अपने नारायण की आपहि हो गई दासी रे।
लोग कहैं मीरा भई बावरी न्यात कहै कुलनासी रे।।
विष का प्याला राणा जी भेज्या पीवत मीरा हाँसी रे।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर सहज मिले अविनासी रे।।

-मीरा बाई -

अभ्यास

भाषा-बोध

(i) शब्दार्थ

औगुन	= अवगुण	चित	=	हृदय
धरौ	= धारण करना	समदरसी	=	एक समान सबको समझना
राखत	= रखा जाना	बधिक	=	शिकारी,
कंचन	= सोना	नार	=	नाला
पारस	= एक प्रकार का पत्थर जिसके छूने से लोहा सोना हो जाता है।			
बरन्	= रंग	बिगरौ	=	बिगड़ जाना
टरौ	= टलना	मोहि	=	मुझे
दाऊ	= कृष्ण के बड़े भाई 'बलराम'	खिझायौ	=	तंग करना
मोसौं	= मुझसे	प्रन	=	प्रण
मोल	= मूल्य	इहि	=	इस
रिस	= क्रोध	पुनि-पुनि	=	बार-बार
तात	= पिता	स्यामल	=	साँवला
गात	= शरीर	रीझै	=	प्रसन्न होना,
कान्ह	= श्री कृष्ण	चबाई	=	चुगलखोर
धूत	= चालाक	गोधन	=	गऊओं रूपी धन
खवायो	= खो देना	बावरी	=	पागल
न्यात	= रिश्तेदार	कुलनासी	=	कुल का नाश करने वाली

(ii) हिन्दी रूप लिखें :-

औगुन = ________

समदरसी = ________

बधिक = ________

बरन = ________

मोसों = ________

कान्ह = ________

मोहीं = ________

बस्तु = ________

किरपा = ________

इक = ________

(ख) विषय-बोध

(i) इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(क) श्री कृष्ण ने यशोदा से क्या शिकायत की है?

(ख) माता ने श्री कृष्ण को कैसे विश्वास दिलाया कि वह उसका पुत्र है?

(ग) बलराम श्री कृष्ण को कैसे खिझाते थे?

(घ) मीरा ने राम रूपी रत्न धन कैसे प्राप्त किया?

(ङ) 'सत की नाव' से क्या तात्पर्य है?

(च) मीरा को जहर क्यों दिया गया?

(ii) इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें :-

(क) तीसरे पद के आधार पर मीरा की भक्ति भावना पर अपने विचार लिखो।

(ख) चौथे पद की प्रसंग सहित व्याख्या करो।

(ग) व्यावहारिक व्याकरण

पर्यायवाची लिखें :

प्रभु = ________

कंचन = ________

जल = ________

गंगा = ________

माता = ________

पूत = ________

कृपा = ________

प्रयोगात्मक व्याकरण

(1) विकारी शब्द

(i) ***लड़का*** पढ़ता है।
(ii) ***लड़के*** पढ़ते हैं।
(iii) ***लड़की*** पढ़ती है।
(iv) ***लड़कियाँ*** पढ़ती हैं।

'लड़का' एक संज्ञा शब्द है। संज्ञा से अभिप्राय किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, गुण या भाव के नाम से है। यहाँ 'लड़का' शब्द से सम्पूर्ण 'लड़का' जाति का ज्ञान हो रहा है। उपर्युक्त पहले वाक्य में प्रयुक्त 'लड़का' शब्द दूसरे वाक्य में 'लड़के' तीसरे वाक्य में 'लड़की' तथा चौथे वाक्य में 'लड़कियाँ' रूप में परिवर्तित होकर आया है। इसी परिवर्तित रूप को शब्द का विकारी रूप कहते हैं। अत: संज्ञा शब्द विकारी होते हैं।

(i) ***यह*** मेरी पुस्तक है।
(ii) ***इसकी*** कीमत बीस रुपये है।
(iii) ***इसे*** मैं बहुत रुचि से पढ़ता हूँ।
(iv) ***इसको*** मैं संभाल कर रखूँगा।

'यह' एक सर्वनाम शब्द है। सर्वनाम उन शब्दों को कहते हैं जो संज्ञा की जगह प्रयुक्त होते हैं। उपर्युक्त पहले वाक्य में प्रयुक्त 'यह' सर्वनाम दूसरे वाक्य में 'इसकी' तीसरे वाक्य में 'इसे' तथा चौथे वाक्य में 'इसको' रूप में परिवर्तित होकर आया है। अत: सर्वनाम शब्द भी विकारी होते हैं।

(i) ***काला*** घोड़ा चर रहा है।
(ii) ***काले*** घोड़े चर रहे हैं।
(iii) ***काली*** घोड़ी चर रही है।

'काला' एक विशेषण शब्द है। संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताने वाले शब्दों को 'विशेषण' कहते हैं। 'काला' शब्द घोड़े की विशेषता बता रहा है। अत: 'काला' विशेषण है। उपर्युक्त पहले वाक्य में प्रयुक्त 'काला' शब्द दूसरे वाक्य में 'काले' तथा तीसरे वाक्य में 'काली' रूप में प्रयुक्त हुआ है। अत: विशेषण शब्द भी विकारी होते हैं।

(i) बालक ***भागता है।***
(ii) बालक ***भागते हैं।***
(iii) बालिका ***भागती है।***
(iv) बालिकाएँ ***भागती हैं।***

'भागना' एक क्रिया है। क्रिया से अभिप्राय किसी कार्य के करने या होने से है। उपर्युक्त 'भागना' क्रिया के रूपों में भी परिवर्तन होता है। जैसे-'भागता है', 'भागते हैं', 'भागती हैं'। अत: क्रिया भी विकारी है।

अत: स्पष्ट है कि जिन शब्दों के रूप में विकार (परिवर्तन) होता है, वे विकारी शब्द कहलाते हैं। विकारी शब्द चार प्रकार के होते हैं :-

(1) संज्ञा (2) सर्वनाम (3) विशेषण (4) क्रिया

(2) अविकारी शब्द

(i) चार्वी **और** मेधावी पढ़ रही हैं।

(ii) वह **ज़ोर** से हँसा।

(iii) बालक **धीरे-धीरे** चलता है।

(iv) बच्चो ! **अब** पढ़ोगे? **या** खेलोगे?

(v) रजनी बुद्धिमान है **परन्तु** ईमानदार नहीं।

(vi) **वाह** ! कितना सुन्दर बगीचा है।

उपर्युक्त वाक्यों में **और, ज़ोर, धीरे-धीरे, अब, या, परन्तु, वाह** ऐसे शब्द हैं कि वाक्य चाहे कैसा भी हो, ये शब्द ज्यों के त्यों ही रहते हैं। इनमें परिवर्तन न होने के कारण इन्हें अविकारी शब्द कहा जाता है।

अविकारी शब्द भी चार प्रकार के हैं :

(1) क्रिया विशेषण (2) समुच्चयबोधक (3) सम्बन्धबोधक (4) विस्मयादिबोधक

(1) विकारी शब्द

संज्ञा

(i) **कपिल मुनि मुक्तसर** आश्रम में रहते थे।

(ii) क्या तुम्हारे पास कोई **मकान** है?

(iii) उनको **राहुल** पर **गुस्सा** आया।

(iv) राहुल ने **मेहनत** करने की ठान ली।

उपर्युक्त वाक्यों में '**कपिल मुनि**', '**राहुल**', व्यक्तियों के नाम हैं। '**मुक्तसर** स्थान का नाम है। '**मकान**' वस्तु का नाम है। '**गुस्सा**' भाव विशेष का तथा '**मेहनत**' गुण विशेष का नाम है। अतएव **कपिल मुनि**, **राहुल**, **मुक्तसर**, **मकान**, **गुस्सा** तथा **मेहनत** किसी न किसी के नाम को प्रकट कर रहे हैं। ऐसे पद, जो किसी के नाम का बोध कराएँ, संज्ञा कहलाते हैं।

अतएव, किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं।

(क) (1) **लाल बहादुर शास्त्री भारत** के दूसरे प्रधानमंत्री थे।

(2) उनका जन्म **बनारस में** हुआ।

(3) वे मेला देखने **गंगा** पार गये।

ऊपर लिखे पहले वाक्य में '**लाल बहादुर शास्त्री**' किसी विशेष व्यक्ति के नाम का बोध कराता है। '**भारत**' शब्द से देश विशेष का ज्ञान होता है। दूसरे वाक्य में '**बनारस**' कहने से एक विशेष स्थान का ही विचार मन में आता है। इसी प्रकार तीसरे वाक्य में '**गंगा**' शब्द से एक विशेष नदी अर्थात् गंगा नदी का बोध होता है।

अत: जिस शब्द से किसी विशेष व्यक्ति, स्थान या वस्तु का बोध हो, उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।

(ख) (1) लाल बहादुर शास्त्री का जन्म साधारण **परिवार** में हुआ था।

(2) शास्त्री जी की **पुत्री** बीमार थी।

(3) उनका **स्कूल** गंगा पार था।

(4) शास्त्री जी अनेक बार **जेल** गये।

ऊपर के प्रथम वाक्य में '**परिवार**', दूसरे में '**पुत्री**' और तीसरे में '**स्कूल**' और चौथे में '**जेल**' ऐसे शब्द हैं जो किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु या स्थान को सूचित नहीं करते।

- '**परिवार**' किसी भी परिवार के लिए कहा जा सकता है।
- हरेक '**पुत्री**' के लिए '**पुत्री**' शब्द का प्रयोग किया जाता है।
- प्रत्येक '**स्कूल**' को '**स्कूल**' ही कहा जाता है।
- हरेक '**जेल**' के लिए '**जेल**' शब्द का ही प्रयोग होता है।

अर्थात् 'परिवार' कहने से सभी परिवारों, 'पुत्री' कहने से सभी पुत्रियों, 'स्कूल' कहने से सभी स्कूलों तथा जेल कहने से सभी जेलों का बोध होता है, किसी एक का नहीं।

अत: ये शब्द किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु या स्थान का बोध नहीं कराते अपितु ये शब्द पूरी जाति (वर्ग) का ज्ञान कराते हैं। इसीलिए ये शब्द जातिवाचक संज्ञाएँ हैं।

अत: जिस शब्द से किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान की सम्पूर्ण जाति या वर्ग का बोध हो, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।

(ग) (1) शंकर सदा **सच** बोलता था।

(2) वह **बचपन** से **मेहनत** करता था।

(3) **ईमानदारी सुख** की खान है।

(4) शंकर **आनन्द** से रहने लगा।

ऊपर के वाक्यों में '**सच**', '**मेहनत**', '**ईमानदारी**', गुण के नाम हैं। '**बचपन**', एक अवस्था का नाम है। '**सुख**' एक दशा का नाम है तथा '**आनन्द**' एक भाव का नाम है। यहाँ 'सच', 'मेहनत', 'ईमानदारी', 'बचपन', 'सुख' तथा 'आनन्द' ये किसी व्यक्ति, स्थान या वस्तु के नाम नहीं हैं अपितु उनके गुण, अवस्था, दशा तथा भाव को प्रकट कर रहे हैं। यहाँ ये भाववाचक संज्ञाएँ हैं।

अत: जो संज्ञा शब्द किसी व्यक्ति या वस्तु के गुण, अवस्था, दशा, भाव आदि के नाम को प्रकट करे, उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं।

विशेष :-* *भाववाचक संज्ञा की सबसे बड़ी पहचान यह है कि उसका चित्र नहीं बन सकता। जैसे बच्चे (जातिवाचक संज्ञा) का चित्र बन सकता है, बचपन (भाववाचक संज्ञा)

का नहीं। इसी प्रकार शंकर (व्यक्तिवाचक संज्ञा) का चित्र बन सकता है उसकी ईमानदारी (भाववाचक संज्ञा) का नहीं।

संज्ञा के विकारी तत्त्व

संज्ञा एक विकारी शब्द है। जैसे- लड़का से लड़की, लड़के, लड़कों, लड़कियाँ आदि अनेक रूप बनते हैं। संज्ञा में विकार लिंग, वचन व कारक के कारण होता है। अतः इन्हें संज्ञा के विकारी तत्त्व कहा जाता है। इनका क्रमशः विवेचन इस प्रकार है-

लिंग

(क)	*(ख)*
(1) बालक फुटबाल खेलता है।	(1) बालिका फुटबाल खेलती है।
(2) लेखक कहानी लिखता है।	(2) लेखिका कहानी लिखती है।
(3) लड़का पुस्तक पढ़ रहा है।	(3) लड़की पुस्तक पढ़ रही है।
(4) माली पौधों को पानी देता है।	(4) मालिन पौधों को पानी देती है।

उपर्युक्त ***'क' वर्ग*** के वाक्यों में ***'बालक'***,***'लेखक'***,***'लड़का'*** तथा ***'माली'*** शब्द पुरुष जाति का बोध कराते हैं तथा ***'ख' वर्ग*** के वाक्यों में ***'बालिका'***, ***'लेखिका'***, ***'लड़की'*** तथा ***'मालिन'*** शब्द स्त्री जाति का बोध कराते हैं अतः ***'क' वर्ग*** के शब्द पुल्लिंग तथा ***'ख' वर्ग*** के शब्द स्त्रीलिंग हैं। अतः शब्द के जिस रूप द्वारा यह जाना जाए कि जिसके विषय में बात की जा रही है, वह पुरुष जाति का है या स्त्री जाति का, उसे लिंग कहा जाता है। हिन्दी में दो लिंग हैं-

(1) पुल्लिंग (2) स्त्रीलिंग

(1) पुल्लिंग – पुरुष जाति का बोध कराने वाले शब्द 'पुल्लिंग' कहलाते हैं। जैसे-

(i) धोबी कपड़े धोता है।

(ii) कुत्ता भौंक रहा है।

(iii) कवि कविता सुनाता है।

(iv) घोड़ा घास खा रहा है।

उपर्युक्त वाक्यों में ***'धोबी'***,***'कुत्ता'***, ***'कवि'*** तथा ***'घोड़ा'*** शब्द पुल्लिग हैं क्योंकि ये सभी शब्द पुरुष जाति का बोध करा रहे हैं।

(2) स्त्रीलिंग – स्त्री जाति का बोध कराने वाले शब्द 'स्त्रीलिंग' कहलाते हैं। जैसे-

(i) चिड़िया चहचहाती है।

(ii) नानी कहानी सुनाती है।

(iii) लड़की नाच रही है।

(iv) गाय घास खा रही है।

उपर्युक्त वाक्यों में *'चिड़िया'*, *'नानी'*, *'लड़की'* तथा *'गाय'* शब्द स्त्रीलिंग शब्द हैं; क्योंकि ये सभी शब्द स्त्री जाति का बोध करा रहे हैं।

वचन

(क)	(ख)
(i) लड़का खेलता है।	(i) लड़के खेलते हैं।
(ii) लड़की खेलती है।	(ii) लड़कियाँ खेलती हैं।
(iii) बच्चा सो रहा है।	(iii) बच्चे सो रहे हैं।
(iv) कुत्ता भौंक रहा है।	(iv) कुत्ते भौंक रहे हैं।
(v) चिड़िया उड़ रही है।	(v) चिड़ियाँ उड़ रही हैं।

उपर्युक्त 'क' वर्ग के वाक्यों में 'लड़का', 'लड़की', 'बच्चा', 'कुत्ता' तथा 'चिड़िया' शब्दों से एक की संख्या का बोध होता है तथा *'ख'* वर्ग के वाक्यों में 'लड़के' 'लड़कियाँ', 'बच्चे', कुत्ते' तथा 'चिड़ियाँ' शब्दों से एक से अधिक संख्या का बोध होता है। अत: ऐसे शब्द जिन से संज्ञाओं की संख्या का पता चलता है, वे 'वचन' कहलाते हैं।

वचन के भेद

वचन के दो भेद हैं *(1) एकवचन* *(2) बहुवचन*

(1) एकवचन – शब्द के जिस रूप से एक का बोध होता है, उसे एकवचन कहते हैं। जैसे-

(i) गाय चर रही है।

(ii) कबूतर उड़ रहा है।

(iii) गाड़ी चल रही है।

(iv) लड़की पढ़ रही है।

उपर्युक्त वाक्यों में *'गाय'*, *'कबूतर'*,*'गाड़ी'* तथा *'लड़की'* शब्द एकवचन हैं; क्योंकि इनसे एक ही 'गाय', 'कबूतर','गाड़ी' और 'लड़की' का बोध हो रहा है।

(2) बहुवचन – शब्द के जिस रूप से अधिक का बोध होता है, उसे बहुवचन कहते हैं। जैसे-

(i) स्त्रियाँ पानी भर रही हैं।

(ii) पुस्तकें अलमारी में पड़ी हैं।

(iii) लड़के नाच रहे हैं।

(iv) घोड़े दौड़ रहे हैं।

उपर्युक्त वाक्यों में *'स्त्रियाँ'*, *'पुस्तकें'*, *'लड़के'*, तथा *'घोड़े'* शब्द बहुवचन हैं; क्योंकि इनसे एक से अधिक स्त्रियों, पुस्तकों, लड़कों तथा घोड़ों का बोध हो रहा है।

कारक

(क) सिपाही ने दरबार में चाबुक से किसान को मारा।

इस वाक्य में '**मारा**' क्रिया है।

किसने मारा ?	सिपाही ने
कहाँ मारा ?	दरबार में
किससे मारा ?	चाबुक से
किसको मारा ?	किसान को

अत: स्पष्ट है कि वाक्य में '**सिपाही ने**', '**दरबार में**', **चाबुक से** तथा '**किसान को**' शब्द-रूपों का सम्बन्ध '**मारा**' क्रिया से सूचित हो रहा है।

(ख) (i) यह लेखक का नौकर है।

(ii) यह मेरा नौकर है।

यहाँ पहले वाक्य में '**लेखक**' **(संज्ञा) का सम्बन्ध नौकर (संज्ञा) से है** तथा दूसरे वाक्य में '**मेरा (सर्वनाम) का सम्बन्ध नौकर (संज्ञा) से है।**

अत: संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्दों के जिस रूप से उनका सम्बन्ध क्रिया तथा दूसरे शब्दों से जाना जाता है, उसे कारक कहते हैं।

कारकीय सम्बन्ध को प्रकट करने वाले चिह्नों (ने, में, से, को, का आदि) को **कारक चिह्न** कहा जाता है।

1. (i) **ठग ने** झगड़ा किया। (ii) **राजा** सुन रहा था।

पहले वाक्य में झगड़ने की क्रिया करने वाला ठग है, अत: ठग **कर्त्ता** है।

दूसरे वाक्य में सुनने की क्रिया राजा द्वारा हो रही है, अत: राजा **कर्त्ता** है।

यहाँ पहले वाक्य में '**ठग ने**' और दूसरे वाक्य में '**राजा**' **कर्त्ता कारक** हैं।

विशेष :- दूसरे वाक्य में कर्त्ता (राजा) कारक चिह्न रहित है।

अत: संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के करने वाले का पता चलता है,उसे कर्त्ता कारक कहते हैं।

2. लोगों ने **घोड़े को** रोक लिया।

इस वाक्य में क्रिया 'रोकना' तथा कर्त्ता 'लोग' हैं। **क्रिया का फल घोड़े पर** पड़ रहा है। अत: **घोड़े को** में कर्म कारक है।

अत: संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप पर क्रिया का फल पड़ता है, उसे कर्म कारक कहते हैं।

3. राजा ने **कलम से** लिखा।

यहाँ कर्त्ता ने (राजा) लिखने की क्रिया 'कलम से' की है, अत: '**कलम से**' में **करण कारक** है।

अतः संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के साधन का बोध हो, उसे करण कारक कहते हैं।

4. (i) उसने **राजा को** दवात दी।

(ii) नौकर **राजा के लिए** दवात लाया।

इन वाक्यों में '**राजा को**' तथा '**राजा के लिए**' सम्प्रदान कारक हैं क्योंकि 'देने' और 'लाने' क्रियाओं का कार्य इनके लिए हुआ है।

अतः जिसे कुछ दिया जाये या जिसके लिए कुछ किया जाये, ऐसा बोध कराने वाले संज्ञा या सर्वनाम के रूपों को सम्प्रदान कारक कहते हैं।

5. **झरनों से** पानी गिर रहा था।

इस वाक्य में '**झरनों से**' पानी के अलग होने का बोध हो रहा है इसलिए यहाँ अपादान कारक है। **अतः संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से अलग होना पाया जाये, वह अपादान कारक कहलाता है।**

6. (i) **रेणुका** का मेला रेणुका **झील के किनारे** आयोजित होता है।

(ii) रेणुका **परशुराम की** माता का नाम है।

यहाँ पहले वाक्य में '**रेणुका का**' मेले से , '**झील का**' किनारे से तथा दूसरे वाक्य में '**परशुराम का**' माता से सम्बन्ध प्रकट हो रहा है। अतः यहाँ सम्बन्ध कारक है।

अतः संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका सम्बन्ध किसी दूसरे शब्द के साथ प्रकट हो, उसे सम्बन्ध कारक कहते हैं।

विशेष :- क्रिया के साथ सम्बन्ध न कराने के कारण कुछ विद्वान सम्बन्ध कारक को कारक नहीं मानते हैं।

7. (i) हमने **कमरों में** सामान रख दिया।

(ii) बन्दर **वृक्षों पर** कूदते नज़र आ रहे थे।

इन वाक्यों में '**कमरों में**', '**वृक्षों पर**' पद उन स्थानों को सूचित कर रहे हैं, जहाँ क्रिया के आधार का बोध होता है। अतः यहाँ अधिकरण कारक है।

अतएव संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के आधार का बोध हो, उसे अधिकरण कारक कहते हैं।

8. **हे ईश्वर!** मेरी रक्षा करो।

अरे बच्चो! तुम क्या कर रहे हो?

यहाँ '**हे ईश्वर**' में ईश्वर को पुकारा जा रहा है तथा '**अरे बच्चो**' में बच्चों को सम्बोधित किया जा रहा है, अतः यहाँ सम्बोधन कारक है।

अतः शब्द के जिस रूप से किसी को पुकारने अथवा सम्बोधन करने का ज्ञान हो, वहाँ सम्बोधन कारक होता है।

सम्बोधन कारक का प्रयोग कारक चिह्न के बिना भी होता है। जैसे-भाई ! ज़रा इधर आओ।

विशेष :- सम्बोधन कारक का सम्बन्ध वाक्य में क्रिया अथवा किसी दूसरे शब्द से नहीं होता, अतएव कुछ विद्वान इसे कारक नहीं मानते।

सर्वनाम

गोपू एक ग्वाला था। **उसकी** कुटिया के पिछवाड़े गोबर के उपले पड़े हुए थे। **उसने** बड़ी मेहनत से **उन्हें** बनाया था। एक दिन **वह** घर पर नहीं था। **उसके** उपले गाँव के शरारती बच्चों ने उठा लिये।

ऊपर के गद्यांश में 'गोपू' एक व्यक्ति तथा 'उपले' एक वस्तु के नाम हैं अत: 'गोपू' और उपले संज्ञा शब्द हैं। उपरोक्त पंक्तियों में रेखांकित किए गए शब्द '**उसकी**', '**उसने**', '**वह**' तथा '**उसके**' गोपू के लिए तथा '**उन्हें**' उपलों के लिए प्रयोग में आये हैं।

अत: ऐसे शब्द जो किसी संज्ञा के स्थान पर प्रयोग में आते हैं, सर्वनाम कहलाते हैं।

(1) (i) गोपू मुखिया से बोला, "**मैं** शहर गया हुआ था। **मेरे** उपले किसी ने चुरा लिये।

यहाँ बोलने वाले (गोपू) ने अपने लिए 'मैं' और 'मेरे' सर्वनामों का प्रयोग किया है।

(ii) मुखिया गोपू से बोला, "**तुम** चिंता न करो- **तुम्हें** न्याय मिलेगा।"

यहाँ सुनने वाले (गोपू) के लिए '**तुम**' और '**तुम्हें**' सर्वनामों का प्रयोग हुआ है।

(iii) मुखिया मन ही मन बोला, "गाँव के बच्चे शरारती हैं। यह शरारत **उनकी** ही है।

यहाँ बोलने वाले (मुखिया) ने अन्य (अनुपस्थित) व्यक्तियों (बच्चों) के लिए '**उनकी**' सर्वनाम का प्रयोग किया है।

अतएव बोलने वाला अपने लिए, सुनने वाले तथा अन्य (अनुपस्थित) व्यक्ति के लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग करता है, वे पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। यह सर्वनाम का पहला भेद है।

(2) (i) देखो, बच्चे खड़े हैं, **इन्होंने** प्रायश्चित कर लिया है।

(ii) **वह** मेरी कुटिया है।

ऊपर पहले वाक्य में '**इन्होंने**' सर्वनाम का प्रयोग पास खड़े बच्चों के लिए तथा दूसरे वाक्य में '**वह**' सर्वनाम का प्रयोग दूर स्थित 'कुटिया' के लिए किया गया है अर्थात् '**इन्होंने**' तथा '**वह**' से निश्चयपूर्वक बोध हो रहा है **अत: जिन सर्वनामों से निश्चित वस्तु या व्यक्ति का बोध हो, उन्हें निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। यह सर्वनाम का दूसरा भेद है।**

अन्य उदाहरण : **यह, ये, वे, इसको आदि।**

(3) (i) **किसी** ने मेरे उपले उठा लिये।

(ii) **कुछ** न **कुछ** तो करना ही पड़ेगा।

उपरोक्त वाक्यों में '**किसी**' तथा '**कुछ**' किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु का बोध नहीं कराते अत:

अनिश्चयवाचक सर्वनाम हैं। **अतः जिन सर्वनामों से निश्चित वस्तु या व्यक्ति का बोध न हो, उन्हें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। यह सर्वनाम का तीसरा भेद है।**

अन्य उदाहरण : **कोई, किस, किन्हीं आदि**

(4) **जो** भी उपले तैयार किए बिना होली खेलता नज़र आएगा, **उसके** अभिभावक को प्रति बच्चे पर सौ-सौ रुपये जुर्माना देना पड़ेगा।

उपरोक्त वाक्य में **'जो'** तथा **'उसके'** रेखांकित शब्द दो वाक्यों का परस्पर सम्बन्ध जोड़ते हैं, अतः ये सम्बन्ध वाचक सर्वनाम हैं। **अतएव जिन सर्वनामों से एक बात का दूसरी बात से सम्बन्ध प्रकट हो उसे सम्बन्धवाचक सर्वनाम कहते हैं। यह सर्वनाम का चौथा भेद है।**

अन्य उदाहरण : **जो-सो, जिसने-उसने, जिसकी-उसकी आदि।**

(5) (i) वह **अपने** पाले में वापिस आ गया।

(ii) वे **स्वयं** खिलाड़ियों को रणनीति समझाने लगे।

उपर्युक्त वाक्यों में 'अपने' तथा 'स्वयं' शब्द क्रमशः कर्त्ता (कार्य करने वाला) **'वह'** और 'वे' के साथ निजत्व (अपनेपन) का बोध करा रहे हैं, अतः 'निजवाचक' सर्वनाम हैं।

अतएव जो सर्वनाम वाक्य में कर्त्ता के साथ निजत्व (अपनेपन) का बोध करायें उन्हें 'निजवाचक सर्वनाम' कहते हैं। यह सर्वनाम का पाँचवाँ भेद है।

अन्य उदाहरण : **स्वयं, खुद, अपने आप, आप**

(6) इस मैच में **कौन**-सी टीम जीतेगी?

उपर्युक्त वाक्य में **'कौन'** शब्द का प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए हुआ है, अतः ये प्रश्नवाचक सर्वनाम हैं।

अतएव जो सर्वनाम प्रश्न पूछने के लिए प्रयोग में आते हैं, उन्हें प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं। यह सर्वनाम का छठा भेद है।

अन्य उदाहरण : **क्या, किसने, किसे।**

विशेषण

(i) राजस्थान में **एक** ज़िला है डूंगरपुर।

(ii) कालीबाई अगर **साधारण** ज़िंदगी जीतीं तो उनका नाम शायद कोई नहीं जानता।

(iii) यह **प्रेरक** कहानी है।

(iv) वह **निडर** थी।

उपर्युक्त वाक्यों में **'एक'** शब्द ज़िले (संज्ञा) की, **'साधारण'** शब्द ज़िंदगी (संज्ञा) की, **'प्रेरक'**

शब्द कहानी (संज्ञा) की तथा '**निडर**' शब्द वह (सर्वनाम) की विशेषता बता रहे हैं इसलिए ये विशेषण शब्द हैं।

अत: जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं।

(1) (i) कालीबाई **बहादुर** बालिका थी।

(ii) **कच्ची** उम्र की लड़की ने अपना बलिदान दे दिया।

(iii) राजस्थान में रास्तापाल **छोटा** गाँव है।

उपर्युक्त वाक्यों में '**बहादुर**' '**कच्ची**' तथा '**छोटा**' शब्द क्रमश: बालिका, उम्र तथा गाँव संज्ञा शब्दों की गुण सम्बन्धी विशेषता का बोध करा रहे हैं। अत: ये गुणवाचक विशेषण हैं।

अत: जिन शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम की गुण सम्बन्धी विशेषता का बोध हो, उसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं।

(2) (i) स्कूल के **दो** अध्यापक क्रांतिकारी गतिविधियाँ चलाते थे।

(ii) **तेरह** साल की लड़की आज़ादी की लड़ाई में कूद पड़ी।

(iii) **कुछ** लोग तथा **कुछ** सिपाही वहाँ पहुँचे।

उपर्युक्त वाक्यों में '**दो**' शब्द से अध्यापक की तथा '**तेरह**' शब्द से 'साल' की निश्चित संख्या का बोध हो रहा है अत: **निश्चित संख्यावाचक विशेषण** हैं और '**कुछ**' शब्द से लोग तथा सिपाही की अनिश्चित संख्या का बोध हो रहा है अत: '**कुछ**' शब्द **अनिश्चित संख्या वाचक विशेषण** हैं।

अत: जिन शब्दों से संज्ञा/सर्वनाम की निश्चित संख्या का बोध हो वे निश्चित संख्यावाचक तथा जिनसे निश्चित संख्या का बोध न हो, उन्हें अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण कहते है।

(3) (i) एक श्रद्धालु ने गुप्त रूप से **सौ किलो** दूध व **पचास किलो** चीनी लंगर हेतु भिजवायी।

(ii) हमने मिलकर **बहुत सारी सूजी**, चाय पत्ती और **ढेर सारे घी** का प्रबन्ध कर रखा था।

उपर्युक्त पहले वाक्य में '**सौ किलो**' से दूध (संज्ञा) के तथा '**पचास किलो**' से चीनी (संज्ञा) के निश्चित नाप-तोल का पता चल रहा है। अत: ये निश्चित परिमाण (नाप-तोल) वाचक विशेषण हैं। दूसरे वाक्य में '**बहुत सारी**' से तथा '**ढेर सारे**' से निश्चित परिमाण का बोध नहीं हो रहा अत: ये अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण हैं।

अतएव जिस विशेषण से निश्चित परिमाण का बोध हो उसे निश्चित परिमाण वाचक तथा जिससे निश्चित परिमाण का बोध न हो, उसे अनिश्चित परिमाण वाचक विशेषण कहते हैं।

(4) (i) **हमारा** शहर रोशनी से जगमगा रहा था।

(ii) **ऐसा** नज़ारा देखकर मैं भाव विभोर हो उठा।

उपर्युक्त वाक्य में **'हमारा'** तथा **'ऐसा'** सर्वनाम क्रमशः शहर तथा नज़ारा संज्ञा शब्दों से पूर्व आकर इनकी विशेषता बता रहे हैं। अतः 'हमारा' तथा 'ऐसा' शब्द सार्वनामिक विशेषण हैं।

अतएव जब सर्वनाम शब्द संज्ञा शब्दों से पहले लगकर विशेषण का काम करते हैं तो उन्हें सार्वनामिक विशेषण कहते हैं।

क्रिया

(i) राजा घोड़े पर बैठकर उसी शहर को **चला**।

(ii) राजा ने नौकर अपने पास **रख लिया**।

(iii) दोनों को राज दरबार में **ले जाया गया**।

(iv) राजा **सुन रहा था**।

उपरोक्त वाक्यों में **'चला'**, **'रख लिया'**, **'ले जाया गया'** तथा **'सुन रहा था'** से किसी काम का करना या होना प्रकट होता है। ये शब्द **क्रिया हैं**।

अतः जिस शब्द से किसी काम का करना या होना पाया जाए, उसे क्रिया कहते हैं।

अन्य उदाहरण :- पढ़ना, खेलना, सोना, हँसना, लिखना, दौड़ना, पीना, सीना, उठना, बैठना, करना, पकड़ना, छोड़ना, तोड़ना, नाचना, मारना आदि।

क्रिया में परिवर्तन

संज्ञा शब्दों की तरह क्रिया शब्द भी विकारी है। क्रिया शब्दों में परिवर्तन लिंग, वचन, पुरुष, काल और वाच्य के कारण होता है।

लिंग

मोहन गा रहा था (पुल्लिंग)

राधा खेल रही थी। (स्त्रीलिंग)

यहाँ 'रहा था' क्रिया **पुल्लिंग** है और 'रही थी' क्रिया **स्त्रीलिंग** है।

इस प्रकार संज्ञा शब्दों की भाँति क्रिया शब्दों के दो लिंग होते हैं :-

(1) पुल्लिंग (2) स्त्रीलिंग

वचन

लड़का हँसता है।

लड़के पढ़ते हैं।

यहाँ 'हँसता है' **एकवचन** है और 'पढ़ते हैं' **बहुवचन** हैं।

इस प्रकार क्रिया शब्दों के दो वचन होते हैं :- (1) एक वचन (2) बहुवचन

पुरुष

मैं पढ़ता हूँ।

हम लिखते हैं।

यहाँ '**मैं**' और '**हम**' कर्त्ता के रूप में प्रयुक्त हुए है अत: **उत्तम पुरुष** हैं।

तू जाता है।

तुम खाते हो।

यहाँ '**तू**' और '**तुम**' कर्त्ता के रूप में प्रयुक्त हुए हैं अत: **मध्यम पुरुष** हैं।

वह देखता है।

कोई जा रहा है।

यहाँ '**वह**' और '**कोई**' कर्त्ता के रूप में प्रयुक्त हुए हैं अत: **अन्य पुरुष** हैं।

इस प्रकार कर्त्ता के अनुसार क्रिया के तीन पुरुष हैं :

(1) उत्तम पुरुष (मैं, हम)

(2) मध्यम पुरुष (तू, तुम)

(3) अन्य पुरुष (वह, वे, संज्ञा शब्द)

काल

(i) घोड़ा हिनहिनाया।

(ii) घोड़ा हिनहिना रहा है।

(iii) घोड़ा हिनहिनायेगा।

उपर्युक्त वाक्यों में ध्यान से क्रिया को पहचानिये। ध्यान दीजिये कि पहले वाक्य में क्रिया हो गयी है (हिनहिनाया) दूसरे वाक्य में क्रिया हो रही है- (हिनहिना रहा है) तथा तीसरे वाक्य में क्रिया आने वाले समय में अभी होगी (हिनहिनायेगा)। दरअसल क्रिया से यह भी पता चलता है कि काम कब हुआ अर्थात् क्रिया होने का समय। इसे ही क्रिया का काल कहते हैं।

अतएव क्रिया के जिस रूप से उसके होने के समय का ज्ञान हो उसे 'काल' कहते हैं।

(1) (i) बाबा ने घोड़े को रोका।

(ii) खड्ग सिंह उस इलाके का प्रसिद्ध डाकू था।

(iii) बाबा भारती सुलतान की पीठ पर सवार होकर घूमने जा रहे थे।

इन वाक्यों में 'रोका', 'था' तथा 'जा रहे थे' क्रियाएँ हैं। इनमें क्रिया का करना या होना बीते हुए

समय में हुआ है। **अतः बीते समय को भूतकाल कहते हैं।**

(2) (i) अपाहिज घोड़े को दौड़ाता है।

(ii) अपाहिज घोड़े को दौड़ाए जा रहा है।

(iii) अपाहिज घोड़े को दौड़ाता होगा।

इन वाक्यों में 'दौड़ाए जा रहा है', 'दौड़ाता है', तथा 'दौड़ाता होगा' क्रियाएँ हैं। इनमें क्रिया चल रहे समय अर्थात् वर्तमान काल में हो रही है **अतः चल रहे समय को वर्तमान काल कहते हैं।**

(3) (i) बाबा जी, यह घोड़ा आपके पास न रहने दूँगा।

(ii) उसकी चाल तुम्हारा मन मोह लेगी।

उपर्युक्त वाक्यों में 'रहने दूँगा' तथा 'मोह लेगी' क्रियाएँ हैं। इन क्रियाओं से भविष्य में कार्य के होने का पता चलता है अर्थात् अभी कार्य हुआ नहीं है **अतः जब क्रिया का करना या होना आने वाले समय में पाया जाता है, उसे भविष्यत काल कहते हैं।**

याद रखें :-

काम का करना या होना- यह बतलाये क्रिया हमें

भूत, वर्तमान है भविष्य-यह बतलाये काल हमें

वाच्य

1. धीरा जूते पॉलिश करता था।
2. धीरा द्वारा जूते पॉलिश किये जाते थे।
3. धीरा से रहा नहीं गया।

उपर्युक्त पहले वाक्य में क्रिया कर्त्ता (धीरा) के अनुसार है, दूसरे वाक्य में क्रिया कर्म (जूते) के अनुसार है तथा तीसरे वाक्य में कर्म नहीं है अर्थात यहाँ भावों (रहा नहीं गया) की ही प्रधानता है।

अतएव क्रिया के जिस रूप से यह जाना जाये कि क्रिया कर्त्ता के अनुसार है या कर्म के अनुसार है या भाव के अनुसार है, उस रूप को वाच्य कहते हैं।

इस तरह वाच्य तीन प्रकार के होते हैं :-

1. कर्तृवाच्य **2. कर्म वाच्य** **3. भाव वाच्य**

(i) धीरा धुन गुनगुना रहा था।

(ii) धीरा द्वारा धुन गुनगुनायी जा रही थी।

पहले वाक्य में कर्त्ता (धीरा) प्रधान है और क्रिया का लिंग, (गुनगुना रहा था) एवं वचन उसी कर्त्ता के अनुसार है।

अतएव क्रिया के जिस रूप में कर्त्ता प्रधान हो, उसे कर्तृ वाच्य कहते हैं।

दूसरे वाक्य में क्रिया (गुनगुनायी जा रही थी) का लिंग एवं वचन कर्त्ता (धीरा) के अनुसार न होकर कर्म (धुन) के अनुसार है, यहाँ क्रिया कर्म वाच्य है।

अतएव क्रिया के जिस रूप में कर्म प्रधान हो, उसे कर्म वाच्य कहते हैं।

(iii) धीरा से रहा नहीं गया।

तीसरे वाक्य में 'रहा नहीं गया' क्रिया का भाव ही मुख्य है। क्रिया अकर्मक है जो अन्य पुरुष, पुल्लिग, एकवचन में है।

अतएव क्रिया के जिस रूप में क्रिया के भाव की प्रधानता के कारण अकर्मक क्रिया का प्रयोग हो, और जो सदैव अन्य पुरुष, पुल्लिग तथा एक वचन में हो, उसे भाव वाच्य कहते हैं।

(2) अविकारी शब्द

क्रिया विशेषण

(i) कलिंग के फाटक आज बंद हैं।

(ii) महाराज! आप यहाँ बैठिए।

(iii) सैनिक ने अपनी तलवार झटपट संभाल ली।

(iv) अधिक मत बोलो।

उपर्युक्त पहले वाक्य में 'आज' शब्द क्रिया के काल, दूसरे वाक्य में 'यहाँ' शब्द क्रिया के स्थान, तीसरे वाक्य में 'झटपट' शब्द क्रिया की रीति तथा चौथे वाक्य में 'अधिक' शब्द क्रिया की मात्रा सम्बन्धी विशेषता बता रहे हैं अत: ये क्रिया विशेषण हैं।

अतएव क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्दों को क्रियाविशेषण कहते हैं।

(1) मैं युद्ध **कल** करूँगा।

इस वाक्य में 'कल' शब्द से क्रिया के काल (समय) का पता लग रहा है अत: यह कालवाचक क्रियाविशेषण है।

अतएव जो शब्द क्रिया के काल (समय) की विशेषता बताये उसे कालवाचक क्रिया विशेषण कहते हैं।

अन्य कालवाचक शब्द :- रोज़, प्रात:, परसों, अभी, सुबह, शाम, रात, कभी, अब, तब, आजकल आदि।

(2) सब आश्चर्य से **उधर** देखने लगते हैं।

इस वाक्य में 'उधर' शब्द से क्रिया के स्थान का पता चल रहा है अत: यह स्थानवाचक क्रियाविशेषण है।

123-148 Class

अतएव जो शब्द क्रिया की स्थान सम्बन्धी विशेषता बताये उसे स्थानवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं।

अन्य स्थानवाचक क्रियाविशेषण: यहाँ, वहाँ, इधर, ऊपर, नीचे, भीतर, बाहर, दूर, आगे, पीछे, चारों तरफ आदि।

(3) वह **बहुत** बोलता है।

इस वाक्य में 'बहुत' शब्द से क्रिया की मात्रा या परिमाण का पता चल रहा है। अत: यह परिमाणवाचक क्रिया विशेषण है।

अतएव जो शब्द क्रिया की परिमाण सम्बन्धी विशेषता बताये, उसे परिमाणवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं।

अन्य परिमाणवाचक शब्द: थोड़ा, ज्यादा, कम, पर्याप्त, तनिक, इतना, उतना, न्यून, लगभग, काफी आदि।

(4) संवाददाता महाराज से **धीरे-से** बोला।

इस वाक्य में 'धीरे-से' शब्द से क्रिया की रीति (ढंग) का पता चल रहा है अत: यह रीतिवाचक क्रिया विशेषण है।

अतएव जो शब्द क्रिया की रीति सम्बन्धी विशेषता बताये, उसे रीतिवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं।

अन्य रीतिवाचक क्रियाविशेषण: ऐसे, कैसे, जैसे, तैसे, वैसे, जल्दी-जल्दी, अकस्मात, अचानक, सहसा, सामान्यत:, साधारणत: आदि।

समुच्चयबोधक (योजक)

(i) गिल्लू परदे पर चढ़ा **और** नीचे उतर गया।

(ii) गिल्लू अन्य खाने की चीज़ें लेना बन्द कर देता था **या** झूले से नीचे फेंक देता था।

(iii) उनका मुझसे लगाव कम नहीं है **परन्तु** उनमें से किसी को मेरे साथ मेरी थाली में खाने की हिम्म नहीं हुई।

(iv) भूख लगने पर गिल्लू का चिक-चिक करना ऐसा लगा **मानो** मुझे अपने भूखे होने की सूचना दे हो।

(v) सोनजुही की लता के नीचे गिल्लू को समाधि दी गयी **क्योंकि** उसे वह लता सबसे प्रिय थी।

(vi) गिलहरियों के जीवन की अवधि दो वर्ष से अधिक नहीं होती **अत:** गिल्लू की जीवन यात्रा का अ आ ही गया।

(vii) गिल्लू को कौवे की चोंच से घाव हो गया था **इसलिए** वह निश्चेष्ट-सा गमले से चिपका प था।

उपर्युक्त वाक्यों में 'और', 'या', 'परन्तु', 'मानो', 'क्योंकि', 'अत:', तथा 'इसलिए' शब्द दो शब्दों या वाक्यों को जोड़ रहे हैं। इन शब्दों को योजक या समुच्चयबोधक शब्द कहते हैं।

अतएव दो शब्दों, वाक्य के अंशों और वाक्यों को जोड़ने वाले शब्दों को योजक या समुच्चयबोधक कहते हैं।

अन्य योजक शब्द :- एवं, तथा, किंतु, चाहे, पर, इस कारण, यानि, कि यद्यपि----तथापि, चाहे----फिर भी आदि।

सम्बन्धबोधक

(i) सामिषा अपने माता-पिता **के साथ** धर्मशाली गयी।

(ii) डल झील के **चारों ओर** देखो देवदार के पेड़ हैं।

(iii) घरों **के सामने** बाँस के अनगिनत वृक्ष हैं।

(iv) हम बाग़ानों, मकानों और बंगलों **के बीच** से गुजरती सड़क से न्यूगल कैफेटेरिया पहुँचे।

(v) कैफेटेरिया **के पीछे** न्यूगल खड्ड है।

(vi) हम खराब सड़क **के कारण** ट्रैकिंग स्थल त्रिपुंड नहीं जा सके।

(vii) मेरे **सामने** प्रकृति के अद्‌भुत दृश्य थे।

उपर्युक्त वाक्यों में के साथ, के चारों ओर, के सामने, के बीच, के पीछे, के कारण तथा सामने शब्द संज्ञा तथा सर्वनाम शब्दों के साथ आकर उनका सम्बन्ध वाक्य के दूसरे शब्दों के साथ बता रहे है अत: ये सम्बन्ध बोधक हैं।

अतएव जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के साथ जुड़कर उनका सम्बन्ध वाक्य के दूसरे शब्दों से बताते हैं, उन्हें सम्बन्ध बोधक कहते हैं।

यदि इन सम्बन्ध बोधक अविकारी शब्दों को वाक्य में से निकाल दिया जाये तो वाक्य का अर्थ ही नहीं रहता।

अन्य सम्बन्ध बोधक शब्द :- पहले, बाद, आगे, पीछे, बाहर, भीतर, ऊपर, नीचे, पास, अनुसार, तरह, समान, बिना, कारण, तक, भर, संग, साथ, के मारे, बगैर, रहित, सिवाय आदि।

सम्बन्ध बोधक का प्रयोग दो प्रकार से होता है :-

1. **विभक्तियों के साथ**
2. **विभक्तियों के बिना**

(1) विभक्तियों के साथ सम्बन्ध बोधक शब्द प्रमुख रूप से निम्नलिखित तरह से प्रयुक्त होते हैं:-

(i) हमने चिन्मय तपोवन **की ओर** प्रस्थान किया।

(ii) वीर सैनिकों ने देश की रक्षा **के लिए** प्राण न्योछावर कर दिये।

(iii) पालम की घाटी सुन्दरी **की तरह** प्रतीत होती है।

(2) विभक्तियों के बिना सम्बन्ध बोधक शब्द इस प्रकार प्रयुक्त होते हैं:-

(i) मैं जीवन **भर** इस यात्रा को याद रखूँगी।

(ii) ज्ञान **बिना** जीवन बेकार है।

(iii) मुझे कई दिनों **तक** घर की याद नहीं आयी।

(iv) सड़क **पर** काली सफेद लकीर लगायी गयी है।

विस्मयादिबोधक

(i) **अरे!** मैं क्या झूठ बोल रहा हूँ?

(ii) **शाबाश!** मुझे आपसे यही आशा थी।

(iii) **ना-ना!** मैं स्त्री-वध नहीं करूँगा।

(iv) **आह!** मेरी प्रजा पर अत्याचार हो रहा है।

उपर्युक्त वाक्यों में 'अरे', 'शाबाश', 'ना-ना' तथा 'आह' शब्द क्रमशः विस्मय, हर्ष, घृणा तथा शोक मनोभावों को व्यक्त कर रहे हैं। ये विस्मयादिबोधक शब्द हैं। इनका प्रयोग प्रायः वाक्य के शुरू में होता है तथा इन शब्दों के बाद जो चिह्न (!) लगता है, उसे विस्मयादि बोधक चिह्न कहते हैं।

अतएव जिन शब्दों से विस्मय, हर्ष, घृणा तथा शोक आदि मन के भाव प्रकट हों वे शब्द विस्मयादिबोधक कहलाते हैं।

कुछ मुख्य विस्मयादिबोधक शब्द इस प्रकार हैं:-

1.	**हर्ष बोधक**	= अहा! वाह-वाह! धन्य!
2.	**घृणा बोधक**	= धिक्! धत्! थू-थू !
3.	**शोकबोधक**	= उफ! बाप रे! राम-राम! सी! त्राहि-त्राहि!
4.	**विस्मयादिबोधक**	= क्या! ओहो! हैं! अरे।
5.	**स्वीकारबोधक**	= हाँ-हाँ! अच्छा ! ठीक! जी हाँ!
6.	**चेतावनी बोधक**	= सावधान! होशियार! खबरदार !
7.	**भयबोधक**	= हाय ! हाय राम ! उइ माँ! बाप रे!
8.	**आशीर्वादबोधक**	= दीर्घायु हो! जीते रहो ! खुश रहो!